04 - अब पाकिस्तान के खिलाफ भारत के साथ तालिबान

05 - 'कोल्ड्रिफ त्रासदी' के बाद दवा उद्योग पर कड़े कानून जरूरी

A Daily News Magazine
भोपाल
सोमवार, 13 अक्टूबर, 2025

06 - बड़ी घटना के बाद भी नहीं सुधरी विवादों वाली गली के हालात

07 - अनहोनी को होनी बनाने वाली शक्ति

सुबह सवेरे

भोपाल एवं इंदौर से एक साथ प्रकाशित

वर्ष 23, अंक 45, नगर संस्करण, पृष्ठ 8, मूल्य रू. 2

subahsaverenews@gmail.com
facebook.com/subahsaverenews
www.subahsavere.news
twitter.com/subahsaverenews

प्रसंगवश

तालिबान को भारत आखिर इतनी तवज्जो क्यों दे रहा है?

अंशुल सिंह

चीन ने 2021 में अफ़ग़ानिस्तान की सत्ता पर तालिबान के क़ब्ज़े के बाद से ही संपर्क बढ़ाना शुरू कर दिया था। लेकिन भारत यही काम चार साल बाद कर रहा है। तालिबान के साथ पिछले दो सालों में भारत के संपर्क बढ़े थे लेकिन पहली बार विदेश मंत्री अमीर ख़ान मुत्तक़ी नई दिल्ली में हैं। मुत्तक़ी, संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद की प्रतिबंधित आतंकवादियों की लिस्ट में शामिल हैं।

शुक्रवार को मुत्तक़ी की विदेश मंत्री एस. जयशंकर और राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार अजीत डोभाल के साथ उच्चस्तरीय बैठक हुई। जयशंकर ने इसी बैठक में काबुल में भारत के टेक्निकल मिशन को दूतावास में बदलने की घोषणा की। अगस्त 2021 में तालिबान के आने के बाद भारत ने काबुल में अपना दूतावास बंद कर दिया था।

भारत ने अब तक दुनिया के कई देशों की तरह तालिबान सरकार को औपचारिक मान्यता नहीं दी है। रूस एकमात्र देश है, जिसने तालिबान को मान्यता दी है। जयशंकर ने इस वार्ता को 'क्षेत्रीय स्थिरता और मज़बूती की दिशा में एक क़दम' बताया, वहीं मुत्तक़ी ने भारत को 'क़रीबी मित्र' कहा और भारतीय कंपनियों को अफ़ग़ानिस्तान आने का न्योता दिया।

1990 के दशक में जब तालिबान पहली बार अफ़ग़ानिस्तान की सत्ता में आया, तब भारत ने उसके शासन को मान्यता नहीं दी थी। लेकिन 2021 में तालिबान के दोबारा सत्ता में आने और अफ़ग़ानिस्तान की स्थिति पूरी तरह बदलने के बाद, भारत ने व्यावहारिक दृष्टिकोण अपनाते हुए सीमित संपर्क शुरू किया। आज भारत और तालिबान के बीच कई ऐसे क्षेत्र हैं, जहां दोनों के हित एक-दूसरे से मिलते हैं। भारत-अफ़ग़ानिस्तान अपने साझा बयान में यह साफ़ कर चुके हैं कि दोनों का ज़ोर आतंकवाद के विरोध पर है। तालिबान इस्लामिक स्टेट खुरासान (आईएसआईएस-के) को न केवल अफ़ग़ानिस्तान बल्कि पूरे इलाक़े की शांति के लिए ख़तरा बताता है। भारत भी आंतकवाद के खिलाफ़ अलग-अलग अंतरराष्ट्रीय मंचों से आवाज़ उठाता रहा है। भारत यह सुनिश्चित करना चाहता है कि अफ़ग़ानिस्तान की ज़मीन का इस्तेमाल भारत-विरोधी गतिविधियों के लिए न हो। वहीं तालिबान भी अपनी सत्ता को स्थिर करने के लिए आईएसआईएस-के जैसे संगठनों को कमज़ोर करना चाहता है।

अनुराधा चिनॉय, जेएनयू के स्कूल ऑफ़ इंटरनेशनल स्टडीज़ की पूर्व डीन और रिटायर्ड प्रोफ़ेसर हैं। वे कहती हैं, 'मुझे लगता है कि अमीर ख़ान मुत्तक़ी को बुलाकर भारतीय विदेश मंत्रालय ने अच्छा क़दम उठाया है। तालिबान से अगर बातचीत नहीं की तो इस इलाक़े (दक्षिण एशिया) में अस्थिरता बढ़ सकती है, क्योंकि ट्रंप बार-बार बगराम एयरबेस को वापस लेने की धमकी दे रहे हैं। ऑपरेशन सिंदूर के बाद अफ़ग़ानिस्तान ने भी भारत का समर्थन किया था। इसलिए बातचीत में दोनों के साझा हित शामिल हैं।'

हालांकि अफ़ग़ानिस्तान के कई लोग भारत और तालिबान की बढ़ती क़रीबी से बहुत ख़ुश नहीं हैं। अफ़ग़ानिस्तान के पत्रकार हबीब ख़ान ने एक्स पर लिखा है, 'एक अफ़ग़ान होने के नाते मैं भारत की प्रशंसा करता हूँ, क्योंकि भारत ने यहाँ कई काम किए हैं। लेकिन भारत तालिबान के साथ जिस तरह से चीज़ें सामान्य कर रहा है, उसे देखते हुए ठगा हुआ महसूस कर रहा हूँ। तालिबान एक अवैध शासन है, जिसने हमारे देश पर क़ब्ज़ा कर लिया है। इसे रोकना चाहिए।'

अफ़ग़ानिस्तान में तालिबान के शासन को चार साल से ज़्यादा का समय हो गया है लेकिन वैश्विक स्तर पर अस्थिरता के कारण उसके सामने आर्थिक चुनौतियां बरकरार हैं। भारत ने 2021 से पहले लगभग 3 अरब डॉलर की सहायता से अफ़ग़ानिस्तान में बांध, सड़कें, अस्पताल और संसद भवन जैसी परियोजनाएं ज़मीन पर उतारी थीं। तालिबान को इन परियोजनाओं को बनाए रखने और अधिक आर्थिक मदद की ज़रूरत है। भारत के पूर्व राजदूत अनिल त्रिगुणायत का मानना है कि भारत-अफ़ग़ानिस्तान के 'गहरे सांस्कृतिक संबंध' सत्ता परिवर्तन से बहुत अधिक प्रभावित नहीं होते हैं। सरकारें भले बदलती रही हों, लेकिन आम लोगों के बीच भारत-अफ़ग़ानिस्तान का जुड़ाव हमेशा मज़बूत रहा है और यही भारत की असली ताक़त है।'

भारत की मुख्य चिंता तालिबान नहीं था बल्कि पाकिस्तान समर्थित आतंकवादी समूह थे, जो भारत के ख़िलाफ़ काम कर रहे थे। तालिबान सरकार ने भारत को यह स्पष्ट भरोसा दिया है कि उनके यहां से भारत विरोधी कोई गतिविधि नहीं होने दी जाएगी।

चीन की 'बेल्ट एंड रोड इनिशिएटिव (बीआरआई)' परियोजना अफ़ग़ानिस्तान में पैर पसार रही है। भारत नहीं चाहता कि अफ़ग़ानिस्तान पूरी तरह चीन या पाकिस्तान के प्रभाव में आ जाए। तालिबान भी नहीं चाहता कि एक ही देश पर उसकी निर्भरता बढ़े, इसलिए वह भारत जैसे वैकल्पिक सहयोगी की तलाश में है।

सामरिक मामलों के विशेषज्ञ ब्रह्मा चेलानी ने एक्स पर बताया कि यह यात्रा 'पाकिस्तान के लिए एक झटका' है और यह तालिबान शासन को अप्रत्यक्ष रूप से मान्यता देने की दिशा में एक अहम कदम है। ऑब्जर्वर रिसर्च फाउंडेशन के हर्ष वी. पंत ने कहा, 'पाकिस्तान के साथ संबंधों में गिरावट तालिबान को यह मौक़ा देती है कि वे अपने विकल्प खुले रखें और यह दिखाए कि अब उनका अस्तित्व पाकिस्तान पर निर्भर नहीं है। तालिबान को पहले पाकिस्तान का 'रणनीतिक सहयोगी' माना जाता था, लेकिन हाल के वर्षों में दोनों के रिश्तों में तनाव बढ़ा है। हाल के सालों में भारत ने व्यावहारिक रुख़ अपनाकर तालिबान शासन से संवाद शुरू किया है लेकिन इन संबंधों को मज़बूत बनाना आसान नहीं है। इसके बीच कई बड़ी चुनौतियां मौजूद हैं जो राजनीतिक, सुरक्षा, आर्थिक और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भारत के लिए मुश्किलें खड़ी करती हैं।'

भारत ने अब तक तालिबान सरकार को औपचारिक मान्यता नहीं दी है। यह स्थिति कूटनीतिक संतुलन की मांग करती है। भारत संवाद भी जारी रखना चाहता है, लेकिन मान्यता देने से बचता है ताकि अंतरराष्ट्रीय समुदाय में उसकी छवि प्रभावित न हो। तालिबान शासन में मानवाधिकार, महिला शिक्षा और समावेशी शासन की स्थिति अब भी चिंताजनक है। इस पर तालिबान सरकार का कहना है कि वह महिलाओं के अधिकारों का सम्मान करती है, लेकिन अफ़ग़ान संस्कृति और इस्लामी क़ानून की उनकी अपनी व्याख्या के मुताबिक़। अगर भारत तालिबान से बहुत अधिक नज़दीकी बढ़ाता है, तो उसे अंतरराष्ट्रीय आलोचना झेलनी पड़ सकती है।

अनुराधा चिनॉय कहती हैं, 'भारत अचानक से तालिबान को मान्यता नहीं देगा लेकिन बातचीत बंद नहीं की जा सकती है। यह सच है कि तालिबान ने औरतों के अधिकारों को पूरी तरह से छीन लिया है। पश्चिमी देश तालिबान पर लगातार दबाव बना रहे हैं लेकिन भारत यह जानता है कि दबाव बनाकर कुछ हासिल नहीं किया जा सकता। पत्रकार सुहासिनी हैदर के अनुसार अब बड़ा सवाल यह है कि क्या भारत भी रूस की तरह तालिबान सरकार को मान्यता देगा?'

(बीबीसी हिन्दी में प्रकाशित लेख के संपादित अंश)

पीएम ने किसानों को बताया पैसा कमाने का 'सक्सेस' मंत्र

न्यू टेक्नोलॉजी, उन्नत बीज, मछली उत्पादन पर दिया फोकस करने का जोर

नई दिल्ली (एजेंसी)। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी रविवार को नई दिल्ली स्थित भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान में आयोजित विशेष कृषि कार्यक्रम में शामिल हुए। इस अवसर पर उन्होंने देश के विभिन्न हिस्सों से आए किसानों से व्यक्तिगत रूप से मुलाकात की और उनसे बातचीत की। कार्यक्रम में बड़ी संख्या में महिलाएं भी उपस्थित थीं, जिन्होंने कृषि से जुड़ी अपनी उपलब्धियां और अनुभव साझा किए। पीएम मोदी ने किसानों से कृषि उत्पादन, नई तकनीकों और फसल विविधता के महत्व के बारे में चर्चा की। उन्होंने किसानों को खेती के आधुनिक तरीकों को अपनाने और उत्पादन बढ़ाने के लिए प्रोत्साहित किया। प्रधानमंत्री ने किसानों को आय बढ़ाने और अपनी कृषि गतिविधियों को अधिक लाभकारी बनाने के कई सुझाव दिए। उन्होंने फसलों की गुणवत्ता सुधारने, उचित बीज और तकनीक के उपयोग से बेहतर पैदावार प्राप्त करने पर जोर दिया। इसके अलावा, उन्होंने मत्स्य उद्योग और अन्य कृषि-आधारित उद्योगों में भी किसानों को निवेश और नवाचार करने की सलाह दी, ताकि उनकी आय में सुधार हो और वे आत्मनिर्भर बन सकें। किसानों ने इस अवसर पर प्रधानमंत्री मोदी का धन्यवाद किया और केंद्र सरकार की विभिन्न योजनाओं की सराहना की, जिनसे उन्हें कृषि कार्यों में प्रत्यक्ष लाभ प्राप्त हुआ। पीएम मोदी ने किसानों को खेती में गुणवत्ता, उत्पादन और नवाचार पर ध्यान देने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने कहा कि

- **कृषि से जुड़ी अपनी उपलब्धियां और अनुभव साझा किए**

किसानों को निर्यातोन्मुखी फसलें उगानी चाहिए, जिससे वैश्विक बाजार में प्रतिस्पर्धा बढ़े और भारत के कृषि निर्यात को बढ़ावा मिले। उन्होंने प्रधानमंत्री धन-धान्य कृषि योजना और दलहन आत्मनिर्भरता मिशन का उदाहरण देते हुए कहा कि ये योजनाएं किसानों को आत्मनिर्भर बनाने और उनकी आय बढ़ाने के लिए महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं। प्रधानमंत्री ने खेतों की मिट्टी की गुणवत्ता और फसल उत्पादन के बीच संतुलन बनाए रखने के महत्व पर भी जोर दिया। उन्होंने किसानों से कहा कि सतत खेती और आधुनिक कृषि तकनीकों का पालन करने से न केवल उत्पादन बढ़ेगा।

अमेरिका के नए राजदूत ने पीएम मोदी से की मुलाकात

- ट्रम्प के साइन वाली तस्वीर भी दी, इस पर लिखा-प्रधानमंत्री मोदी आप महान हैं

नई दिल्ली (एजेंसी)। अमेरिका के नए नॉमिनेटेड राजदूत सर्जियो गोर ने शनिवार को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी से मुलाकात की। गोर ने पीएम मोदी को एक तस्वीर भी भेंट की। इस तस्वीर में मोदी और ट्रम्प प्रेस कॉन्फ्रेंस करते नजर आ रहे हैं। इस पर ट्रम्प का संदेश और हस्ताक्षर थे, जिसमें लिखा था-प्रधानमंत्री मोदी आप महान हैं। पीएम मोदी ने इस मौके पर कहा कि उन्हें विश्वास है कि गोर के कार्यकाल में भारत-अमेरिका के संबंध और मजबूत होंगे। प्रधानमंत्री मोदी ने सोशल मीडिया पर लिखा,अमेरिका के राजदूत-निर्धारित श्री सर्जियो गोर का भारत में स्वागत करके खुशी हुई। मुझे भरोसा है कि उनके कार्यकाल में भारत-अमेरिका की साझेदारी और मजबूत होगी। इससे पहले सर्जियो गोर ने आज विदेश मंत्री जयशंकर और विदेश सचिव विक्रम मिसरी से भी मुलाकात की। इन बैठकों में दोनों देशों के बीच रणनीतिक साझेदारी पर चर्चा हुई। अमेरिका के राजदूत गोर का अमेरिकी दूतावास ने भी आधिकारिक रूप से स्वागत किया और कहा कि वह भारत-अमेरिका संबंधों को और मजबूत बनाने के लिए काम करेंगे। गोर का अमेरिकी दूतावास ने भी आधिकारिक रूप से स्वागत किया।

लाड़ली बहनों के खाते में 1541 करोड़ रुपए ट्रांसफर

श्योपुर में सीएम डॉ. मोहन यादव ने रोड शो किया, कहा- चीता प्रोजेक्ट सफल

श्योपुर (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने लाड़ली बहनों के खाते में 1541 करोड़ रुपए सिंगल क्लिक के माध्यम से ट्रांसफर किए। एक करोड़ 27 लाख महिलाओं के लिए यह 29वीं किस्त है। इसके अलावा, सीएम ने 532 करोड़ 39 लाख के विकास कार्यों का लोकार्पण और शिलान्यास भी किया।

सीएम ने कहा कि चीता प्रोजेक्ट हर जगह फेल हुआ है, लेकिन श्योपुर में सफल रहा है। दिवाली के बाद लाड़ली बहनों के लिए डेढ़ हजार रुपए महीना चालू हो जाएगा। भाजपा सरकार में 32 मेडिकल कॉलेज बने हैं। सिर्फ एक साल में 8 मेडिकल कॉलेज खुले हैं। जल्द ही, नर्सिंग और पैरामेडिकल कॉलेज श्योपुर में बनाए जाएंगे। विधायक बृजराज सिंह चौहान ने सीएम का स्वागत किया।

सीएम ने लहराई गदा

इससे पहले, सीएम ने रोड शो किया। इस दौरान नगरपालिका कार्यालय पर लोगों ने उन्हें गदा भेंट की। सीएम ने गदा लहराई। मुख्यमंत्री ने प्रसिद्ध गणेश मंदिर में पूजा-अर्चना की। सीएम का हेलीकॉप्टर स्टेडियम ग्राउंड स्थित हेलीपैड पर उतरे। यहां विधानसभा अध्यक्ष नरेंद्र सिंह तोमर, प्रभारी मंत्री राकेश शुक्ला ने अगवानी की। मुख्य कार्यक्रम हजारेश्वर महादेव मेला ग्राउंड में आयोजित किया गया।

ये घोषणा भी की

- सालापुर से मातासूला तक सड़क बनेगी।
- ढोढर के कॉलेज विज्ञान और गणित की कक्षाएं प्रारंभ होंगी।
- श्योपुर में ट्रांसपोर्ट नगर बनेगा।
- सीप नदी और कनवा नदी के घाटों का सौंदर्यीकरण होगा।
- ढोढर में सांदीपनी स्कूल बनेगा।

चीन ने भारतीय सीमा के पास तैनात किए युद्धक ड्रोन

- सैटेलाइट तस्वीरों में खुलासा, सिक्किम से सिर्फ 150 किमी दूर

बीजिंग (एजेंसी)। सैटेलाइट तस्वीरों से पता चला है कि अगस्त और सितंबर के बीच कई हफ्तों तक चीन ने एक डबल यूज सैन्य-नागरिक हवाई अड्डे पर कई युद्धक ड्रोन तैनात किए हैं। रिपोर्ट के मुताबिक, ऑपरेशनल रनवे पर जीजे-11 शार्प स्वॉर्ड स्टील्थी फ्लाइंग-विंग अनक्रूड कॉम्बैट एयर व्हीकल्स तैनात किए गए थे।

सुप्रभात

हमने वन की धूप चुनी है,
छाया का आभास न दो !
रहने दो री ! हमें अकेला,
और अधिक संत्रास न दो !
हम वैरागी रागरहित हैं
सुख - दुख की अभिलाषा क्या !
अपने हित का मिल जाए बस,
आशा और निराशा क्या !
मन टूटा है जुड़ न सकेगा,
व्यर्थ इसे विश्वास न दो !
मन की तुनकमिज़ाजी है यह,
सखे ! हमारा क्रोध नहीं।
प्यास हमारी हम ही जाने
तुमको इसका बोध नहीं।
सो तुमसे है एक निवेदन,
हमको अपनी प्यास न दो !
हम धरती के उस हिस्से - से
जहाँ उगा करते काँटे।
अतः हमारी दुनिया निर्जन
तुम से निर्जन क्या बाँटे !
ओ सहचर ! शापित मरुथल को
ठंडेपन की आस न दो !
हमने वन की धूप चुनी........

– प्रशांत मिश्रा मन

मैडम...दो किलो अनाज मिलता है, हमारी आवाज दबा दी जाती है

गुजरात में राष्ट्रपति को महिला ने बताई आपबीती, उठ रहे सवाल

अहमदाबाद (एजेंसी)। गुजरात में राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू के दौरे में एक ऐसी घटना सामने आई है। जिसने कई सवाल खड़े कर दिया है। द्रौपदी मुर्मू ने 10 अक्टूबर को जूनागढ़ में आदिवासी समाज की महिलाओं से संवाद किया था।

राष्ट्रपति के इस कार्यक्रम में तमाम अधिकारियों के साथ राज्य के पर्यटन मंत्री मुलु बेरा भी मौजूद थे। राष्ट्रपति के कार्यक्रम के दौरान एक महिला ने कहा कि मैडम, हमें दो किलो अनाज मिलता है, हमारे पास नौकरी तक नहीं है, हमारी आवाज दबा दी जाती है। सिदी समुदाय की महिला की तकलीफ सुनने के लिए राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू मंच से नीचे उतरकर गईं। महिला ने जैसे ही कहा कि मैडम तो द्रौपदी मुर्मू का संवेदनशील रवैया सामने आया, लेकिन इस घटनाक्रम से वहां मौजूद अफसरों को होश उड़ गए। जूनागढ़ की घटन के बाद सवाल खड़ा हो रहा रहा है कि राष्ट्रपति के वीवीआईपी कार्यक्रम में ऐसी ऐसा सामान्य बात नहीं है। इस मतलब है कि नीचे के स्तर पर स्थिति गंभीर है।

- **राज्य सरकार और स्थानीय प्रशासन ने साधी चुप्पी, नहीं दिया बयान**

महिला ने राष्ट्रपति को अपनी बात कही तो वहीं अफसर चुप्पी साधे रहे। वे सन्न रह गए। राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू तीन दिवसीय गुजरात दौरे पर थीं। इस बीच शुक्रवार को अपने दौरे के दूसरे दिन उन्होंने जूनागढ़ के पास सासन स्थित सिंह सदन में आदिवासी समूहों के साथ संवाद कार्यक्रम आयोजित किया। यह घटना तब हुई जब कार्यक्रम संपन्न घोषित कर दिया गया। राष्ट्रपति जाने वाली थीं, अचानक एक महिला ने उन्हें रोका और गुजरात मॉडल की वास्तविकता के बारे में अनौपचारिक चर्चा की। राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू की इस अनौपचारिक बातचीत का एक वीडियो भी सोशल मीडिया पर सामने आया है। इसमें महिला साफतौर पर कह रही है कि केवल दो किलो अनाज मिलता है। लोगों के पास नौकरी नहीं है।

भोपाल का तापमान
अधिकतम 30 °c
न्यूनतम 25°c

सुबह सवेरे

भोपाल ■ सोमवार, 13 अक्टूबर 2025

जो अग्नि हमें गर्मी देती है , हमें नष्ट भी कर सकती है ; यह अग्नि का दोष नहीं है।

चाणक्य नीति

रात में लड़कियों को बाहर नहीं जाने देना चाहिए

दुर्गापुर गैंगरेप कांड पर सीएम ममता बनर्जी का बेतुका बयान

कोलकाता (एजेंसी)। पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने रविवार को एक निजी मेडिकल कॉलेज के अस्पताल परिसर के पास हुए सामूहिक बलात्कार पर अपनी

- कहा-प्राइवेट कॉलेज छात्राओं की सुरक्षा की खुद जिम्मेदारी लें

चुप्पी तोड़ते हुए कहा कि किसी लड़की को रात में बाहर जाने की अनुमति नहीं दी जानी चाहिए। दुर्गापुर में मेडिकल की छात्रा के साथ गैंगरेप की घटना पर राजनीति गरमाने पर मुख्यमंत्री ममता बनर्जी नाराज दिखीं। उन्होंने दूसरे राज्यों में रेप की घटनाओं का जिक्र किया। सीएम ने कहा है कि आप मुझे बताइए कि ओडिशा में तीन सप्ताह पहले समुद्र तट पर तीन लड़कियों के साथ बलात्कार हुआ। ओडिशा सरकार ने क्या कार्रवाई की और बंगाल में अगर महिलाओं के साथ कुछ भी होता है तो हम इसे सामान्य मामला नहीं मानते, यह एक गंभीर मामला है। ममता बनर्जी ने कहा कि वह लड़की निजी मेडिकल कॉलेज में पढ़ रही थी, इसलिए निजी मेडिकल कॉलेज की जिम्मेदारी है। सीएम ने कहा कि कि वह रात के 12.30 बजे कैसे बाहर आ गई। जहां तक मुझे पता है कि यह वन क्षेत्र में हुआ था, इसलिए 12.30 बजे मुझे नहीं पता कि क्या हुआ। इसकी जांच जारी है। पुलिस जांच कर रही है, किसी को भी बख्शा नहीं जाएगा, दोषियों को कड़ी सजा दी जाएगी। 3 लोग पहले ही गिरफ्तार हो चुके हैं। अगर ऐसा दूसरे राज्यों में भी होता है तो भी यह निंदनीय है। हमने उत्तर प्रदेश, बिहार और ओडिशा में भी ऐसे कई मामले देखे हैं, इसलिए सरकार को कड़ी कार्रवाई करनी चाहिए। पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने रविवार को अस्पताल परिसर के पास एक निजी मेडिकल कॉलेज में हुए सामूहिक बलात्कार पर अपनी चुप्पी तोड़ी और कहा कि किसी लड़की को रात में बाहर नहीं निकलने देना चाहिए।

छिंदवाड़ा सिरप कांड; परिजनों ने कमलनाथ को रोते-बिलखते बताया दर्द

देरी से आने पर पूर्व सीएम बोले- सामना करने की हिम्मत नहीं थी, भीड़ नहीं लगवाना था

छिंदवाड़ा (नप्र)। मध्य प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री कमलनाथ और पूर्व सांसद नकुलनाथ रविवार को जहरीले कफ सिरप कांड के पीड़ित परिवारों से मिलने परासिया पहुंचे। उन्होंने कहा, पूरी घटना सरकार की लापरवाही का नतीजा है। सरकार ने प्रतिबंधित दवाई खरीदी। कफ सिरप में जहरीला तेल मिला था। इस मामले में अन्य डॉक्टरों पर भी एफआईआर दर्ज होनी चाहिए।

परिजन को रोते हुए देखकर कमलनाथ भी भावुक हो गए। देरी से आने पर उन्होंने कहा,मुझमें आप लोगों का सामना करने की हिम्मत नहीं थी, इसलिए पहले जीतू पटवारी और उमंग सिंघार को भेजा था। यहां भीड़ नहीं लगवाना चाहता था। मैं इस दुख को सहन नहीं कर पा रहा था। मैं हर संभव मदद के लिए तैयार हूं।

रोते-बिलखते परिजन ने अपना दर्द बताया- कमलनाथ और नकुलनाथ ने रविवार सुबह उत्सव मैरिज लॉन में जान गंवाने वाले बच्चों के परिजनों से मुलाकात की। दोनों नेताओं ने सबसे पहले मृत बच्चों की तस्वीरों पर फूल चढ़ाकर उन्हें श्रद्धांजलि दी। इस दौरान कई परिजन अपने बच्चों की मौत का दर्द बताते हुए रो पड़े। मृतक अदनान के परिजनों ने बताया कि इलाज के दौरान बच्चों को काफी तकलीफ झेलनी पड़ी थी, यह सुनते ही वहां मौजूद लोगों की आंखों से आंसू बहने लगे।

छिंदवाड़ा सांसद को दी चुनौती- मुआवजे के सवाल पर कमलनाथ ने कहा, हमने सरकार से प्रत्येक पीड़ित परिवार को 50 लाख रुपए का मुआवजा देने की मांग की थी। छिंदवाड़ा सांसद बंटी साहू मेरे आने पर सवाल उठा रहे हैं। अगर उन्हें सच में पीड़ितों का दर्द समझ में आता है, तो वे खुद प्रदेश सरकार से बात करके 50 लाख रुपए दिलवाएं। नकुलनाथ ने कहा कि न्याय की लड़ाई में पीछे नहीं हटेंगे। उन्होंने स्थानीय विधायक सोहन वाल्मीकि से कहा कि वे लगातार पीड़ित परिवारों के संपर्क में रहें और किसी भी तरह की जरूरत होने पर तुरंत मदद पहुंचाएं।

अफगानिस्तान को जंग का मैदान नहीं बनने देंगे

- भारत से संबंध को लेकर बोला तालिबान,पाकिस्तान ने जताई थी आपत्ति

काबुल (एजेंसी)। पाकिस्तान पर शनिवार रात हमला करने के बाद तालिबान के प्रवक्ता जबीहुल्लाह मुजाहिद ने राजधानी काबुल में एक कॉन्फ्रेंस को संबोधित दिया है। इस दौरान तालिबान प्रवक्ता ने भारत के साथ संबंधों

को लेकर पाकिस्तान के आरोपों पर जवाब दिया है। मुजाहिद ने कहा कि भारत के साथ हमारे संबंध दूसरों के साथ टकराव के लिए नहीं, बल्कि अपनी जरूरतों पर आधारित हैं। मुजाहिद की टिप्पणी पाकिस्तान के उन आरोपों के जवाब में आई है, जिसमें उन्होंने भारत पर अफगानिस्तान के जरिए अस्थिरता फैलाने का आरोप लगाया था। मुजाहिद ने कहा कि हम नहीं चाहते कि अफगानिस्तान दूसरों की प्रतिद्वंद्विता का मैदान बने। इस दौरान उन्होंने पाकिस्तान पर आतंकवादियों को पालने का आरोप लगाया और कहा कि इस्लामाबाद खैबर पख्तूनख्वा में इस्लामिक स्टेट को संरक्षण दे रहा है।

पड़ोसी देशों की तुलना में भारत की स्थिति अलग है

सीजेआई बोले-कोई मुकाबला नहीं,अखंड रहेगा भारत

मुंबई (एजेंसी)। सुप्रीम कोर्ट को जूता कांड के बाद अपने गृह राज्य महाराष्ट्र के दौरे पर पहुंची सीजेआई बी आर गवई ने बड़ा बयान दिया है। गवई ने रत्नागिरी में कहा कि पड़ोसी देशों की तुलना में भारत की स्थिति अलग है।

- नेपाल हो, बांग्लादेश हो या श्रीलंका हमारी स्थित में अंतर

गवई बोले कि हम अपने राष्ट्र को एकजुट देखते हैं, चाहे युद्ध का समय हो या शांति का, यहां तक कि आंतरिक आपातकाल के दौरान भी, हमारा देश अखंड रहा है। और जब हम अपनी तुलना अपने पड़ोसी देशों, चाहे वह नेपाल हो, बांग्लादेश हो या श्रीलंका, से करते हैं, तो मेरे विचार से

उनकी और हमारी स्थिति में अंतर भारतीय संविधान की मजबूती के कारण है। सीजेआई ने अपने भाषण में कहा कि जैसा कि बाबासाहेब आंबेडकर ने ठीक ही कहा था, जब तक इस देश में सामाजिक और आर्थिक लोकतंत्र स्थापित नहीं हो जाता, तब तक राजनीतिक लोकतंत्र का कोई वास्तविक अर्थ नहीं है। आज हम जिस तरह से न्यायिक बुनियादी ढांचे का निर्माण कर रहे हैं, वह यह सुनिश्चित करने का एक तरीका है कि न्याय वादियों के द्वार तक पहुंचे। इसीलिए हम विकेंद्रीकरण में विश्वास करते हैं और सभी जगहों पर न्यायिक बुनियादी ढांचा स्थापित कर रहे हैं। सीजेआई ने जोर देकर कहा कि बाबासाहेब आंबेडकर द्वारा हमें दिया गया संविधान ही वह आधारशिला है जिस पर आज हमारा राष्ट्र कार्य कर रहा है। बाबासाहेब के संविधान की बदौलत ही हम भारत को विकास के पथ पर अग्रसर होते देख रहे हैं।

गवई का नाम इतिहास में दर्ज होगा: फडणवीस

इस मौके पर महाराष्ट्र के सीएम देवेंद्र फडणवीस ने कहा कि इन दिनों हम देख सकते हैं कि न्यायिक व्यवस्था में काफी बदलाव आए हैं। बॉम्बे हाईकोर्ट की बात करें तो उन्होंने सुनवाई की लाइव स्ट्रीमिंग भी शुरू कर दी है और कई मामलों के वीडियो अब यूट्यूब पर उपलब्ध हैं। इससे जनता को काफी महत्वपूर्ण जानकारी उपलब्ध हुई है। ऐसी व्यवस्थाओं को और तेज और मजबूत बनाने के लिए निरंतर प्रयास किए जा रहे हैं। न्यायमूर्ति गवई का नाम न्यायिक इतिहास में न्याय व्यवस्था में मौजूद कमियों को दूर करने में उनके योगदान के लिए याद किया जाएगा। चाहे बुनियादी ढांचा हो, मानव संसाधन हो या न्यायाधीशों के रिक्त पदों को भरना हो, उनके मार्गदर्शन में जिस गति से प्रगति हुई है वह उल्लेखनीय है और इसीलिए उनका नाम इतिहास में अंकित रहेगा।

पटवारी बोले- सिंधिया की चमड़ी मगरमच्छ जैसी मोटी हो गई

गुना में कहा- करवाचौथ के दिन तो परिवार घर पर रहता है; अब इन्हें हराना पड़ेगा

गुना (नप्र)। प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष जीतू पटवारी ने रविवार को केंद्रीय मंत्री ज्योतिरादित्य सिंधिया पर हमला बोला है। उन्होंने कहा कि सिंधिया की चमड़ी मगरमच्छ से भी मोटी हो गई है और अब उन्हें हराना भी पड़ेगा। पटवारी यहां करवा चौथ के दिन हुए सड़क हादसे में मृत हुए पति-पत्नी के परिवार से मिलने गुना बायपास पर रुके थे। वे भोपाल से शिवपुरी एक कार्यक्रम में शामिल होने जा रहे थे।

पीसीसी अध्यक्ष जीतू पटवारी रविवार को शिवपुरी में एक कार्यक्रम में शामिल होने के लिए जा रहे थे। इसी दौरान वे गुना बायपास पर रुके और शक्रवार को हुए सड़क हादसे में मारे गए दीपक और प्रियंका कुशवाह के परिवार से मुलाकात कर अपनी संवेदनाएं व्यक्त कीं।

परिवार ने उन्हें बताया कि घायल दीपक को भोपाल ले जाने के लिए एम्बुलेंस वाले ने 9.5 हजार रुपए लिए थे। इस पर जीतू पटवारी ने कहा कि सोमवार को जयवर्धन सिंह आपसे मिलने आपके घर आएंगे।

'करवा चौथ पर तो परिवार घर रहता है'- जीतू पटवारी ने सिंधिया पर निशाना साधते हुए कहा, मेरा निवेदन ये है कि सिंधिया जी का सांसद बनना, वोट लेकर जाना, करवा चौथ के दिन आना। करवा चौथ पर तो परिवार घर पर रहता है। ये इनकी असंवेदनशीलता है। उन्होंने आगे कहा, अभी आप देख रहे होंगे 25 बच्चों की मौत हो गई गलत दवा पिलाने से। भाजपा के लोगों को इतने वोट दे दिए। सिंधिया को भी चेहरा देख देख कर अपन वोट दे देते हैं। इनकी मगरमच्छ से चमड़ी मोटी हो गई है। अब हराना भी पड़ेगा इन लोगों को।

बता दें कि शुक्रवार सुबह आकाशवाणी केंद्र के पास एक तेज रफ्तार स्कार्पियो कार ने बाइक पर सवार दीपक और प्रियंका कुशवाह को टक्कर मार दी थी।

तवांग के गांवों की तेजी से बदल रही है तस्वीर

चीन की सीमा के पास भारत की बड़ी सफलता

लेह (एजेंसी)। अरुणाचल प्रदेश के तवांग जिले में सीमा से सटे लगभग 150 गांवों की तस्वीर तेजी से बदल रही है। केंद्र सरकार की 'वाइब्रेंट विलेज' परियोजना की वजह से यहां पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए विकास का काम तेज कर दिया गया है। वहीं सीमा से सटे इलाकों में मजबूत पकड़ और चीन के विस्तारवादी इरादे को भी मात देने के लिए सरकार का यह कदम अहम है। तवांग के डिप्टी कमिश्नर नामग्याल आंगमो ने कहा, वाइब्रेंट विलेज प्रोग्राम के दूसरे चरण में और ज्यादा गांवों को जोड़ा गया है।

उन्होंने कहा कि इन गांवों को सड़क मार्ग के अलावा डिजिटली भी जोड़ा गया है। इससे पहले प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने तवांग में 147 करोड़ रुपये की लागत से बनकर तैयार हुए एक कन्वेंशन सेंटर का उद्घाटन किया था। तवांग में इन्फ्रास्ट्रक्चर को तेजी से विकसित किया जा रहा है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने पिछले ही साल यहां सबसे लंबी हाई एल्टीट्यूड रोड टनल का उद्घाटन किया था। आंगमो ने कहा कि तवांग में फुटबॉल का क्रेज बढ़ रहा है। मागो और चुना में दूर-दूर से लोग फुटबॉल खेलने के लिए आते हैं।

भारत का व्यापार घाटा 2.5 लाख करोड़ पहुंचने का अनुमान

- सितंबर में 13 हजार करोड़ बढ़ सकता है,सोने का बढ़ता इंपोर्ट इसका कारण

नई दिल्ली (एजेंसी)। देश का व्यापार घाटा सितंबर में करीब 13 हजार करोड़ रुपए बढ़ सकता है। यूनियन बैंक ऑफ इंडिया की नई रिपोर्ट के अनुसार, सितंबर 2025 में भारत का व्यापार घाटा 28.0 बिलियन डॉलर (2.48 लाख करोड़) तक पहुंचने का का अनुमान है। यह आंकड़ा अगस्त के 26.5 बिलियन डॉलर (2.35 लाख करोड़) से 1.5 बिलियन डॉलर ज्यादा है। इस भारी उछाल का सबसे बड़ा कारण देश में सोने का आयात बढ़ना है।

कांग्रेस लीडरशिप है नाराज, हो सकती है बड़ी कार्रवाई

'ऑपरेशन ब्लूस्टार' एक गलती थी कह फंसे चिदंबरम

नई दिल्ली (एजेंसी)। कांग्रेस नेतृत्व 'ऑपरेशन ब्लूस्टार' के बारे में पूर्व गृह मंत्री पी. चिदंबरम द्वारा दिए गए बयान से 'बेहद नाराज' है और उसका मानना है कि वरिष्ठ नेताओं को पार्टी के लिए शर्मिंदगी पैदा कर सकने वाले सार्वजनिक बयान देने से पहले सावधानी बरतनी चाहिए। सूत्रों ने रविवार को यह जानकारी दी। चिदंबरम ने शनिवार को हिमाचल प्रदेश के कसौली में एक साहित्यिक कार्यक्रम में कहा कि ऑपरेशन ब्लूस्टार गलती थी और तत्कालीन प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी ने इस गलती की कीमत अपनी जान देकर चुकाई।

पार्टी सूत्रों ने कहा कि कांग्रेस नेतृत्व का मानना है कि कांग्रेस से सब कुछ पाने वाले वरिष्ठ नेताओं को पार्टी के लिए शर्मिंदगी पैदा कर सकने वाले बयान देने में अधिक सावधानी बरतनी चाहिए। यह आदत नहीं बननी चाहिए। उन्होंने कहा कि वरिष्ठ नेताओं को सार्वजनिक बयान देते समय सावधानी बरतनी चाहिए क्योंकि उनके बार-बार के बयान पार्टी के लिए समस्याएं पैदा करते हैं, जो सही नहीं है। सूत्रों ने चिदंबरम के बारे में कहा, पार्टी का शीर्ष नेतृत्व बहुत नाराज है। पार्टी के सभी कार्यकर्ता इस बात से परेशान हैं कि ऐसा बार-बार क्यों हो रहा है। चिदंबरम ने हाल ही में कुछ ऐसे बयान दिए हैं जिनसे पार्टी को शर्मिंदगी उठानी पड़ी है। कसौली में खुशवंत सिंह साहित्य महोत्सव में चिदंबरम ने कहा, सभी आतंकवादियों को पकड़ने का कोई और तरीका हो सकता था, लेकिन ऑपरेशन ब्लू स्टार एक गलती थी।

अमिताभ बच्चन का जन्मदिन सुर और सास के साथ मनाया

भोपाल। स्वर आराधना म्यूज़िकल ग्रुप ने सुपरस्टार अमिताभ बच्चन का 83 वाँ जन्मदिन रवीन्द्र भवन के अंजनी सभागृह में 13 गायकों के 30 गीतों के साथ रंगारंग तरीक़े से मनाया। आयोजन के मुख्य सूत्रधार जानेमाने सिंगर राकेश अग्रोयी और रूपाली बागडे थे ।कार्यक्रम के मुख्य अतिथि मनोरंजन जगत के प्रमुख किरदार प्रदीप शर्मा थे, प्रमुख अतिथि राजीव श्रीवास्तव, विशेष अतिथि संगीत गुरु अश्विना राँगणेकर तथा सिंगर और लेखक पंकज पाठक, सेवानिवृत्त आईएफ़एस एके श्रीवास्तव थे। कार्यक्रम में प्रख्यात गायक और अदाकार विपिन शर्मा और मुम्बई से आए शशि कपूर के हम शकल रईस ख़ान ने फ़िल्म में दीवार के एक दृश्य को जीवंत किया जिसमें विजय और रवि के रूप में अमिताभ बच्चन और शशि कपूर ने यादगार भूमिकाएँ निभाई थीं।

गायक और डांसर आलोक श्रीवास्तव ने फ़िल्म डॉन के खाई के पान बनारस वाला पर खूब

वाहवाही लूटी ।यह गीत विपिन ने भी नृत्य के साथ ज़ोरदार अंदाज़ में पेश किया ।कुछ गीतों में— अंग्रेज़ी में कहते हैं कि, मुझे नौलखा मंगवा दे रे, मैं हूँ डॉन, सलामे इश्क, तेरे मेरे मिलन की ये रैना, दीवाने हैं दीवानों को न घर चाहिए मोहब्बत भरी एक नज़र चाहिए और यम्मा-यम्मा प्रमुख हैं, जो गायकों द्वारा गाए गए ।आयोजन में शहर के नामचीन गायकों के साथ ही वादकों की प्रस्तुतियाँ भी हुई। राकेश और रूपाली के द्वारा जब फिल्म नमक हलाल का गीत पग घूंघरू बाँध मीरा नाची थी गाया गया तो हाल तालियों की गड़गड़ाहट से गूँज उठा । प्रदीप शर्मा ने बड़ी सुनी है ज़िंदगी को बड़ी ख़ूबसूरती से पेश किया ।उनके अलावा कार्यक्रम में अजय खंगंन, सुरेश मालवीया, अजय मालवीय, हरीश जाँगीड़, राजेश श्रीवास्तव, तुशार, डॉ शेफाली जैन, डॉ छाया बाथम, आनंद, मोहन सहित और भी गायको ने अपनी प्रस्तुति दी और समूह गायन में उनका साथ दिया। संगीत देने वाली टीम के सदस्य हैं—सिंथसाइज़र पर- मुकैश कटार, गिटार पर - रितुल सारिका, बास गिटार पर विष्णु वर्मा, ढोलक पर जितेंद्र - .अक्टोपैड पर विपीन पाली और साउंड पर सतीश बेल।

श्रद्धालय वृद्धाश्रम का औचक निरीक्षण

धार। मध्यप्रदेश शासन जैविक मित्र खेती सलाहकार, जल शिक्षा स्वास्थ्य व पोषण मिशन तथा अटल बिहारी सुशासन संस्थान के पूर्व सलाहकार तथा एनजीओ पाठशाला के संस्थापक डॉ परशुराम तिवारी ने श्रद्धालय वृद्धाश्रम धार का आज औचक निरीक्षण किया। आश्रम की प्राकृतिक खेती गौशाला का अवलोकन किया। आश्रम की सेवा व्यवस्था सुप्रबन्धन पर प्रसन्नता व्यक्त की। भोज शोध संस्थान के निदेशक डॉ दीपेंद्र शर्मा ने टीम को अवलोकन करवाया व जानकारी दी। वृद्धजनों से मुलाकात साथ बैठक भोजन प्रसाद गृहण किया। टीम में अंकित राजपूत हाटपिपल्या, धर्मकुमार नरवरिया आष्टा, वीरभद्र कुमार कालापीपल व संजय कुमार इंदौर शामिल थे। डॉ तिवारी ने संचालन संस्था के नवाचारों की सराहना की। कहा कि औषधी उद्यान, फल उद्यान व प्राकृतिक खेती में वृद्धजनों का सहयोग उल्लेखनीय है। धार में जैविक खेती के अच्छे अवसर है। किसानों को आगे आकर अपनी ओर भी पहल करनी होगी। जैविक उत्पादों की मांग बढ़ती जा रही है। वृद्धजनों की ओर से डॉ तिवारी का शाल मोतीमाला से स्काउट गाइड के प्रभारी पूर्व शिक्षक चंद्रशेखर

जाधव, भगवती बुंदेला व सत्यनारायण वैष्णव द्वारा सम्मान किया गया। इस अवसर पर आश्रम प्रबन्धन की ओर से रानी पवार, विद्या गुंजाल व शंकुन्तला सिसोदिया साथ रहे। जानकारी मीडिया प्रभारी राकी मक्कड़ ने दी।

परिक्रमा

बिहार के चुनाव नतीजे और सलाह देते मोहन यादव

अरुण पटेल

लेखक सुबह सवेरे के प्रबंध संपादक हैं

नवम्बर माह में होने जा रहे बिहार विधानसभा के नतीजे चाहे वह राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन एनडीए के पक्ष में हों या इंडिया गठबंधन के, लेकिन देश की आगे की राजनीति पर वह व्यापक असर डालने वाले होंगे। नतीजों से यह पता चलेगा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और अधिक शक्तिशाली बनकर उभरते हैं या फिर लोकसभा में विपक्ष के नेता राहुल गांधी और तेजस्वी की जोड़ी को ताकत मिलती है। देखने वाली बात यही होगी कि चुनाव नतीजों के बाद नीतीश कुमार अभी जहां हैं वहीं रहते हैं या कोई नई कलाबाजी दिखायेंगे। जहां तक मध्यप्रदेश का सवाल है मुख्यमंत्री मोहन यादव इस समय यादवों के बीच भाजपा के प्रमुख प्रचारक भी बने हुए हैं और उन्हें भी बिहार चुनाव में प्रमुख भूमिका अदा करना है। डॉ. नरोत्तम मिश्रा जो जोड़ -तोड़ की राजनीति में सिद्धहस्त माने जाते हैं उन्हें भी मध्यप्रदेश के अन्य कुशल संगठनकर्ताओं के साथ बिहार में डेरा डालने को कहा गया है। तो वहीं दूसरी ओर मध्यप्रदेश में मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव भारतीय प्रशासनिक सेवा के आला अधिकारियों को जनप्रतिनिधियों का सम्मान करने की सलाह देते नजर आ रहे हैं।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने दो दिवसीय कलेक्टर-कमिश्नर कांफ्रेंस में अधिकारियों को सलाह दी कि वे विनम्र रहें और जनप्रतिनिधियों का सम्मान करें। यह कहावत है कि ''प्यादे से फर्जी भयो, टेढ़ो-टेढ़ो जाय''। शायद यही कारण है कि मुख्यमंत्री को दो दिवसीय कलेक्टर-कमिश्नर कांफ्रेंस को अधिकारियों को सलाह देने की नौबत आई। इस बीच कुछ जनप्रतिनिधियों और कुछ कलेक्टरों व अन्य अधिकारियों के बीच तनातनी की खबरें सामने आई हैं। विधायकों को भी सलाह दी गयी कि जनता का विश्वास हमारी पूंजी है इसे बनाये रखने का दायित्व हम सबका है। कलेक्टर-कमिश्नर सहित अन्य अधिकारियों की भूमिका एक सेतु की है, संवाद हर चुनौती में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है इसलिए अधिकारी जनप्रतिनिधियों और आमजन से संवाद करते रहें तथा एक विद्यार्थी की तरह विनम्र रहें। किसी भी ज्वलंत विषय पर पूरी दक्षता व तथ्यों के साथ अपनी बात अवश्य रखें लेकिन जनप्रतिनिधियों का सम्मान करें, मिशन मोड में एकजुट होकर काम करें, तभी हम निर्धारित लक्ष्यों को हासिल कर पायेंगे।

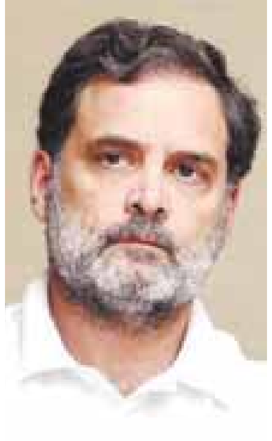

मुख्यमंत्री ने यह सलाह कांफ्रेंस का शुभारंभ करते हुए दी। पहले दिन नौ घंटे कृषि, उद्योग, स्वास्थ्य, नगरीय विकास सहित अन्य विषयों पर भी मंथन हुआ। खाद्य प्रसंस्करण इकाइयों में निश्चित तौर पर रोजगार के द्वार खुलेंगे और शहरी क्षेत्रों में लीड बैंक बनेंगे। इस प्रकार से उन्होंने यह भी रेखांकित कर दिया कि आखिर मध्यप्रदेश को और अधिक विकसित बनाने के साथ ही साथ बेरोजगार युवकों को रोजगार कैसे उपलब्ध हो इसका भी खाका बना रखा है।

मध्यप्रदेश एक प्रकार से कृषि प्रधान प्रदेश है इसलिए मुख्यमंत्री ने यह भी निर्देश दिया कि दुग्ध उत्पादन और सिंचाई का रकबा बढ़ाने की दिशा में प्रयास और नवाचार किए जायें। यदि हमें वांछित लक्ष्य को पाना है तो नवाचार करना ही होगा। जिलों में तैनात अधिकारियों को यह भी निर्देश दिया गया कि छात्रावास, स्कूल, आंगनबाड़ी, राशन दुकान, निर्माण कार्यों, अस्पतालों आदि का औचक निरीक्षण किया जाये और किसी गांव में रात्रि विश्राम भी करें। यदि अधिकारीगण गांवों में विश्राम करेंगे, ग्रामीणों से चर्चा करेंगे तो उन्हें मैदानी वास्तविकताओं और इस बात का भी एहसास होगा कि ग्रामीण आकांक्षायें सरकार से क्या हैं, यह मालूम होने के बाद योजनायें बनेगी तो इसका और भी अधिक फायदा मिलेगा। मैदानी अधिकारी जनप्रतिनिधियों एवं जनता से संवाद आवश्यक रुप से बनाये रखें। अक्सर यह देखने में आया है कि दोनों के बीच संवादहीनता की स्थिति रहती है। जनप्रतिनिधि को हर पांच साल में जनता के बीच कड़ी परीक्षा से होकर गुजरना पड़ता है और वह मैदानी जरुरतों को समझता है इसलिए यदि उसकी सलाह पर ही योजनायें बनेगी तो रोजगार के अवसर प्राप्त होंगे तथा विकास को गति भी मिलेगी। आमजन से मिलने की व्यवस्था और जन सुनवाई को और अधिक बेहतर बनाया जाये। यदि ऐसा होता है तो लोग बेहिचक होकर अपनी बात अधिकारियों के सामने रख सकेंगे। सांस्कृतिक और धार्मिक विरासतों के उद्धार और सौंदर्यीकरण पर भी ध्यान दिया जाना चाहिये। यदि सांस्कृतिक और धार्मिक सौंदर्यीकरण पर ध्यान दिया गया तो निश्चित तौर पर मध्यप्रदेश में धार्मिक पर्यटन को बढ़ावा मिलेगा जिससे एक ओर तो आय में वृद्धि होगी और दूसरे उस धार्मिक पर्यटन और सनातन की अवधारणा को भी बढ़ावा मिलेगा, जिसे सरकार अपनी नीतियों का आधार बना रही है। राम वन पथ गमन के बाद कृष्ण पथ का निर्माण सिंहस्थ से पहले पूरा होने पर जोर दिया गया ताकि सिंहस्थ में लोगों को इसका फायदा मिल सके।

और यह भी

आला अधिकारियों को सलाह देने के बाद अब मंत्री और विधायकों के कामकाज की समीक्षा मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव करने वाले हैं। जिसमें इस बात पर जोर रहेगा कि किस मंत्री ने गांव में रात्रि विश्राम किया और चैपाल लगाई। प्रभार के जिलों में प्रतिमाह दौरा कर रहे हैं या नहीं और मंत्रियों का अधिकारियों से कैसा तालमेल हैं। इसके साथ ही पार्टी संगठन के कामकाज में सहभागिता कैसी है यह भी देखा जायेगा, साथ ही केंद्र से मिले अभियानों को सफल बनाने में कितने मंत्रियों का प्रदर्शन अच्छा रहा और कितने मंत्रियों और विधायकों से आमजनता और पार्टी कार्यकर्ता संतुष्ट हैं या नहीं इस पर भी गौर किया जायेगा। देखने वाली बात ही होगी कि आखिर इन बातों पर कितना अमल होता है।

भोपाल में संघ का शताब्दी वर्ष पथ संचलन

जनकपुरी से चौक बाजार तक दिखा अनुशासन का नजारा, सांसद सहित सैकड़ों स्वयंसेवक हुए शामिल

भोपाल (नप्र)। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) के शताब्दी वर्ष के अवसर पर रविवार को राजधानी में पथ संचलन का आयोजन किया गया। पुराने शहर के जनकपुरी से चौक बाजार और सोमवारा इलाके से स्वयंसेवकों का अनुशासित दस्ता रवाना हुआ।

शहर के विभिन्न हिस्सों में निकले इन संचलनों में स्वयंसेवकों के साथ समाज के प्रबुद्ध जन और मातृभक्ति ने भी बड़ी संख्या में सहभागिता की। इसके अलावा भोपाल के सांसद आलोक शर्मा भी शामिल रहे।

पथ संचलन के दौरान राष्ट्र निष्ठा, अनुशासन और संगठन की एकता का संदेश दिया गया। विक्रम नगर की गुजरपुरा और बेलदारपुर बस्ती में संघ संस्थापक डॉ. केशव

बलिराम हेडगेवार के जीवन और आदर्शों पर चर्चा हुई। वक्ताओं ने कहा कि आरएसएस आज दुनिया का सबसे बड़ा अनुशासित संगठन है, जिसने समाज के हर वर्ग को जोड़ने और राष्ट्र निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

इस अवसर पर जिला धर्म जागरण प्रमुख राजेश सेन, सांसद आलोक शर्मा, भारतीय जनता पार्टी के प्रदेश कार्यसमिति सदस्य चेतन भार्गव, प्रकाश मालवीय सहित सैकड़ों स्वयंसेवक उपस्थित रहे। सांसद आलोक शर्मा ने कहा कि संघ ने हमेशा राष्ट्रहित को सर्वोपरि रखा है और समाज के कल्याण के लिए निरंतर कार्य कर रहा है।

कार्यक्रम में बस्तियों में रहने वाले नागरिकों को संघ के शताब्दी वर्ष के उद्देश्यों की जानकारी दी गई और समाज सेवा के लिए प्रेरित किया गया। संचलन के दौरान शहरवासियों ने जगह-जगह पुष्प वर्षा कर स्वयंसेवकों का स्वागत किया।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव से काष्ठ मूर्ति कलाकार श्री विश्वकर्मा ने सौजन्य भेंटकर कलाकृति दी

मुख्यमंत्री ने की श्री विश्वकर्मा को पुरस्कार स्वरूप में एक लाख रूपये दिये जाने की घोषणा

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव से रविवार को मुख्यमंत्री निवास स्थित संवाद भवन में रीवा जिले के बैकुंठपुर निवासी श्री बुद्धसेन विश्वकर्मा ने सौजन्य मुलाकात की। मुख्यमंत्री को श्री विश्वकर्मा ने स्व-निर्मित काष्ठ कलाकृति भेंट की। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने श्री विश्वकर्मा की कलाकृति का बारीकी से अवलोकन किया और उनकी कड़ी मेहनत और प्रतिभा की मुक्तकंठ से सराहना की। मुख्यमंत्री ने श्री विश्वकर्मा को पुरस्कार स्वरूप एक लाख रुपए देने की घोषणा भी की।

उल्लेखनीय है कि श्री बुद्धसेन विश्वकर्मा द्वारा पारम्परिक लकड़ी की नक्काशी से एक मनोरम चित्र तैयार किया गया है, जिसे 'हस्तकला नक्काशी' या 'लकड़ी की मूर्तिकला' कहा जाता है। यह काष्ठ शिल्पकला किसी सांस्कृतिक या धार्मिक दृश्य को दर्शाती है, जिसमें नृत्य की विभिन्न भाव-भंगिमाओं या पौराणिक चरित्रों का सुंदर चित्रण किया जाता है।

समान काम - समान वेतन की मांग पर भोपाल में प्रदर्शन

आंबेडकर पार्क में जुटे आउटसोर्स कर्मचारी, बोले- सरकार को आउटसोर्स कंपनियों से खास प्रेम

भोपाल (नप्र)। मध्य प्रदेश के बैंक मित्र, पंचायत चौकीदार, पंप ऑपरेटर, अंशकालीन भृत्य, राजस्व सर्वेयर, आउटसोर्स और अस्थायी कर्मचारी रविवार को भोपाल में एक मंच पर जुटे। सभी संगठनों ने मिलकर तुलसी नगर स्थित डॉ. भीमराव आंबेडकर पार्क में प्रदर्शन किया।

आल डिपार्टमेंट आउटसोर्स, अस्थायी, अंशकालीन, ग्राम पंचायत कर्मचारी संयुक्त मोर्चा मध्यप्रदेश के बैनर तले हो रहे इस आंदोलन को 'महाक्रांति रैली' नाम दिया है।

संयुक्त मोर्चा के अध्यक्ष वासुदेव शर्मा ने कहा,यह आंदोलन किसी एक वर्ग का नहीं, बल्कि पूरे प्रदेश के उन कर्मचारियों की साझा आवाज है जो वर्षों से अस्थिर रोजगार और आर्थिक अन्याय झेल रहे हैं। सरकार को यह समझना होगा कि कर्मचारियों की मेहनत और निष्ठा का सम्मान ही सुशासन की पहचान है। हम केवल वादे नहीं, अपने अधिकार की गारंटी चाहते हैं।

उन्होंने कहा, मध्यप्रदेश में पूरा सरकारी सेक्टर अब ठेकेदारों और आउटसोर्स कंपनियों के हवाले कर दिया गया है। सरकारी व्यवस्थाएं स्थायी कर्मचारियों के बजाय अस्थायी आउटसोर्स कर्मचारियों से चलाई जा रही हैं। क्लास 3 और क्लास 4 जैसे पद, जिन पर सबसे ज्यादा सरकारी नौकरियां होती थीं, अब सभी आउटसोर्स कर दिए गए हैं।

बैंक सेवा केंद्रों में भी निजी कंपनियां काम कर रही हैं। पंचायतों में जो चौकीदार तैनात हैं, उन्हें मात्र तीन हजार रुपए प्रतिमाह वेतन मिलता है। इसी तरह सीएम राइज स्कूलों, वल्लभ भवन और सतपुड़ा भवन जैसी प्रमुख जगहों पर भी सभी नियुक्तियां आउटसोर्स के जरिए की जा रही हैं।

हाईकोर्ट में लगाएंगे याचिका

वासुदेव शर्मा ने कहा कि

सरकार को ठेकेदारों और आउटसोर्स कंपनियों से खास प्रेम है। उन्होंने कहा कि सुप्रीम कोर्ट के निर्देश के अनुसार, सभी कर्मचारियों को समान कार्य के लिए समान वेतन मिलना चाहिए। मध्यप्रदेश में न्यूनतम वेतन देश में सबसे कम है, जिसे बढ़ाकर रू. 21,000 प्रति माह किया जाना चाहिए। लाखों कामगारों के साथ जो अन्याय हो रहा है, उसी के विरोध में हम इकट्ठा हुए हैं।

25 साल से नौकरी में, आज भी तन्खा सिर्फ 25 हजार

प्रदर्शन में आए रामनिवास केवट ने बताया कि वे पिछले 25 सालों से ग्राम पंचायत में चौकीदारी का काम कर रहे हैं। उन्होंने मात्र 300 महीने की तनख्वाह से शुरुआत की थी और आज 25 साल बाद भी उन्हें केवल 2000 महीना वेतन मिलता है। वह भी समय पर नहीं दिया जाता। आमतौर पर 5-6 महीने की देरी से भुगतान होता है।

रामनिवास के परिवार में पत्नी, तीन बच्चे और बुजुर्ग पिता हैं। वो कहते है, बच्चों की पढ़ाई का खर्च उठाना और पूरे परिवार का भरण-पोषण करना बेहद कठिन हो गया है। चौकीदारी के साथ-साथ मजदूरी भी करनी पड़ती है। कई बार खाने-पीने में भी संकट आ जाता है। एक बार तो ऐसा भी हुआ जब घर मेहमान आ गए थे और घर में आटा तक नहीं था।

दो साल बाद आंदोलन की अनुमति

मोर्चा के संयोजक मंडल के अनुसार, यह प्रदर्शन पिछले दो सालों से लंबित था। लगातार अनुमति के लिए आवेदन किए जा रहे थे, लेकिन अब जाकर भोपाल पुलिस ने 12 अक्टूबर के लिए अनुमति दी है।

इससे पहले इसी तरह का बड़ा प्रदर्शन 2023 में हुआ था।

आम आदमी पार्टी ने कराया एमपी के स्कूलों का सर्वे

1000 विद्यालयों में से 98 प्रतिशत में बच्चों को बैठने के लिए डेस्क तक नहीं

भोपाल (नप्र)। एमपी में आम आदमी पार्टी ने पूरी प्रदेश कार्यकारिणी भंग करने के बाद नई टीम के गठन की तैयारी शुरू कर दी है। आम आदमी पार्टी के प्रदेश प्रभारी और दिल्ली सरकार के पूर्व मंत्री जितेन्द्र सिंह तोमर ने भोपाल में प्रदेश भर के चुनिंदा सीनियर नेताओं के साथ बैठक की। इस बैठक में सिंगरौली की महापौर रानी अग्रवाल, पूर्व विधायक ममता मीणा सहित तमाम नेता मौजूद थे।

आप ने कराया स्कूलों का सर्वे- आम आदमी पार्टी के प्रदेश प्रभारी जितेन्द्र सिंह तोमर ने मीडिया को बताया - हमने अभी तीन महीने पहले एक सर्वे कराया था। उसमें एक हजार स्कूलों का सर्वे कराकर उनके वीडियो बनवाए थे। उन एक हजार स्कूलों में से 990 स्कूलों की स्थिति बहुत खराब है। हमारे पास पूरा रिकॉर्ड है। बरसात का मौसम था छतें गिर रहीं थीं। 98त्न स्कूलों में डेस्क नहीं थे। बच्चे नीचे जमीन पर बैठे हैं।

तोमर ने कहा- स्कूलों में टॉयलेट नहीं, बाउंड्री वॉल नहीं है। बच्चियां जाएं तो कहां जाएं? वास्तव में भाजपा और कांग्रेस की एक रणनीति है। बीजेपी कहती है फूट डालो शासन करो मंदिर की राजनीति करो, समाज को वर्गों में बांट दीजिए। और राजनीति

कीजिए। बस शिक्षा मत दीजिए, अगर आप शिक्षा देंगे तो शिक्षा लेने के बाद जो नौजवान खड़ा होगा वो सवाल पूछेगा। कि आपने क्या किया?

आजादी के बाद हमारी सड़कों की स्थिति इतनी खराब क्यों हैं? हमारा इन्फ्रास्ट्रक्चर, स्कूल खराब क्यों हैं तो इन सवालों का बीजेपी और कांग्रेस दोनों पार्टियों के पास जवाब नहीं हैं।

प्रदेश से बूथ लेवल तक संगठन रिस्ट्रक्चर होगा

तोमर ने कहा- आज की बैठक मप्र की टॉप लीडरशिप के साथ हुई है। प्रदेश के हर कोने, जिले से लोग आए हैं। अब हम पूरे संगठन को रिस्ट्रक्चर करेंगे। उसके लिए विचार मंथन कर रहे हैं। उसके बाद प्रदेश स्तर से लेकर जिला विधानसभा स्तर तक और बूथ लेवल तक संगठन तैयार करेंगे।

हमारा मिशन अगला मप्र का विधानसभा का चुनाव है। उसके बीच में जो भी चुनाव पार्टी के सिंबल पर होंगे वो हमारी पार्टी लड़ेगी। हम सभी 29 लोकसभा सीटों और 230 विधानसभा सीटों पर लड़ेगी। उसके लिए एक्सरसाइज शुरु कर दी है। हम लोगों के बीच में जाएंगे और जनता जो समस्याएं झेल रही है। उन्हें जानेंगे और एक विकल्प के रूप में आम आदमी पार्टी खड़ी होगी।

राहुल गांधी के छिंदवाड़ा दौरे पर कहा-हम किसी को फॉलो नहीं करते

छिंदवाड़ा में कफ सिरप के कारण हुई मौतों और राहुल गांधी के संभावित दौरे पर जितेन्द्र सिंह तोमर ने कहा- बच्चों की मौतों के मामले में हमारी पार्टी ने हर जिले में प्रोटेस्ट किया है। हम लोगों को किसी को फॉलो नहीं करना है। राहुल गांधी क्या कर रहें वो करें। अभी मैं भोपाल के बाद छिंदवाड़ा जाऊंगा। उसके बाद हमारी लीडरशिप जहां जैसी जरूरत होगी वहां आएगी।

पटेल की जयंती पर 'सरदार 150 यूनिटी मार्च

31 अक्टूबर से 25 नवंबर तक चलेगा अभियान का दूसरा चरण, हर जिले में होगी पदयात्रा

भोपाल (नप्र)। लौह पुरुष सरदार वल्लभ भाई पटेल की 150वीं जयंती के उपलक्ष्य में देशभर में 'सरदार-150 यूनिटी मार्च' अभियान शुरू किया गया है। यह पहल युवाओं को सरदार पटेल के विचारों, उनकी दृढ़ इच्छाशक्ति और राष्ट्र की एकता के प्रति उनके योगदान से जोड़ने के उद्देश्य से की गई है। मध्यप्रदेश के खेल एवं युवा कल्याण मंत्री विश्वास सारंग ने कहा कि सरदार पटेल की जयंती के अवसर पर चलाया जा रहा यह अभियान देशभर के युवाओं में राष्ट्र निर्माण की भावना को मजबूत करेगा।

अब दूसरा चरण 31 अक्टूबर से

मध्य प्रदेश खेल विभाग द्वारा आयोजित सभी पंजीकरण और प्रतियोगिताएं माय भारत पोर्टल के माध्यम से आयोजित की जा रही हैं। अभियान का दूसरा चरण 31 अक्टूबर से 25 नवंबर तक चलेगा। इस दौरान जिले-जिले में पदयात्राएं, योग एवं स्वास्थ्य शिविर, वाद-विवाद प्रतियोगिताएं और नशा मुक्त भारत के संकल्प कार्यक्रम आयोजित होंगे। पदयात्रा मार्ग पर प्रधानमंत्री मोदी की जनकल्याणकारी योजनाओं की प्रदर्शनी भी लगाई जाएगी। विश्वास सारंग ने बताया कि इस पद यात्रा में एनसीसी कैडेट्स, एनएसएस स्वयंसेवक, रिटायर्ड अधिकारी, खिलाड़ी और स्थानीय यूथ आइकॉन शामिल होंगे। पदयात्रा प्रतिदिन 8 से 10 किलोमीटर की दूरी तय करेगी। इससे पहले स्कूल-कॉलेजों में नुक्कड़ नाटक, रंगोली और सांस्कृतिक कार्यक्रम भी होंगे।खेल एवं युवा कल्याण मंत्री विश्वास सारंग ने कहा- हर जिले से शामिल होंगे युवा।

152 किमी की राष्ट्रीय पदयात्रा

सारंग ने बताया कि अभियान का सबसे महत्वपूर्ण चरण 26 नवंबर (संविधान दिवस) से शुरू होगा। सरदार पटेल के जन्म स्थान करमसद (गुजरात) से स्टेच्यू ऑफ यूनिटी, केवड़िया तक लगभग 152 किलोमीटर लंबी पदयात्रा निकलेगी।

भोपाल चैंबर के कार्यवाहक अध्यक्ष चुने गए गोयल

पहली बार सभी पदाधिकारी-सदस्यों को बुलाया ; पाली ने दिया था इस्तीफा

भोपाल (नप्र)। भोपाल चैंबर ऑफ कॉमर्स एंड इंडस्ट्री (बीसीसीआई) अध्यक्ष तेजकुलपाल सिंह पाली के इस्तीफे के बाद शनिवार को पहली बार सभी पदाधिकारी और सदस्यों की मीटिंग हुई। इसमें नियमों को लेकर चर्चा की है। पिछली 2 बैठकों में कई पदाधिकारी-सदस्य ही नहीं पहुंचे थे।

कोहेफिजा स्थित चैंबर ऑफिस में दोपहर में बैठक रखी गई थी। पाली के इस्तीफे के बाद उपाध्यक्ष आकाश गोयल को कार्यवाहक अध्यक्ष बनाया गया। सदस्य अजय देवनानी ने गोयल के नाम का प्रस्ताव रखा था। बता दें कि

चैंबर अध्यक्ष पाली के इस्तीफे के बाद से ही राजधानी की व्यापारिक राजनीति गरमाई हुई थी।

मामले में अब तक 3 पत्र आ चुके सामने- इस्तीफे के मामले में अब तक 3 पत्र सामने आ चुके हैं। एक पत्र महामंत्री आदित्य जैन मान्या और दूसरा कार्यालय सचिव प्रदीप कुमार तिवारी का है। दोनों में ही नियम अनुसार पाली का इस्तीफा मंजूर करना बताया गया। महामंत्री जैन ने इसकी सूचना वॉट्सऐप के जरिए ही पाली को देने की बात कही।

दूसरी ओर, कंपनी सेक्रेटरी अमित कुमार सेन ने अध्यक्ष पाली द्वारा इस्तीफा देने और फिर उसे मंजूर करने की पूरी प्रक्रिया को ही गलत एवं नियम के विरुद्ध बताया था। कहा था कि अध्यक्ष द्वारा दिया गया त्यागपत्र विधिक दृष्टि से दोषपूर्ण है, क्योंकि यह संस्था के लेटरहेड पर दिया गया है। किसी भी संवैधानिक पदाधिकारी का त्यागपत्र उनकी व्यक्तिगत क्षमता में साधारण कागज पर होना आवश्यक है।

त्यागपत्र की गोपनीयता होती है, जिसका पालन नहीं किया गया। बैठक बुलाने, नोटिस अवधि, नोटिस की अस्पष्टता, उपस्थिति रजिस्टर बनाम सहमति, अध्यक्ष को सुनवाई का अवसर और अवैध बैठक का प्रभाव कुछ भी नहीं है। ऐसे में पाली का इस्तीफा किसी भी हाल में मंजूर नहीं होना चाहिए।

अचानक पाली ने सौंप दिया था इस्तीफा- जानकारी के अनुसार, 3 अक्टूबर की देर रात अध्यक्ष पाली ने अचानक अपना इस्तीफा दे दिया था।

संपादकीय

नोबेल न मिलने से ट्रंप तिलमिलाये

नोबेल पुरस्कार देने वाली समिति ने शुक्रवार को शांति का नोबेल पुरस्कार इसके अधीरता से आकांक्षी अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप को न देकर उस वेनेजुएला की विपक्ष नेता मारिया कोरिनो मचाड को देने की घोषणा की है, जिस पर अमेरिकी सेना कभी भी हमला कर सकती है। राष्ट्रपति ट्रंप वेनेजुएला के वर्तमान राष्ट्रपति मादुरो से खफा हैं और उन्हें अपदस्थ करना चाहते हैं। नोबेल पाने के लिए बेकरार राष्ट्रपति ट्रंप हर स्तर पर इसके लिए लॉबिंग में जुटे थे। उन्होंने नोबेल के शांति पुरस्कार के लिए पाकिस्तान और इजराइल जैसे देशों से नामांकन कराया, जिनकी शांति को लेकर निष्ठा पहले ही संदिग्ध है। यह पुरस्कार ट्रंप को न देकर नोबेल कमेटी ने यह संदेश तो दे ही दिया कि वह किसी दबाव में आकर फैसले नही लेती। पुरस्कार देने के उसके अपने मापदंड और प्रक्रिया है। वेनेजुएला की नेता मारिया मचाडो को यह नोबेल पुरस्कार वेनेजुएला में लोकतांत्रिक अधिकारों को बढ़ावा देने और तानाशाही से लोकतंत्र की ओर शांतिपूर्ण बदलाव लाने के लिए दिया गया है। वो इसके लिए 20 साल से लगातार संघर्ष कर रही हैं। नोबेल समिति ने कहा कि आज जब दुनिया के कई हिस्सों में तानाशाही बढ़ रही है और लोकतंत्र कमजोर हो रहा है, ऐसे समय में मारिया मचाडो जैसे लोगों की हिम्मत उम्मीद जगाती है। मचाडो ने सुमाते नामक संगठन की स्थापना की, जो लोकतंत्र की बेहतरी के लिए काम करता है। वे देश में स्वतंत्र और निष्पक्ष चुनावों की मांग करती रही हैं। यही कारण है कि मीडिया में सुर्खी इस बात की ज्यादा बनी कि ट्रंप को नोबेल नहीं मिला बनिस्बत यह पुरस्कार मारिया को मिलने के। वैसे ट्रंप को नोबेल न मिलने का एक तकनीकी कारण भी है। वो ये डोनाल्ड ट्रंप अमेरिका के राष्ट्रपति के रूप में इसी साल 19 जनवरी को कमान संभाली थी। नोबेल पुरस्कार के लिए एंट्री 31 जनवरी तक ही मांगी गई थीं। उसके बाद भेजी गई एंट्रीज पर विचार नहीं किया जाता है। डोनाल्ड ट्रंप के केस में ऐसा ही हुआ है। डोनाल्ड ट्रंप जिन 8 जंगों को रुकवाने का श्रेय लेते हुए नोबेल पुरस्कार की मांग रख रहे हैं, वे 31 जनवरी के बाद की उपलब्धियां हैं। लेकिन असली मामला तो ट्रंप के अरमानों पर पानी फिरने का है। यही सवाल जब नोबेल कमेटी के चेयरमैन जॉर्गन वाटने फ्रिडनिस से पूछा गया तो उन्होंने कहा कि इसका फैसला तो काम के आधार पर किया जाता है। इसके अलावा अल्फ्रेड नोबेल की वसीयत के अनुसार निर्णय होता है। हम इस बात को प्राथमिकता देते हैं कि दावेदार के प्रयास कैसे थे और उनमें क्या निरंतरता थी। हेनरी जैकसन सोसायटी के रिसर्च फेलो और इतिहासकार थिओ जेनोउ ने कहा कि डोनाल्ड ट्रंप के जिन प्रयासों की बात की जा रही है, उनका असर ज्यादा समय तक नहीं रहने वाला है। शॉर्ट टर्म उपायों के आधार पर नोबेल समिति में पुरस्कार के लिए विचार नहीं किया जाता। नोबेल कमेटी की घोषणा से निराश जहां व्हाइट हाउस ने कहा कि कमेटी ने ट्रंप के शांति स्थापना के प्रयासों से ज्यादा राजनीति को तवज्जो दी। हालांकि ट्रंप ने खुद दिलासा देने के अंदाज में बयान दिया कि पुरस्कार घोषित होने के बाद मारिया ने उन्हें फोन किया और पुरस्कार ट्रंप को समर्पित किया। बकौल ट्रंप मारिया ने कहा कि इसके सही हकदार तो आप थे। और तो और ट्रंप को पुरस्कार न मिलने पर रूसी राष्ट्रपति व्लादिमिर पुतिन ने भी नाराजी जताई है। उनका कहना है कि ट्रंप ने दुनिया में शांति के लिए बहुत कुछ किया है। इसका मतलब यह नहीं है कि ट्रंप नोबेल पुरस्कार की दौड़ से बाहर हो चुके हैं। वो अगले साल फिर नोबेल पुरस्कार के लिए कोशिश कर सकते हैं।

नजरिया

संजय सक्सेना

लेखक लखनऊ निवासी वरिष्ठ पत्रकार हैं।

अब पाकिस्तान के खिलाफ भारत के साथ तालिबान

उधर, तालिबान भी अब पाकिस्तान के दोहरे खेल को समझ चुका है। जिस पाकिस्तान ने कभी तालिबान को आश्रय दिया, अब वही उसकी सरकार गिराने की साजिशें रच रहा है। तालिबान नेताओं के खिलाफ पाकिस्तानी प्रचार, सीमा के पास उनके ठिकानों पर बमबारी, और उनके अधिकारियों को निशाना बनाने जैसी हरकतें यह साबित करती हैं कि पाकिस्तान को शांति नहीं, सत्ता और नियंत्रण चाहिए। लेकिन अब तालिबान किसी और के इशारे पर नहीं चलना चाहता। इस मौजूदा हालात में तालिबान ने पहली बार भारत के साथ संवाद कायम करने की इच्छा जताई है, जो पाकिस्तान के लिए सबसे बड़ा झटका है। भारत इस पूरे परिदृश्य में संतुलित नीति के साथ आगे बढ़ रहा है।

अफगानिस्तान और पाकिस्तान के रिश्ते आज जिस दौर से गुजर रहे हैं, वह इतिहास का बड़ा सबक है। कभी तालिबान को आंख मूंदकर समर्थन देने वाला पाकिस्तान आज उसी तालिबान के खिलाफ मोर्चा खोल चुका है। यह वही पाकिस्तान है जो कभी तालिबान को भारत के खिलाफ भड़काने, आतंक के नये ठिकाने तैयार कराने और पूरे दक्षिण एशिया को अस्थिर करने का अपराध कर चुका है। परंतु समय का चक्र ऐसा घूमा कि अब वही तालिबान पाकिस्तान के गले की हड्डी बन गया है। यह हालात इस बात का प्रमाण हैं कि जो देश आतंक को पालते हैं, एक दिन वही आतंक उन्हें डसने लौट आता है। जब अफगानिस्तान में अमेरिकी सेनाओं की वापसी हुई और अशरफ गनी की निर्वाचित सरकार को तालिबान ने उखाड़ फेंका, उस वक्त पूरी दुनिया स्तब्ध रह गई थी। राजधानी काबुल में तालिबान की बंदूकें आज़ाद हुए लोगों की आज़ादी छीन रही थीं। उस दौर में कोई देश तालिबान सरकार को वैध नहीं मान रहा था, लेकिन पाकिस्तान सबसे आगे बढ़कर उसकी पैरवी करने लगा। इस्लामाबाद ने तालिबान को न केवल समर्थन दिया बल्कि उसे अंतरराष्ट्रीय मंचों पर एक वैकल्पिक सत्ता के रूप में स्वीकार कराने की कोशिशें भी कीं। पाकिस्तान की सेना और खुफिया एजेंसी आईएसआई ने तालिबान की मदद के लिये अपने सीमावर्ती इलाकों को खुला छोड़ दिया, ताकि आतंक के नाम पर अफगानिस्तान की पूरी दिशा पाकिस्तान के हित में झुकी रहे।

परंतु यह गठबंधन शुरू से ही झूठ और लालच पर टिका था। पाकिस्तान चाहता था कि तालिबान सिर्फ उसके इशारों पर चले, भारत के खिलाफ इस्तेमाल हो और कश्मीर के मुद्दे पर पाकिस्तान के सुर में सुर मिलाए। लेकिन तालिबान की अपनी सत्ता की जड़ें जमने लगीं तो उसकी प्राथमिकताएं बदल गईं। तालिबान को समझ में आने लगा कि पाकिस्तान उसका इस्तेमाल कर रहा है और उसे वैश्विक पहचान दिलाने के बजाय आतंक का प्रतीक बनाकर रख देना चाहता है। तालिबान ने जब भारत की ओर दोस्ती का हाथ बढ़ाना शुरू किया, तभी पाकिस्तान के धैर्य का बांध टूट गया। हाल के दिनों में अफगानिस्तान और पाकिस्तान की सीमा पर जिस तरह के हमले हुए हैं, वे यही कहानी कह रहे हैं कि अब दोनों देशों के बीच विश्वास खत्म हो चुका है। पाकिस्तान ने तालिबान शासित अफगानिस्तान पर उन ही हथकंडों का इस्तेमाल शुरू कर दिया है जो वह वर्षों से भारत के खिलाफ करता रहा है। सीमा पर हवाई हमले, ड्रोन घुसपैठ और रॉकेट हमले पाकिस्तानी सोच की उसी बीमार मानसिकता का हिस्सा हैं जो हमेशा अपने पड़ोसी देशों की स्थिरता को चुनौती देती रही है। इस बार अंतर केवल इतना है कि पाकिस्तान की यह बर्बरता अब भारत पर नहीं बल्कि अफगानिस्तान पर गिर रही है।

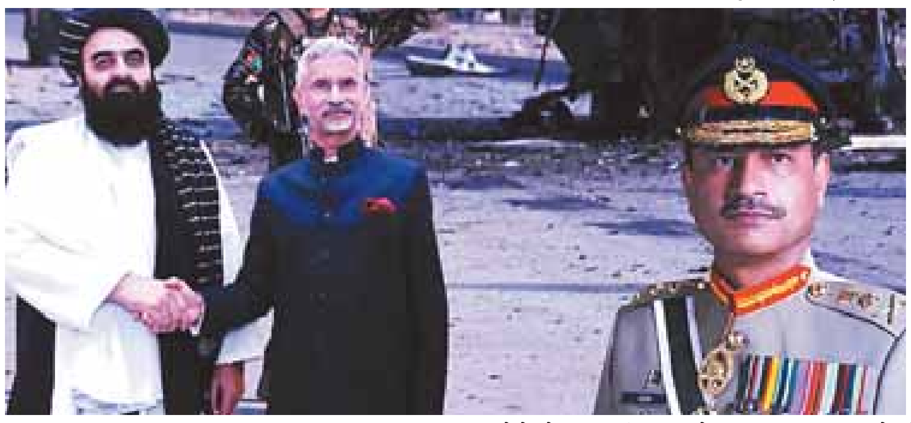

पाकिस्तान का यह कदम तब आया जब अफगानिस्तान के विदेश मंत्री आमिर खान भारत की यात्रा पर आने वाले थे। यह यात्रा तालिबान शासन के लिए ऐतिहासिक मानी जा रही थी क्योंकि भारत और अफगानिस्तान के बीच नए भरोसे की शुरुआत होने जा रही थी। भारत हमेशा से अफगानिस्तान के विकास और स्थायित्व के पक्ष में रहा है। भारत ने कभी आतंक की राजनीति नहीं की, बल्कि अफगान जनता के जीवन स्तर को सुधारने के लिए सड़कों, स्कूलों, अस्पतालों और मानव संसाधन के विकास पर काम किया। यही वजह है कि तालिबान के कई वर्गों में भारत के प्रति सहानुभूति पैदा हुई है। भारत ने अफगानिस्तान में कोई सैन्य हस्तक्षेप नहीं किया बल्कि हमेशा स्थायी शांति की वकालत की। पाकिस्तान को यही बात खटक रही है। उसे डर है कि अगर भारत और अफगानिस्तान के रिश्ते सुधरते हैं तो उसका प्रभाव क्षेत्र समाप्त हो जाएगा। पाकिस्तान अपने धर्म आधारित राजनीतिक खेल में इतना डूबा है कि उसे यह समझ नहीं आता कि पड़ोसियों से दुश्मनी रखकर वह खुद अपने देश को विनाश की ओर धकेल रहा है। पाकिस्तान की आर्थिक स्थिति पहले से ही चरमराई हुई है। वहां का समाज चरमपंथी विचारधारा में फंस चुका है और जनता लगातार महंगाई, बेरोजगारी और असुरक्षा से जूझ रही है। ऐसे में अफगानिस्तान से टकराव का नया मोर्चा खोलकर पाकिस्तान ने अपनी बर्बादी को और तेज कर दिया है।

उधर, तालिबान भी अब पाकिस्तान के दोहरे खेल को समझ चुका है। जिस पाकिस्तान ने कभी तालिबान को आश्रय दिया, अब वही उसकी सरकार गिराने की साजिशें रच रहा है। तालिबान नेताओं के खिलाफ पाकिस्तानी प्रचार, सीमा के पास उनके ठिकानों पर बमबारी, और उनके अधिकारियों को निशाना बनाने जैसी हरकतें यह साबित करती हैं कि पाकिस्तान को शांति नहीं, सत्ता और नियंत्रण चाहिए। लेकिन अब तालिबान किसी और के इशारे पर नहीं चलना चाहता। इस मौजूदा हालात में तालिबान ने पहली बार भारत के साथ संवाद कायम करने की इच्छा जताई है, जो पाकिस्तान के लिए सबसे बड़ा झटका है। भारत इस पूरे परिदृश्य में संतुलित नीति के साथ आगे बढ़ रहा है। भारत जानता है कि स्थायी शांति तभी संभव है जब अफगानिस्तान की धरती आतंक का केंद्र न बने। भारत का रुख साफ है कि वह किसी भी सरकार को तब तक मान्यता नहीं देगा जब तक वह लोकतंत्र, मानवाधिकार और महिलाओं की स्वतंत्रता के प्रति सम्मानजनक रुख न अपनाए। परंतु कूटनीतिक स्तर पर भारत यह भी समझता है कि बातचीत से ही समाधान का रास्ता निकलेगा। इसी सोच के तहत भारत ने तालिबान शासन से न्यूनतम स्तर पर संवाद बनाए रखा है और मानवीय सहायता जारी रखी है।

दूसरी ओर पाकिस्तान लगातार बेनकाब हो रहा है। अपने ही बनाए तालिबान के खिलाफ जंग छेड़कर उसने पूरी दुनिया को दिखा दिया कि आतंक को राजनीतिक साधन बनाना एक दिन आत्मघाती साबित होता है। पाकिस्तान की नीतियां अब अंतरराष्ट्रीय मंचों पर सवालों के घेरे में हैं। अमेरिका, रूस और चीन तक इस बात को समझने लगे हैं कि दक्षिण एशिया की स्थिरता तभी संभव है जब पाकिस्तान को उसके आतंकी समर्थन की कीमत चुकानी पड़े। भारत इस पूरे मामले पर सतर्क है और उसके कूटनीतिज्ञ अच्छी तरह जानते हैं कि पाकिस्तान की तरफ से अस्थिरता फैलाने के प्रयास जारी रहेंगे। लेकिन भारत की ताकत उसकी नीति, नैतिकता और जनता के विश्वास पर टिकी है, न कि किसी आतंक के बल पर। आज तालिबान और पाकिस्तान का यह झगड़ा भारत के उस रुख को सही साबित कर रहा है जो वर्षों से कहता आया है कि आतंक से कोई दोस्ती नहीं, यह केवल विनाश लाता है। अफगानिस्तान में शांति और विकास का मार्ग तभी प्रशस्त होगा जब वह पाकिस्तान के इस झूठे सहारे से पूरी तरह स्वतंत्र हो जाए। भारत की कोशिश यही रहनी चाहिए कि वह अफगान जनता के साथ विकास, शिक्षा और मानवीय सहयोग के माध्यम से स्थायी संबंध बनाए, ताकि आतंक की राजनीति धीरे-धीरे खत्म हो और दक्षिण एशिया में स्थिरता की नई सुबह उग सके।

नोबल पुरस्कार

ऋतुपर्ण दवे

लेखक स्वतंत्र पत्रकार हैं।

डोनाल्ड ट्रम्प : एक सुन्दर सपना टूट गया

बड़बोले डोनाल्ड ट्रम्प को नोबेल पुरुस्कार नहीं मिला। अपने मुंह मिया मिट्ठू बनने वाले ट्रम्प को भी नोबेल पुरुस्कार नहीं मिला। अपने लिए नोबेल पुरुस्कार मांगने वाले और इसके लिए दावे दावे करने वाले वाले ट्रम्प को भी नोबेल पुरुस्कार नहीं मिला। शांति के नोबेल पुरुस्कार के लिए चंद देशों से खुद को नामित कराने वाले अड़ीबाज ट्रम्प के मुकाबले बेहद कम चर्चित और दुनिया में अलग पहचान रखने वाली एक महिला को मिलना शायद ट्रम्प को उनकी असलियत या औकात बताने को काफी है।

दरअसल ट्रम्प की दावेदारी और पुरुस्कार न मिलने पर बजाए खुलकर बोलने के लोग, उनके घमण्ड, धौंस, धमक और दादागीरी को वजह बताते हैं जो नोबेल शांति के रूप में नहीं मिला। वैसे भी हर पुरुस्कार के लिए नियम होते हैं, लंबी फेहरिस्त होती है और कारण होते हैं। ट्रम्प कहीं से भी इसमें फिट नहीं बैठते थे। लेकिन उन्हें अमरीका का राष्ट्रपति होने का गुमान था इसीलिए वो यह जानते हुए भी कि पुरुस्कार के लिए नामित होने और औपचारिकताओं के पूरा करने की प्रक्रिया को भी शायद अपनी धौंस से धता बताने की जुगाड़ में थे, जो हो न सका। यह भी सच है कि शायद यह पहला मौका होगा जब पुरुस्कार मिलने वाले के नाम की चर्चा के बजाए न मिलने वाले का नाम और उसका रंज सुर्खियों में है।

अब ट्रंप भले ही लगातार अपना दावा जता रहे हों और कहते फिर रहे हों कि कि अमेरिका में जिन भी लोगों को नोबेल शांति पुरस्कार दिया गया, वो ज्यादातर विवादित ही रहे। ट्रम्प भला क्या कम विवादित हैं? अमेरिका के राष्ट्रपति बनाम वहां के बड़े बिजनेसमैन डोनाल्ड ट्रंप इस बार सत्ता में आने के साथ ही खुद को शांति का स्वयंभू मसीहा बताते नहीं अघाते हैं। वो भारत-पाकिस्तान, रूस-यूक्रेन, इजरायल-हमास जंग समेत आठ युद्धविराम या समझौते कराने का दावा करते हैं। जबकि दुनिया हकीकत जानती है कि इन सभी जगहों पर अभी कितनी शांति है?

इस बार का नोबेल शांति पुरस्कार नॉर्वेनियन नोबेल कमेटी ने वेनेजुएला की विपक्षी नेता मारिया कोरिना मचाडो को देना तय किया। यह वेनेजुएला के लोगों के लिए लोकतांत्रिक अधिकारों को बढ़ावा देने और तानाशाही को लोकतंत्र की ओर शांतिपूर्ण और न्यायपूर्ण बदलाव के लिए किए गए अथक संघर्ष का सम्मान है। नोबेल समिति के अध्यक्ष यॉर्गन वाटने फ्रिडनेस ने मारिया कोरिना मचाडो को एक ऐसी प्रमुख और एकजुट करने वाली शख्सियत बताया जिन्होंने पहले गहरे विभाजित विपक्ष को एकजुट किया फिर स्वतंत्र चुनावों और प्रतिनिधि सरकार की मांग में समान आधार स्थापित करने का कठिन काम किया। अपने प्रयासों की कामियाबी के लिए मारिया कोरिना मचाडो को छिपकर रहने पर भी मजबूर होना पड़ा। लेकिन जान को गंभीर खतरों के बावजूद उन्होंने अपना देश नहीं छोड़ा और दुनिया भर में शांति के पक्षधर लाखों लोगों का प्रेरित किया। मारिया का मानना है कि जब सत्तावादी लोग सत्ता हथिया लेते हैं, तो स्वतंत्रता के ऐसे साहसी रक्षकों को पहचानना जरूरी है जो उठ खड़े हों और विरोध करें। लोकतंत्र उन्हीं लोगों पर निर्भर करता है जो चुप रहने के बजाए गंभीर जोखिमों के बावजूद आगे बढ़ते रहने का दुस्साहस करते, यह सही है कि अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप अपने दूसरे कार्यकाल में तो शुरुआत से ही शांति के नोबेल पुरस्कार का सपना संजोए बैठे थे। उनका हर मंच पर दावा कि उन्होंने ही आठ युद्ध रुकवाए हैं यही बताता है। पूर्व राष्ट्रपति ओबामा की आलोचना करना और कहना कि बिना किसी कारण के उन्हें नोबेल मिला मैंने तो 8-8 युद्ध रुकवाए अहंकार नहीं तो क्या है? लेकिन वो भूल गए कि उनके दावे नोबेल शांति पुरस्कार के नामांकन की समय-सीमा के बाद के हैं। ऐसे में संभव है कि यह उनकी चालाकी हो और अगले साल के अपने दावे को पुख्ता करने की रणनीति हो! दुनिया जानती है कि ट्रम्प कहते कुछ हैं, करते कुछ हैं। कहा तो यह तक

जाने लगा है कि ट्रम्प को यह भी नहीं पता अगले पल वो क्या कर बैठें, बहरहाल यह उनका अपना मामला है वो जाने। हां, नोबेल कमेटी की निना ग्रेगर ने यह जरूर कहा कि नोबेल के फैसले पर गाजा सीजफायर का असर नहीं होगा, लेकिन अगर यह शांति स्थायी रही, तो अगले साल ट्रंप की दावेदारी मजबूत हो सकती है। वहीं, नोबेल कमेटी के अध्यक्ष जोएर्गन वाटने फ्राइडनेस ने कहा कि पुरस्कार पर फैसला काम के आधार पर किया जाता है।

अब एक पुराना और चौंकाने वाला वाकया सुर्खियों में है। जब एडॉल्फ हिटलर को शांति पुरस्कार के लिए नामांकित करने की कोशिश हुई। इससे हर कोई असहज हुआ होगा। उनके क्रूर होने के किस्से-कहानियां इतिहास की किताबों में दर्ज है। क्या उनके नाम कभी प्रस्तावित हुआ? दरअसल एक तीखी व्यंग्यात्मक आलोचना के रूप में जरूर उनका प्रस्ताव स्वीडिश संसद के एक सदस्य, एरिक ब्रांट ने 27 जनवरी 1939 को नोबेल समिति को भेजा ब्रांट एक समाजिक-लोकतांत्रिक राजनेता थे। यह उनका स्वीडिश राजनीतिज्ञों की प्रवृत्ति पर कटाक्ष और व्यंग था जो तत्कालीन ब्रिटिश प्रधानमंत्री नेविल चेम्बरलेन की शांति-नीति की तारीफ करते नहीं अघाते थे। जब चेम्बरलेन की शांति के लिए खूब स्तुति हो सकती है, तो हिटलर को भी यूरोप में युद्ध के खतरों लिए नामांकित कर दीजिए। लेकिन सार्वजनिक प्रतिक्रियाओं, आलोचनाओं और गलतफहमियों से घिरता देख ब्रांट ने अपना नामांकन औपचारिक रूप से वापस भी ले लिया।

नोबेल पुरस्कार की स्थापना बिजनेसमैन, एंटरप्रेन्योर और वैज्ञानिक अल्फ्रेड नोबेल की मृत्यु के बाद हुई जिन्होंने अपनी ज्यादातर संपत्ति कई क्षेत्रों में पुरस्कारों के लिए छोड़ी थी। सन् 1895 में अपनी वसीयत में कहा था कि ऐसे पुरस्कार उन्हें दिया जाना चाहिए जिन्होंने पिछले साल मानव जाति के लिए सबसे बड़ा उपकार किया हो। शुरुआत 1901 में हुई जो जारी है। केवल प्रथम विश्व युद्ध के दौरान 1914 से 1918 तक और द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान 1939 से 1945 में यह नहीं दिए गए। पुरुस्कार भौतिकी, रसायन विज्ञान, चिकित्सा या शरीरक्रिया विज्ञान, साहित्य, शांति और आर्थिक विज्ञान क्षेत्र में दिए जाते हैं। शांति पुरस्कार ऐसा अकेला है जिसका फैसला नॉर्वे की संसद की तरफ से चुने गए पांच सदस्यों की एक समिति की करती है। समिति ओस्लो में है पुरुस्कार वहीं देते हैं। इसमें एक डिप्लोमा, सोने का मेडल और 11 मिलियन स्वीडिश मुद्रा (10.36 करोड़ रुपये) दी जाती है। नियमानुसार पुरुस्कार देने और न देने की वजह अगले 50 सालों तक नहीं बताई जाती है। काश ट्रम्प काश इतना इंतजार कर पाते? फिलाहाल यह देखना होगा कि तिलमिलाए ट्रम्प आगे भी शांति दूत बने रहेंगे या दुनिया की शांति हरेंगे क्योंकि उनकी खीझ, खिसियाहट, टैरिफ वार और बॉडी लैंग्वेज कुछ और ही इशारा कर रही है?

थोक दवाई विक्रेताओं की भी जांच हो

दवाई में जहर

राजेंद्र जोशी

लेखक स्वतंत्र पत्रकार हैं।

मप्र के छिंदवाड़ा जिले सहित अन्य स्थानों पर जहरीला सिरप या दवाई पीने से 19 मौतों के चलते शासन-प्रशासन ने जिले व प्रदेश स्तर के अधिकारियो पर कार्यवाही करते हुए उन्हें निलंबित किया है। एक डॉक्टर व दवा निर्माता कम्पनी के संचालक के विरूद्ध प्रकरण दर्ज कर उनकी गिरफ्तारी के साथ सम्पूर्ण मामले की जांच हेतु एसआईटी गठित कर प्रदेशभर में उक्त कम्पनी के सिरप की जांच हेतु प्रत्येक जिलो में जांच टीमे गठित कर कार्यवाही की जा रही है। सिरप बनाने वाली एव दवा कम्पनियां जिन थोक दवाई विक्रेताओं को दवाई सप्लाय करती थी,उनकी ओर संबन्धित विभाग अधिकारियों की जांच होती है,तो सारा सच व गठजोड़ सामने आ जायेगा।

निसंदेह जो मौते हुई है उसकी पूर्ति किसी भी मुआवजे से नही हो सकती है,लेकिन इसके पीछे छीपे कड़वे सच को जानना भी जरूरी है कि ये सब कैसे सम्भव हो पाता है। हमने कुछ साल पहले मेडिकल स्टोर का संचालन कैसे होता है उस पर जानकारी आाधारित पड़ताल की थी,उसमे कई चौकाने वाले तथ्य सामने आये थे।

मेडिकल स्टोर संचालन के लिये वर्षो पूर्व जो नियम थे,वे यह थे कि एलोपैथिक और आयुर्वेदिक दवाईयों के अलग अलग लायसेंस जारी होते थे,दोनो के लिये अनिवार्य योग्यता यह थी,कि कोई सेवानिवृत्त कम्पाउडर या किसी डॉक्टर के सहायक के रूप में पांच साल से अधिक कार्य करने वाला,दवाई विक्रय करने का लायसेंस प्राप्त कर सकता था।उसके बाद नियमो मे परिवर्तन के चलते औषधि विज्ञान (फार्मासिस्ट) की डिग्री मेडिकल स्टोर संचालन के लिये अनिवार्य की गई,अगर दुकानदार के पास डिग्री नही है तो वह किसी डिग्रीधारी को नौकरी पर रखकर उसके माध्यम से दवाईयो की बिक्री कर सकता है, इसमे नियम यह है कि डिग्रीधारी की डिग्री का सत्यापन व अनुमति सम्बंधित विभाग देगा। डिग्रीधारी का सम्बंधित मेडिकल स्टोर संचालन के समय उपस्थित रहना अनिवार्य है,यह नियम आज भी लागू है। इन्ही परिवर्तनो के बीच एक परिवर्तन यह किया गया कि,आयुर्वेदिक दवाइयों के लायसेस के स्थान पर थोक दवाई विक्रेता के लायसेंस जारी किये जाने लगे,थोक दवाई विक्रेता से तात्पर्य यह है कि जिस स्थान के लिये लायसेंस जारी किया जाता है,वहां के खेरची मेडिकल स्टोर संचालको को दवाई सप्लाय करेगें, इस लायसेंस हेतु 3-4 वर्ष पूर्व तक किसी डिग्री की आवश्यकता नही थी,लेकिन अब इसके लिये भी डिग्री अनिवार्य करने के साथ सारी प्रक्रिया ऑनलाईन कर दी गई है,बाद उसके आपको ऑफ़ लाइन सहयोग लेना पड़ता है।

इन्ही थोक दवाई विक्रेता के द्वारा मेडिकल स्टोर से इतर निजी चिकित्सको,बिना डिग्रीधारी डॉक्टरों (छोला छाप) को दवाईया बेची जाती है उसका कोई पक्का रिकार्ड उपलब्ध नहीं रहता है,क्योंकि नियमानुसार ये किसी भी निजी मेडिकल प्रेक्टिशनर को दवाई नही बेच सकता है,और न ही डॉक्टर अपने परामर्श स्थल से दवाई बेच सकता है,वह दवाई लिखकर दे सकता है। अब इन सब विसंगतियों को पकडने की जिम्मेदारी होती है खाद्य एवं औषधी विभाग एवं जिला स्वास्थ एवं मुख्य चिकित्सा अधिकारी की,लेकिन विभाग और इसके अधिकारी न तो मेडिकल स्टोर पर न ही थोक दवाई विक्रेता के बिलों की जांच करते है न ही निजी प्रेक्टिश्नर चिकित्सकों से पूछते है कि,वे दवाई कहां से लाते है कार्यवाही के नाम पर,खाना पूर्ति हेतु अभियान चलाया जाता है।बडवानी जिले के एक मेडिकल स्टोर संचालक ने बताया कि मेडिकल स्टोर नियमानुसार चलाये जाने के बाद भी सम्बंधित अधिकारी को तीन हजार रूपये सालाना देना होता है और जो नियमो का पालन नही करते उन्हे छह हजार रूपये सालाना देना पड़ता है,उनका कहना है अधिकारियों को मालूम होता है कौन सी दवाई कहां बिक रही है, और कहां पर फार्मासिस्ट नहीं है,उसका उदाहरण मप्र फार्मेसी कॉन्सिल भोपाल का पत्र क्रमांक-एमपी पी सी/2025/668 भोपाल दिनांक 08/10/2025 जिसमे स्पष्ट लिखा है दवाइयां फार्मासिस्ट के द्वारा ही बेची जाए।

स्वामी, सुबह सवेरे मीडिया एल.एल.पी. के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक उमेश त्रिवेदी द्वारा श्री सिद्धीविनायक प्रिंटर्स, प्लॉट नं. 26-बी, देशबंधु परिसर, प्रेस कॉम्पलेक्स, जोन-1, एम.पी.नगर, भोपाल, म.प्र. से मुद्रित एवं डी-100/46, शिवाजी नगर भोपाल से प्रकाशित।

प्रधान संपादक
उमेश त्रिवेदी
कार्यकारी प्रधान संपादक
अजय बोकिल
संपादक (मध्यप्रदेश)
विनोद तिवारी
वरिष्ठ संपादक
पंकज शुक्ला
प्रबंध संपादक
अरुण पटेल
(सभी विवादों का न्याय क्षेत्र भोपाल रहेगा)
RNI No. MPHIN/ 2003/ 10923,
Ph. No. 0755-2422692, 4059111
Email- subahsaverenews@gmail.com

'सुबह सवेरे' में प्रकाशित विचार लेखकों के निजी मत हैं। इनसे समाचार पत्र का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

व्यंग्य

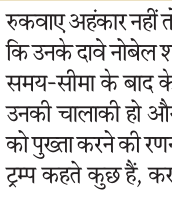

जवाहर चौधरी

लेखक व्यंग्यकार हैं।

जोखिम दूसरे वाले से

देश भर के अख़बारों में जूते को लेकर हेड लाइन छप रही थी। पहली बार जूता इतने बड़े स्तर पर बदनाम हो रहा था। जूता पैरों में हो तो उसकी सार्थकता है। जब भी वह किसी के हाथों में आया तो बदनाम हुआ। दुकानदार जूता दिखाए तो ग्राहक कहते हैं और दिखाओ जरा। वोट के ग्राहक को दिखाओ तो हेडलाइन बन जाती है। चलने के मामले में जूते की प्रतिस्पर्धा चप्पल से है। विशेष परिस्थितियों में जूते से ज्यादा चप्पल चलती है। बल्कि यों कहना चाहिए कि आशिकों का देश है तो चलती ही रहती है । लेकिन समज पुरुष प्रधान है, सो इतिहास जूते ही बनाते हैं। यही कारण है कि मारक महिलाएँ जूते पहनने लगी हैं वह भी हाई कील वाली। लड़की देख के छेदन वाले हाई कील वाली देख कर इरादा बदल देते हैं । जूता शास्त्र में कहीं लिखा है कि जूता अच्छे आदमी के पैर में हो तो दोनों की शोभा बढ़ती है। लेकिन किसी फैंकू के पैर में हो अवैध अस्त्र होता हैं। समझदार लोग सही कहते हैं संगती अच्छी नहीं हो तो अच्छा भला चरित्र खराब होने में देर नहीं लगती है। आदमी की हो न हो आजकल जूते की कीमत होती है । वो तो अच्छा हुआ कि जूता जप्त नहीं किया गया वरना सफ़ेद जूते का मुँह काला हो जाता। टीवी पर ब्रेकिंग न्यूज चलती अलग से कि फलां कंपनी का जूता चला । जो कंपनी विज्ञापन देते नहीं थकती है वही सफाई देती रहती कि हमारी कंपनी के जूते बेशक ज्यादा चलते हैं लेकिन ऐसे नहीं 'चलते' हैं। मीडिया से बड़ी मजाक कोई कर सकता है आज की डेट में! मीडिया किसी मौके को नहीं छोड़ती है, आज भी मौका बड़ा था। प्रश्न आया – 'जूताबहादूर, ट्रम्प और टेरीफ की खबरों के बीच आप अचानक सुर्खियों में आ गए, कैसा लग रहा है?'

'जूताबहादूर नहीं चरण-सेवक हैं। और हम कोई कागज के हवाई जहाज नहीं कि मन में आया और कहीं भी उड़ा दिया!! पता है, साल में एक ही बार जूता पालिस करवाते हैं, नीचे तीन टिकली अलग से लगी है और उस पर देखिये तो ये बेइज्जती ! कहीं मुँह दिखाने लायक नहीं छोड़ा हमें।' जूते ने कुछ नाराजी जताई।

'आपको पहले पता नहीं था कि उड़ने वाले हो?'

'कौन बताता! ना हमें सपना आता है और ना ही भगवान आदेश देते हैं। सपना उन्हें आया, आदेश उन्हें मिला। बस निकाल कर सन्ना दिया दन्न से । लेकिन सच बात तो ये है कि पैर में जूते ढीले हों तो आदमी चिड़चिड़ा हो जाता है।'

'तुम ढीले हो?!'

'हम क्यों ढीले होंगे! ओरिजनली जिसके पाँव के थे उसे बराबर आते थे।'

'इनके पास कैसे आ गए?'

'भगवान का ही आदेश रहा होगा । हमें तो मंदिर के बाहर छोड़ा गया था। भजन चल रहा था – पत्ता टूटा डाल से, ले गई पवन उड़ाय; अब के बिछड़े कब मिलेंगे, दूर पड़ेंगे जाय।'

'उन्हें कोई पछतावा नहीं है। कह रहे थे जरूरत समझेंगे तो फिर सन्नाएंगे।'

'पछताएगा वो जिसका जूता ढीला नहीं होगा। पूजा स्थलों पर पसंद नापसंद नहीं मौका होता है। जो मिल गया वो मुकद्दर का।'

'बहुत नाराज हो!'

'नाराज नहीं हूँगा! अकेला पड़ा हूँ, जोड़ीदार पता नहीं कहाँ है। जूते का जीवन जोड़ी में ही होता है। .... नए नए कानून बन रहे हैं। आप तो कानून बनवा दो कि सिंगल जूता संन्नाना अपराध होगा, जिसे संन्नाना हो जोड़े में संन्नाए।'

'जूताभाई इसमें जोखिम है, कौन मंजूर करेगा! कानून बनाने वाले सब जानते हैं।'

'इसमें क्या जोखिम है?'

'जोखिम दूसरे वाले से है। वह सही निशाने पर लग सकता है।'

कानून और न्याय

विनय झैलावत

(लेखक पूर्व असिस्टेंट सॉलिसिटर जनरल एवं वरिष्ठ अधिवक्ता हैं)

‘कोल्ड्रिफ त्रासदी’ के बाद दवा उद्योग पर कड़े कानून जरूरी

मिलावटी कफ सिरप ‘कोल्ड्रिफ’ के कारण मध्यप्रदेश और राजस्थान समेत देश के कई राज्यों में बच्चों की दुखद मौतें अनोखी दुर्घटना नहीं, बल्कि व्यवस्थागत विफलता के लक्षण हैं। कफ सिरप के सेवन से बच्चों की हाल की मौतों ने दवा सुरक्षा निगरानी की खामियों को उजागर कर दिया। प्रयोगशाला परीक्षण से पता चला कि दूषित बैच में 48.6 प्रतिशत डाई एथिलीन ग्लाइकॉल था, जो निर्धारित सीमा 0.1 प्रतिशत से 480 गुना ज्यादा था। यह संकट भारत के दवा क्षेत्र में दवा गुणवत्ता नियंत्रण और नियामक सुधार की आवश्यकता को उजागर करता है।

दुनिया की फार्मेसी कहे जाने वाले भारत के दवा उद्योग को एक बढ़ते संकट का सामना करना पड़ रहा है। यह जन स्वास्थ्य और राष्ट्रीय विश्वसनीयता, दोनों के लिए खतरा है। नकली और घटिया दवाओं का अनियंत्रित प्रसार चिंता का विषय है। मिलावटी कफ सिरप के कारण कई राज्यों में बच्चों की दुखद मौतें कोई अनोखी दुर्घटनाएँ नहीं, बल्कि व्यवस्थागत विफलता के लक्षण हैं। भारत की जांच और अभियोजन तंत्र नकली दवाओं के पीछे के जटिल, संगठित नेटवर्क से निपटने के लिए पूरी तरह से तैयार नहीं है। कफ सिरप के सेवन से बच्चों की हालिया मौतों ने दवा सुरक्षा निगरानी में खामियों को उजागर किया है। तमिलनाडु स्थित श्रीसन फार्मास्युटिकल्स द्वारा निर्मित दूषित कोल्ड्रिफ कफ सिरप पीने से कम से कम 22 बच्चों की मौत हो गई। इनमें से ज्यादातर की उम्र पाँच साल से कम थी। प्रयोगशाला परीक्षण से पता चला कि दूषित बैच में 48.6% डाई एथिलीन ग्लाइकॉल था, जो निर्धारित सीमा 0.1% से 480 गुना ज्यादा था। यह संकट भारत के दवा क्षेत्र में दवा गुणवत्ता नियंत्रण और नियामक सुधार की आवश्यकता को उजागर करता है।

भारत में नकली दवाओं के मामलों में दोषसिद्धि की दर मात्र 5.9% है। प्रक्रियागत समायोजनों के बाद, प्रभावी दोषसिद्धि दर शायद ही कभी 3 प्रतिशत से अधिक हो। यह आँकड़ा औषधि एवं प्रसाधन सामग्री अधिनियम, 1940 (डीएंडसी अधिनियम) के तहत जाँच प्रक्रियाओं की अपर्याप्तता को उजागर करता है, जो आधुनिक अंतर्राष्ट्रीय अपराधों के लिए अनुपयुक्त कानून है। डेटा विश्लेषण, फोरेंसिक मैपिंग और अंतर-एजेंसी खुफिया जानकारी के अभाव ने एक ऐसा माहौल बना दिया है जहाँ जालसाज लगभग बेखौफ होकर फल-फूल रहे हैं। कोल्ड्रिफ त्रासदी कोई अकेली घटना नहीं है। पिछले तीन दशकों में भारत में कफ सिरप से कई मौतें हुई हैं। सन् 1998 में, गुरुग्राम में डीईजी युक्त सिरप पीने से 33 बच्चों की मौत हो गई थी, और दिल्ली में 150 बच्चे किडनी फेल होने के कारण अस्पताल में भर्ती हुए थे। सन 2020 में, जम्मू-कश्मीर के रामनगर में डीईजी युक्त दूषित कफ सिरप पीने से 17 बच्चों की मौत हो गई थी। सन् 2022 में ‘विश्व की फार्मेसी’ के रूप में भारत की प्रतिष्ठा को तब धक्का लगा जब भारत में निर्मित कफ सिरप के कारण गाम्बिया में 70 और उज्बेकिस्तान में 18 बच्चों की मौत हुई।

भारत का औषधि विनियमन औषधि एवं प्रसाधन सामग्री अधिनियम, 1940 और नियम, 1945 के अंतर्गत दोहरे नियंत्रण ढाँचे के माध्यम से कार्य करता है। भारतीय औषधि महानियंत्रक के नेतृत्व में केंद्रीय औषधि मानक नियंत्रण संगठन, केंद्रीय लाइसेंसिंग, नई औषधि अनुमोदन और नीति निर्माण का प्रबंधन करता है। राज्य औषधि नियंत्रक विनिर्माण और बिक्री लाइसेंस, निरीक्षण और प्रवर्तन की देखरेख करते हैं। प्रमुख कानूनी प्रावधान औषधि गुणवत्ता मानकों को परिभाषित करते हैं, गलत ब्रांडिंग और मिलावट पर रोक लगाते हैं, और उल्लंघनों पर कठोर दंड लगाते हैं। नियमों की अनुसूची एम अच्छे विनिर्माण व्यवहारों की रूपरेखा प्रस्तुत करती है। इसमें परिसर, उपकरण, स्वच्छता, दस्तावेजीकरण और गुणवत्ता आश्वासन के लिए मानदंड निर्धारित किए गए हैं। अनुसूची एम का अनुपालन यह सुनिश्चित करने के लिए अनिवार्य है कि भारत में निर्मित सभी औषधियां सुरक्षा, प्रभावकारिता और गुणवत्ता के आवश्यक मानकों को पूरा करें।

कानूनी अध्ययन से पता चलता है कि पुलिस पूरी तरह से शक्तिहीन नहीं है। भारतीय न्याय संहिता (बीएनएस), 2023, धारा 318 (धोखाधड़ी) और धारा 336-338 (जालसाजी और अभिलेखों का मिथ्याकरण) जैसे सामान्य आपराधिक प्रावधानों के तहत पुलिस जाँच शुरू करने के रास्ते प्रदान करती है। नकली या मिलावटी दवाओं की बिक्री में स्वाभाविक रूप से उपभोक्ताओं को धोखा देना शामिल है, जबकि जाली लेबल, चालान और विनिर्माण लाइसेंस जालसाजी के समान हैं। इसलिए, पुलिस इन बीएनएस प्रावधानों के तहत मामले दर्ज कर सकती है। इस रणनीति ने आशाजनक परिणाम दिखाए हैं। मेरठ, आगरा, दिल्ली और देहरादून में, आईपीए और स्थानीय पुलिस के बीच समन्वित प्रयासों से एफआईआर सफलतापूर्वक दर्ज की गई और नियामक और आपराधिक दोनों कानूनों के तहत जाँच को आगे बढ़ाने की अनुमति मिली।

दिल्ली उच्च न्यायालय ने इस दोहरे दृष्टिकोण की पुष्टि की है, यह मानते हुए कि धोखाधड़ी और जालसाजी से जुड़े मामलों की पुलिस द्वारा वास्तव में जाँच की जा सकती है, भले ही संबंधित अपराध डी एंड सी अधिनियम के तहत उत्पन्न हुआ हो। विनियामक और आपराधिक कानून का यह अभिसरण यह सुनिश्चित करता है कि प्रवर्तन अनुपालन जांच तक ही सीमित न रहे, बल्कि आपराधिक उद्यमों को ध्वस्त करने तक विस्तारित हो। एक मजबूत फोरेंसिक ढाँचा सफल अभियोजन की रीढ़ है। हर नकली दवा मामले में, नकली दवाओं की जब्ती से आगे बढ़कर वैज्ञानिक साक्ष्य संग्रह की प्रक्रिया अपनानी होगी। रासायनिक और विष विज्ञान विश्लेषण, पैकेजिंग और स्याही फोरेंसिक, डिजिटल फुटप्रिंट मैपिंग और कॉल डिटेल रिकॉर्ड (सीडीआर) विश्लेषण जैसे आधुनिक उपकरण अकाट्य साक्ष्य श्रृंखलाएँ प्रदान करते हैं। ये विधियाँ जाँचकर्ताओं को संपूर्ण वितरण नेटवर्क और अंतर्राष्ट्रीय संबंधों की पहचान करने में सक्षम बनाती हैं। एक फोरेंसिक-संचालित प्रणाली अदालत में विश्वसनीयता बढ़ाती है और उच्च दोषसिद्धि दर सुनिश्चित करती है। भारत की फोरेंसिक विज्ञान प्रयोगशालाएँ और राष्ट्रीय फोरेंसिक विज्ञान विश्वविद्यालय क्षमता निर्माण, प्रयोगशाला प्रमाणन और विशेषज्ञ गवाह सहायता में केंद्रीय भूमिका निभा सकते हैं।

भारतीय न्याय संहिता की धारा 111 बड़े पैमाने पर नकली दवाओं के कारोबार को संगठित आपराधिक उद्यम घोषित करने के लिए वैधानिक आधार प्रदान करती है। इसलिए, चिकित्सा अपराध से लड़ने के लिए पुलिस, औषधि नियंत्रण विभाग, प्रवर्तन निदेशालय और फोरेंसिक इकाइयों के अधिकारियों को शामिल करते हुए विशेष जाँच दल गठित किए जा सकते हैं। भारत की खंडित दोहरी नियंत्रण प्रणाली औषधि सुरक्षा निगरानी में गंभीर कमजोरियाँ पैदा करती है। जहाँ केंद्रीय औषधि मानक नियंत्रण संगठन (सीडीएससीओ) राष्ट्रीय नीति निर्धारित करता है, वहीं अलग-अलग राज्य औषधि नियंत्रक प्रवर्तन का काम संभालते हैं। इसके परिणामस्वरूप देश भर में सुरक्षा मानकों और कार्यान्वयन में असंगति होती है। इसका अर्थ है कि औषधि गुणवत्ता मानक राज्यवार अलग-अलग होते हैं, जिससे राष्ट्रीय सुरक्षा तंत्र अपने सबसे कमजोर नियामक जितना ही मजबूत रह जाता है।

बुनियादी ढांचे की कमियां भी चिंताजनक हैं। सन् 2023 की एक संसदीय समीक्षा से पता चला है कि भारत की लगभग आधी राज्य औषधि परीक्षण प्रयोगशालाओं में प्रभावी निगरानी के लिए उचित उपकरण या योग्य विश्लेषकों का अभाव है। इसके अलावा, बजट की कमी के कारण कई छोटी प्रयोगशाला परीक्षण के लिए पुरानी विधियों और तकनीकों पर निर्भर रहने को मजबूर हैं। नियामक अनुपालन के लिए बुनियादी ढांचे, परीक्षण उपकरणों और प्रशिक्षण में महत्वपूर्ण निवेश की आवश्यकता होती है। छोटे और मध्यम उद्यमों के पास इन उन्नयनों के लिए पूंजी का अभाव होता है। सब्सिडी या कम ब्याज दर वाले ऋणों जैसे वित्तीय सहायता तंत्रों के बिना, अनुपालन लागत छोटी कंपनियों को व्यवसाय से बाहर कर सकती है और प्रदूषण के मूल कारणों का समाधान करने में विफल हो सकती है। कोल्ड्रिफ संकट के जवाब में, केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्रालय ने औषधि एवं प्रसाधन सामग्री अधिनियम, 1940 के तहत संशोधित अनुसूची एम मानदंडों, अद्यतन जीएमपी मानकों का कड़ाई से अनुपालन करने का आदेश दिया है। राजस्थान सरकार ने पांच साल से कम उम्र के बच्चों के लिए डेक्सट्रोमेथोर्फन युक्त कफ सिरप पर भी प्रतिबंध लगा दिया है।

संदूषण संकट ने भारत के दवा सुरक्षा ढांचे की कमजोरियों को उजागर कर दिया है। हालांकि सरकार द्वारा अनुसूची एम के अनुपालन पर जोर देना एक कदम आगे है, लेकिन इसके कार्यान्वयन के लिए खंडित नियामक ढांचे को संबोधित करना, परीक्षण ढांचे में निवेश करना और घरेलू उपभोक्ताओं के लिए समान सुरक्षा सुनिश्चित करना आवश्यक है। केवल सुधार, जवाबदेही और गुणवत्ता के प्रति प्रतिबद्धता के माध्यम से ही हम भविष्य की त्रासदियों को रोक सकते हैं और भारत के दवा क्षेत्र में विश्वास बहाल कर सकते हैं। उपचार के लिए बनाई गई दवा कभी भी नुकसान नहीं पहुँचानी चाहिए। इस सिद्धांत को दवा निर्माण और विनियमन के हर पहलू का मार्गदर्शन करना चाहिए।

संघ और घोष

नितिन गर्ग

घोष प्रमुख, मध्यभारत प्रांत

घोष केवल संगीत और वादन नहीं, यह साधना है

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का जब भी पथ संचलन निकलता है, तब घोष उसका सौंदर्य बढ़ाता है। संघ कार्य का यह शताब्दी वर्ष है। इन 100 वर्षों में जिस प्रकार संघ का क्रमिक विकास हुआ है, उसी प्रकार संघ के घोष का भी क्रमिक विकास हुआ है। दिसंबर, 1926 में ह्यजब संघ का पहला पथ संचलन निकला था, तब घोष में केवल एक आनक और एक शंख ही शामिल हुआ था। घोड़े पर चढ़कर पहले सरसेनापति मार्तंड राव जोग आगे चलते थे तथा पीछे बिगुल वादक एवं स्वयंसेवक संचलन करते थे। विगत 100 वर्षों में यह यात्रा घोष की बड़ी और समृद्ध इकाई तक पहुँच गई है। घोषदल की इकाई में पणव (बास ड्रम), आनक (साइड ड्रम), शंख, वंशी, झल्लरी (झांझ), ट्राइंगल (त्रिभुज), नियंत्रण और संकेत के लिए घोषदंड शामिल रहता है। आरएसएस का मत है कि घोष केवल संगीत का माध्यम नहीं, बल्कि यह वीरता, पराक्रम और राष्ट्र निर्माण की भावना का प्रतीक है। शंख, ढोल और रणभेरी जैसे वाद्ययंत्र प्राचीन काल से ही ऊर्जा, उत्साह और विजय के संदेशवाहक रहे हैं। युद्धभूमि में भी ये रणवाद्य वीरता और उमंग का संचार करते थे। संघ का घोष दल उसी गौरवशाली परंपरा को आज के समाज तक पहुंचा रहा है।

समय के साथ विदेशी ब्रास बैंड का प्रचलन बढ़ा, लेकिन संघ के घोष में जो धुनें बजाई जाती हैं, वे भारतीय रागों पर आधारित होती हैं। यहां तक कि विदेशी धुनों को भी भारतीय स्वरूप में ढालकर उन्हें हमारी सांस्कृतिक परंपरा के अनुरूप प्रस्तुत किया जाता है।

प्रारंभिक समय में अंग्रेजी पद्धति का घोष सिखाया जाता था। बाद में, पुणे के वरिष्ठ स्वयंसेवक हरी विनायक दात्ये ने अथक परिश्रम कर इसका भारतीयकरण किया तथा सारे घोष वाद्यों की लिपि को भातखंडे लिपि में लिपिबद्ध किया। उनके द्वारा किया गया यह प्रयास संगीत के क्षेत्र में किया गया अद्भुत योगदान सिद्ध हुआ। आज सम्पूर्ण देश में घोष, जिसे रण संगीत के रूप में जाना जाता है, प्रचलित है।

अपने भारतीय रागदारी से युक्त यह लिपि विभिन्न तालों जैसे कहरवा, दादरा, खेमटा पर आधारित है। आज इन तालों पर आधारित अनेक रचनाओं का निर्माण स्वयंसेवकों द्वारा किया गया है, जैसे- गणेश, भूप, केदार, शिवरंजिनी, चेतक, तिलक कामोद आदि सभी वाद्यों में कुल 90 से अधिक रचनाओं का समावेश है।

जिस प्रकार माथे पर लगी बिंदी अपना विशेष स्थान रखती है, उसी प्रकार राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ में घोष का स्थान है। संचलन में घोष का स्वर स्वयंसेवकों में जोश एवं उत्साह भर देता है।

मध्यभारत प्रान्त में लगभग 180 से अधिक घोष की इकाई है जहाँ घोष का अभ्यास होता है। अलग रुचि एवं आयु वर्ग के करीब 4000 वादक जुड़े हुए हैं। विजयादशमी पर्व पर राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ अपने शताब्दी वर्ष में मध्यभारत प्रांत में एक नए इतिहास का सृजन करने जा रहा है। पहली बार नगर-नगर, गली-गली और छोटी-छोटी इकाइयों तक में पथ संचलन का भव्य आयोजन हो रहा है, इसके लिए बड़ी संख्या में घोष दल तैयार हुए हैं। 180 से अधिक प्रशिक्षित घोष शिक्षकों द्वारा नये स्वयंसेवकों को प्रशिक्षण दिया गया है। शताब्दी वर्ष के लिए प्रत्येक नगर में 8 से 10 घोष इकाई (वाद्य दल) तैयार हो गई हैं।

मध्यभारत प्रान्त में घोष के उल्लेखनीय कार्यक्रम

नवम्बर 2021 में ग्वालियर में ‘स्वर साधक संगम’ घोष शिविर आयोजित किया गया था, जिसमें सम्पूर्ण प्रान्त के 27 जिलों से 500 से अधिक वादकों ने हिस्सा लिया। इस कार्यक्रम सरसंघचालक डॉ. मोहन भागवत भी उपस्थित रहे। इसी प्रकार, भोपाल के प्रताप जिले द्वारा अपना वार्षिकोत्सव ‘स्वर नाद संगम’ किया गया था, जिसमें कक्षा 4 से लेकर महाविद्यालयीन विद्यार्थियों द्वारा 5 भागों मे 29 रचनाओं का वादन प्रस्तुत किया गया। इनमें घोष विभाग की प्रथम लिखित रचना गणेश गोरखकल्याण, प्रसाद, जननी, हंसध्वनि तथा गीत जयोस्तुते, आर्यावर्त, ए मेरे प्यारे वतन, केशव रचना का मनमोहक आकृतियों के प्रदर्शन पर वादन किया गया।

संघ में घोष का क्या महत्व है, इस संदर्भ में सह सरकार्यवाह आलोक कुमार कहते हैं कि ‘संघ में घोष केवल वादन या मनोरंजन नहीं है, बल्कि यह एक साधना है, जो मनुष्य को अनुशासन, समन्वय और राष्ट्रहित से जोड़ती है’। इसके साथ ही वेद मंत्र ‘सङ्गच्छध्वं संवदध्वं, सं वो मनांसि जानताम्। देवा भागं यथा पूर्वे, संज्ञानाना उपासते।।’ का उल्लेख करते हुए कहते हैं कि जब सभी मिलकर एक साथ चलते हैं तो केवल कदम ही नहीं, बल्कि मन भी एक हो जाते हैं। यही घोष साधना का उद्देश्य है - राष्ट्र को एक दिशा में, एक मन होकर आगे बढ़ाना।

परंपरा

अरुण कुमार

(वरिष्ठ पत्रकार और सांस्कृतिक समीक्षक)

लोक संगीत के फ्यूजन से नई पीढ़ी को जोड़ने की पहल

किसी भी इलाके की पहचान वहां के लोक गीत और संगीत होते है। युवा पीढ़ी इनसे विमुख हो रही है। जेन-जेड पश्चिमी तड़क-भड़क की गीत-संगीत वाली संस्कृति की दीवानी है। इसके चलते लोक संगीत व गीतों के श्रोताओं का दायरा सिमट रहा है। इस संकट को महसूस करते हुए ‘पांडवास बैंड’ समूह ने उत्तराखंड के परंपरागत वाद्य यंत्र, परिधान के जरिये लोक संगीत को फ्यूजन स्वरूप देकर युवाओं को अपनी जड़ों के साथ जोड़ने का प्रयास किया।

ऐसे वक्त में जब युवा पीढ़ी वैश्वीकरण व सोशल मीडिया के दौर में अपनी सांस्कृतिक विरासत से मुंह मोड़ रही है, श्रीनगर गढ़वाल के तीन डोभाल भाइयों ने डेढ़ दशक पहले स्थापित बैंड ‘पांडवास’ ने नई लीक स्थापित की। उन्होंने परंपरागत लोकगीतों व संगीत को फ्यूजन के जरिए नई पीढ़ी की आकांक्षाओं के अनुरूप ढाला है। उनके कंसर्ट और लाइव कार्यक्रमों की धूम का ये आलम है कि उन्हें भारत के नेशनल गेम जैसे आयोजनों में विशेष रूप से आमंत्रित किया गया। अब उन्हें यूनेस्को ने सांस्कृतिक धरोहर संरक्षण के प्रयासों के चलते, दिल्ली में होने वाले एक राष्ट्रीय लोक संगीत कार्यक्रम में आमंत्रित किया है।

यह उत्तराखंडी बैंड ‘धवाड़ी पांडवास’ कंसर्ट के सिलसिले में चंडीगढ़ में उत्तराखंड मूल के संगीत प्रेमियों से रूबरू हुआ। पंद्रह सदस्यीय इस बैंड के सूत्रधार व संस्थापक ईशान डोभाल, क्रिएटिव हेड कुणाल व कॉस्ट्यूम डिजाइनर सलिल तीनों भाई हैं। इसके अलावा लोकगायक अनिरुद्ध, राकेश, बांसुरी वादक अंशुल, दीपक,गिटार वादक नवदीप,तबला वादक ऋषि व कुनाल वाद्य यंत्रों के उस्ताद हैं। वहीं तीन महिला कलाकार गायक ख्याति, ड्रम वादक श्रेष्ठा व शिवानी गायन टीम का हिस्सा हैं।

टीम के सह-संस्थापक सलिल बताते हैं कि नई पीढ़ी के परंपरागत लोक संगीत से मोहभंग होते दौर में हमने फ्यूजन संगीत के जरिये धुनों को पाश्चात्य तेवर देने का प्रयास किया है। हमारी विशिष्ट पोशाक उत्तराखंड के जौनसार इलाके में पहने जाने वाली विशेष वेशभूषा है, जो युवाओं को आकर्षित करती है। हम तीनों भाइयों ने संगीत की शिक्षा ली है और सांस्कृतिक परंपरा को समृद्ध करने का प्रयास किया है। वे कहते हैं कि देश के कला प्रेमी उत्तराखंडियों को हमें सकारात्मक प्रतिसाद मिल रहा है।

निस्संदेह, किसी भी प्रदेश की पहचान वहां के लोक गीत और संगीत होते है। युवा पीढ़ी इनसे विमुख होती जा रही है। दरअसल, जेन जेड पश्चिमी तड़क-भड़क की गीत-संगीत वाली संस्कृति की दीवानी होती जा रही है। जिसके चलते लोक संगीत व गीतों के श्रोताओं का दायरा सिमटता जा रहा है। इस संकट को महसूस करते हुए पांडवास बैंड समूह ने उत्तराखंड के परंपरागत वाद्य यंत्र, परिधान के जरिये लोक संगीत को फ्यूजन स्वरूप देकर युवाओं को अपनी जड़ों के साथ जोड़ने का प्रयास किया। केदार घाटी से निकलकर देश के महानगरों में आयोजित होने वाले सांस्कृति उत्सवों में पांडवास की प्रस्तुति को हाथों हाथ लिया जा रहा है।

वर्ष 2010 में ईशान, कुणाल और सलिल तीन भाइयों ने मिलकर ‘पांडवास’ बैंड का गठन किया। कलात्मक दृष्टि कलाप्रेमी पिता से मिली है। इन भाइयों ने संगीत विषयक शिक्षा संस्थागत रूप से ली है। इस बाबत ईशान डोभाल बताते है कि उनके बैंड का मकसद उत्तराखंड की युवा पीढ़ी को अपनी जड़ों की तरफ लेकर जाना है। वे अभिभूत होते हैं जब उनके बैंड के परंपरागत परिधान, लोक गीत और वाद्य यंत्र युवाओं को सम्मोहित करते है। ग्रुप के मेंबर कुणाल का कहना है कि उन्होंने उत्तराखंड की देश विदेश में बैठी युवा पीढ़ी की अपनी लोक संस्कृति से जोड़ने का प्रयास किया है। डोभाल बंधुओं ने युवा पीढ़ी के रूझान और बाजारी प्रवृत्तियों को समझा। अब तो जो परंपरागत गीत संगीत पहाड़ों की वादियों तक ही सीमित था उसे महानगरों के उतराखंडियों की पसंद बनाने का सार्थक प्रयास डोभाल बंधुओं ने किया है।

बैंड के अधिकांश सदस्य संगीत का विधिवत प्रशिक्षण लिए हुए है। यही नहीं बैंड के प्रमुख ईशान, कुणाल और सलिल को थिएटर की समझ भी है। प्रस्तुति के समय साउंड, ड्रेस, लाइट आदि पर उनका खास ध्यान रहता है। लोक संस्कृति से जुड़े परिधान दर्शकों व कला प्रेमियों को आकर्षित भी करते है। डोभाल बंधु मानते हैं कि यदि अच्छे श्रोता और दर्शक मिलते हैं तो उन्हें अपने बैंड के सदस्यों के साथ प्रस्तुति देने में आनन्द की अनुभूति होती है। संगीत अपनी जड़ों से जोड़ता है। वहीं इस बैंड की वोकल आर्टिस्ट शिवानी, ख्याति और श्रुति लोक गीत संगीत को अपनी जड़ों से जोड़ने का सार्थक माध्यम मानती हैं।

आईआईटी पासआउट बेटे ने की मां की हत्या

● डांटने पर हंसिए से किए थे वार, परिवार ने बताया हादसा

बैतूल। बोरदेही थाना क्षेत्र के मदनी बरछी गांव में शुक्रवार रात हुई एक महिला की मौत के मामले में रविवार को पुलिस ने खुलासा कर दिया है। शुरू में महिला की मौत को परिजनों ने हादसा बताया था। बाद में पुलिस जांच में यह खुलासा हुआ कि महिला की हत्या उसके ही बेटे ने की थी। आमला पुलिस ने आरोपी बेटे नितेश को गिरफ्तार कर लिया है। मृतका इमला झरबड़े (45) स्थानीय स्कूल शिक्षक संतोष झरबड़े की पत्नी थीं। परिवार ने पुलिस को बताया था कि वह घर में गिरने से घायल हुई थीं, लेकिन जब पुलिस मौके पर पहुंची, तो घर के अंदर खून फैला हुआ था। महिला के गले, छाती और पीठ पर धारदार हथियार से किए गए वारों के निशान देखकर पुलिस को शक हुआ। थाना प्रभारी राधेश्याम वट्टी ने बताया कि मामले में संदेह होने पर फॉरेंसिक टीम को बुलाया गया। विशेषज्ञ आबिद खान ने जांच के दौरान घर में खून के छींटे और संघर्ष के निशान मिलने की पुष्टि की। इसके बाद पुलिस ने परिजनों से सख्ती से पूछताछ की। पूछताछ में मृतका के बेटे नितेश झरबड़े ने हत्या की बात स्वीकार कर ली। प्रारंभिक जांच के अनुसार, मां की डांट-फटकार से नाराज होकर उसने गुस्से में आकर हंसिए से हमला कर दिया, जिससे उसकी मौके पर ही मौत हो गई। पुलिस के अनुसार, आरोपी नितेश ने मुंबई से इंजीनियरिंग की पढ़ाई की है, और बताया जा रहा है कि वह आईआईटी पासआउट है।

रेलवे इंस्टीट्यूट के चुनाव आज

आमला। आज मध्य रेल आमला के रेलवे इंस्टीट्यूट में होने वाले चुनाव होने जा रहें हैं जिसको लेकर रेलवे कर्मचारियों में उत्साह और जागरूकता का माहौल है। इस अवसर पर नेशनल रेलवे मज़दूर यूनियन ने सभी कर्मचारियों और मतदाताओं से अपील की है कि वे अपने मताधिकार का प्रयोग करते हुए संगठन को मजबूत बनाएं और संस्थान के समग्र विकास में योगदान दें। एनआरएमयू ने अपने घोषणा पत्र में कहा है कि एनआरएमयू बहुमत में आती है तो कर्मचारियों के लिए मनोरंजन, खेल और सांस्कृतिक कार्यक्रम, महिला सदस्यों के लिए अलग और स्वच्छ सुविधाएं, फ्री वाई-फाई और समाचार-पत्र/पत्रिकाओं की उपलब्धता, नियमित योग, स्वास्थ्य और प्रोत्साहन कार्यक्रम, पारदर्शी प्रबंधन और जवाबदेही सुनिश्चित करते हुए कर्मचारियों के हितों हर संभव प्रयास करना करना है। नेशनल रेलवे मजदूर यूनियन आमला के पदाधिकारियों कामरेड योगीराज घोटे, कॉ.नवीन कड़वे, कॉ. कृष्णकांत शर्मा, कॉ.राजेश कोसे कॉ.राजेश कोसे कॉ. ठेपे ने सभी कर्मचारियों से आग्रह किया है कि वे अधिक से अधिक संख्या में मतदान कर संगठन को मजबूत करें और आमला इंस्टीट्यूट के उज्जवल भविष्य के लिए योगदान दें।

प्रभारी मंत्री ने जिला अस्पताल का देर रात्रि किया औचक निरीक्षण, व्यवस्थाओं से हुए संतुष्ट

बैतूल। लोक स्वास्थ्य एवं चिकित्सा शिक्षा राज्यमंत्री तथा जिले के प्रभारी मंत्री नरेन्द्र शिवाजी पटेल ने शनिवार रात जिला अस्पताल का औचक निरीक्षण किया। निरीक्षण के दौरान उन्होंने रजिस्ट्रेशन काउंटर, इमरजेंसी वार्ड, गेरियाट्रिक वार्ड और पुरुष मेडिकल वार्ड का दौरा किया तथा भर्ती मरीजों से आत्मीय चर्चा कर उनका हालचाल जाना। मंत्री श्री पटेल ने मरीजों के परिजनों से भी अस्पताल की व्यवस्थाओं के संबंध में जानकारी ली, जिसमें परिजनों ने अस्पताल की व्यवस्थाओं की सराहना की। इसके बाद उन्होंने महिला एवं बाल रोग यूनिट का भी निरीक्षण किया और यहां भी मरीजों के परिजनों से चर्चा की। निरीक्षण के दौरान बालिका गोरी के आग्रह पर मंत्री श्री पटेल ने उसके साथ सेल्फी भी खिंचवाई। उन्होंने जिला चिकित्सालय की व्यवस्थाओं पर संतोष व्यक्त करते हुए चिकित्सकों और स्टाफ की कर्तव्यनिष्ठा एवं समर्पण भावना की सराहना की तथा उन्हें इसी प्रकार जनसेवा के पुनीत कार्य में लगे रहने के लिए प्रेरित किया। मीडिया से चर्चा के दौरान प्रभारी मंत्री श्री पटेल ने कहा कि दिवंगत बच्चों के दोषियों को बख्शा नहीं जाएगा और उनके खिलाफ कठोर कार्रवाई की जाएगी। उन्होंने कहा कि मध्यप्रदेश सरकार की प्राथमिकता है कि उपचाररत बच्चों को सर्वोत्तम चिकित्सा सुविधा मिले। उपचार में होने वाला संपूर्ण व्यय शासन द्वारा उठाया जाएगा, साथ ही भविष्य में इस प्रकार की घटना की पुनरावृत्ति न हो इसके लिए सुदृढ़ व्यवस्था बनाई जाएगी। इस अवसर पर मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी डॉ. मनोज हुरमाड़े, सिविल सर्जन डॉ. जगदीश घोरे सहित अन्य अधिकारी उपस्थित रहे।

बड़ी घटना के बाद भी नहीं सुधरी विवादों वाली गली के हालात

बैतूल/मुलताई। फव्वारा चौक से गांधी चौक को जोड़ने वाला मुख्य मार्ग जैन कोल्डिंग रोड पर अतिक्रमण नगर की शांति और सौहार्द के लिए गंभीर संकट बन गया है। अतिक्रमण के कारण मार्ग पर पैदल चलना मुश्किल है। यही कारण है कि यहां आए दिन दुर्घटनाए होती है, जो विवादों को जन्म देती है। इसीलिए लोग इसे विवादों वाली गली कहने लगे हैं। इस मार्ग पर मोटर साइकिल दुर्घटनाएं और विवाद होना नई बात नहीं है। व्यापारी बताते हैं कि इस मार्ग पर प्रति माह चार-पांच दुर्घटनाएं और विवाद आम बात है। किंतु हाल ही में दो दिन पूर्व जैन कोल्डिंग के सामने इस मार्ग पर मोटरसाइकिल सवार दो नाबालिक युवको का जब राष्ट्रीय स्वयं संघ के प्रचारक के साथ विवाद हुआ और इस विवाद के चलते जब संपूर्ण नगर में तनाव की स्थिति बनी, यह दुर्घटना पवित्र नगरी की वर्षों पुरानी भाईचारे की परंपरा पर गंभीर संकट थी, किंतु इस घटना के बावजूद इसके मूल कारण को अब भी प्रशासन गंभीरता से लेता दिखाई नहीं दे रहा है। अतिक्रमण से परेशान इस मार्ग के व्यापारी बताते हैं कि हाल ही में हुए विवाद और इसे पूर्व हुए अनेकों विवाद का मूल कारण इस मार्ग पर फैला अतिक्रमण और एक दूसरे से ज्यादा अतिक्रमण करने की होड है साथ ही इस भीड़भाड़ वाले एरिया में खूब स्पीड से मोटरसाइकिल पर अपनी कला का प्रदर्शन करते कम उम्र के युवा है। यह दो कारणो के रहते ऐसी घटनाएं कभी रुक पाएगी कहना कठिन है।

मेरी दुकान तुम्हारी दुकान से पीछे क्यों....!-

जैन कोल्डिंग रोड पर आए दिन होती है, दुर्घटनाएं एवं विवाद

जैन कोल्डिंग मार्ग की सबसे बड़ी विडंबना कुछ व्यापारियों में अतिक्रमण करने को लेकर की जाने वाली प्रतिस्पर्धा है। कुछ व्यापारी एक दूसरे की दुकानों से आगे दुकान दिखाने की होड़ में आधे से अधिक दुकान रोड पर लगा लेते हैं जिसका खामियाजा संपूर्ण व्यापारियों को भुगतना पड़ता है। कुछ लोगों की वजह से इस मार्ग का व्यापार प्रभावित होता रहा है। दो पहिया वाहनों को निकलने में दिक्कत होती है और फिर दुर्घटनाएं होती है जिससे जिससे विवादों का जन्म होता है। पिछ्ले दिनों भी जैन फोल्डिंग के सामने विवाद हुआ था जिसमें कुछ लोगों ने गोली चलने और कुछ लोगों ने पटाखा फोड़े जाने की अफवाह उड़ाई थी हालांकि यह मामला रखा दफा हो गया किंतु इस मार्ग पर यह घटनाए आम है।

व्यापारियों ने कहा, हम भी है परेशान ...

कांग्रेस युवा नेता एवं कपड़ा व्यापारी सुमित शिवहरे बताते हैं कि इस मार्ग की सबसे बड़ी समस्या अतिक्रमण और दूसरा तेज गति से दो पहिया वाहन दौड़ते युवा है जब तलक इन दो कारणो पर अंकुश नहीं लगाया जाएगा ऐसी घटनाएं होती रहेगी। पूर्व कृषि उपज मंडी सदस्य एवं इलेक्ट्रॉनिक दुकान के संचालक नरेंद्र साहू बताते हैं इस मार्ग पर हर माह में 4 से 5 दुर्घटनाएं और विवाद होना आम बात है। इस अतिक्रमण के चलते हम व्यापारियों को भारी दिक्कतों का सामना करना पड़ता है। इस मार्ग के आसपास रहने वाले लोग इस अतिक्रमण के चलते इमरजेंसी में अपने घर के मरीजों को बहुत मुश्किल से दूसरी तरफ से अस्पताल पहुंचाते हैं। टेलर अरुण जैन बताते हैं कि अतिक्रमण और इस मार्ग पर वाहनों की समस्या के चलते हमारा व्यापार ठप होने लगा है प्रशासन को इसके सुधार के लिए ठोस कार्रवाई करने की आवश्यकता है।

इनका कहना है

मुलताई के जैन कोल्ड्रिंक रोड पर अतिक्रमण हटाने के लिए वर्तमान में नगर पालिका की कोई योजना नहीं है। इस संबंध में मुख्य नगर पालिका अधिकारी से चर्चा करके फिर आपको बताता हूं।

–महेश शर्मा उप यंत्री नगर पालिका मुलताई

वातावरण हुआ राममय – हिंदी लेखिका संघ मध्य प्रदेश द्वारा रामायण प्रसंग पर काव्य गोष्ठी एवं पुस्तक लोकार्पण

भोपाल। हिंदी लेखिका संघ मध्य प्रदेश के तत्वावधान में एनआईटीटीटीआर, योग भवन, श्यामला हिल्स में ÷रामायण प्रसंग पर काव्य गोष्ठी एवं पुस्तक लोकार्पण÷ का आयोजन किया गया। पूरा वातावरण राममय और भावपूर्ण श्रद्धा से ओतप्रोत रहा। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि कथा व्यास एवं ज्योतिषाचार्य डॉ. नीलिम्प त्रिपाठी थे। विशिष्ट अतिथियों के रूप में सरोजिनी नायडू शासकीय महाविद्यालय की हिंदी विभागाध्यक्ष डॉ. कीर्ति शर्मा और साहित्यकार श्री संदीप त्रिवेदी उपस्थित रहे। हिंदी लेखिका संघ की प्रांतीय अध्यक्ष डॉ. साधना गंगराड़े ने स्वागत उद्बोधन देते हुए अतिथियों का

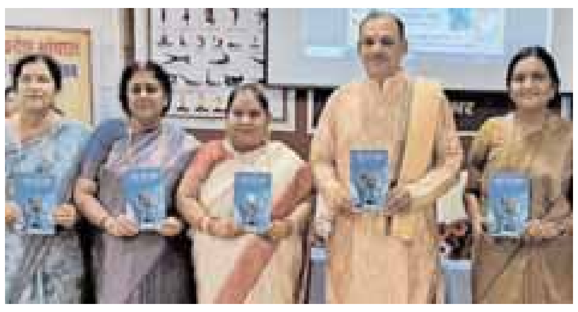

अभिनंदन किया। इस अवसर पर लेखिका वंदना त्रिपाठी की काव्य-पुस्तक 'भावों की सरिता' का लोकार्पण किया गया। पुस्तक पर समीक्षात्मक वक्तव्य डॉ. वर्षा चौबे ने प्रस्तुत किया। अपने उद्बोधन में डॉ. नीलिम्प त्रिपाठी ने कहा कि ÷रामायण केवल कथा नहीं, अपितु सम्पूर्ण जगत का जीवन-सार है।÷ उन्होंने रामायण के विविध प्रसंगों पर रोचक जानकारियाँ साझा कीं। डॉ. कीर्ति शर्मा ने कहा कि ÷लोकभाषा और लोकगीतों में रामायण भारतीय संस्कृति का केंद्रबिंदु है।÷ कार्यक्रम में डॉ. रंजना शर्मा, मनोरमा श्रीवास्तव, नीलिमा रंजन, निमिषा गुप्ता, सीमा अग्रवाल, रेखा भटनागर, विनीत राहुरीकर, करुणा श्रीवास्तव, रेनू श्रीवास्तव, कल्पना विजयवर्गीय और प्रतिभा द्विवेदी ने रामायण प्रसंगों पर आधारित काव्य-पाठ प्रस्तुत किया, जिन्हें उपस्थित साहित्यप्रेमियों ने सराहा। कार्यक्रम का संचालन डॉ. साधना शुक्ला ने किया तथा आभार प्रदर्शन शेफालिका श्रीवास्तव द्वारा किया गया। सरस्वती वंदना का मनमोहक प्रस्तुतिकरण नीता खरे ने किया। कार्यक्रम में बड़ी संख्या में साहित्यकार, कवि एवं साहित्यप्रेमी उपस्थित रहे।

स्वयंसेवकों ने बनाई भारत माता की जय की अद्भुत आकृति

संघ के शताब्दी वर्ष पर जिले 16 स्थानों से निकला भव्य पथ संचलन

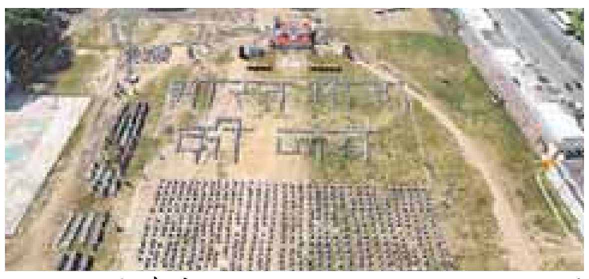

● संघ के शताब्दी वर्ष पर जिले में 16 स्थानों से निकला भव्य पथ संचलन

बैतूल। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के शताब्दी वर्ष के अवसर पर बैतूल नगर सहित जिले के विभिन्न स्थानों पर रविवार को भव्य पथ संचलन का आयोजन सम्पन्न हुआ। बैतूल नगर की नौ बस्तियों से एक साथ प्रातः 8 बजे पथ संचलन का शुभारंभ हुआ। संचलन नगर के प्रमुख मार्गों से निकलते हुए प्रातः 10 बजे एस.पी. ऑफिस चौक पर एकत्रित हुआ, जहां इसका दृश्य अत्यंत भव्य और अनुशासित स्वरूप में दिखाई दिया। इसके पश्चात सभी स्वयंसेवक लाल बहादुर शास्त्री स्टेडियम में एकत्र हुए, जहां हजारों स्वयंसेवकों ने भारत माता की जय आकृति में मानव श्रृंखला का निर्माण किया, जिसका दृश्य अत्यंत अद्भुत, मनमोहक और प्रेरणादायी रहा।

पथ संचलन मार्ग पर नागरिकों और मातृशक्ति ने रंगोली बनाकर, पुष्पवर्षा कर, शंखध्वनि और मंजीरे बजाकर स्वयंसेवकों का स्वागत किया। अनुशासन, उत्साह और राष्ट्रभक्ति से परिपूर्ण यह दृश्य नगरवासियों के लिए अविस्मरणीय बन गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि हेमंतचंद्र बबलू दुबे रहे। मंच पर जिला संघचालक बुधपालसिंह ककोड़िया, नगर संघचालक संजय घिंघोड़े तथा मुख्य वक्ता पुरुषोत्तम शर्मा (प्रांतीय पर्यावरण गतिविधि के सह संयोजक) उपस्थित थे। कार्यक्रम का प्रारंभ अमृतवचन और एकल गीत से हुआ। मुख्य वक्ता पुरुषोत्तम शर्मा ने संघ की स्थापना वर्ष 1925 से लेकर अब तक के 100 वर्षों के संघटन, अनुशासन और सेवा के कार्यों पर विस्तार से प्रकाश डाला। उन्होंने बताया कि कैसे संघ ने संघर्षों और संकटों के बीच अपनी विचारधारा को और अधिक सुदृढ़ किया तथा राष्ट्र निर्माण के हर क्षेत्र में अपना योगदान दिया। उन्होंने कहा कि हिंदू समाज वह शक्ति है जो एक हाथ में प्रलय और दूसरे में सृजन लेकर चलता है। डॉ. केशव बलिराम हेडगेवार ने संघ की स्थापना के 15 वर्षों में ही इसे पूरे देश में विस्तार दिया। द्वितीय सरसंघचालक माधवराव सदाशिवराव गोलवलकर (श्री गुरुजी) ने समाज जीवन के विविध क्षेत्रों में संघ के नए आयाम स्थापित किए। तृतीय सरसंघचालक बालासाहब देवरस ने सामाजिक समरसता को केंद्र में रखा। चतुर्थ सरसंघचालक प्रो. राजेंद्र सिंह (रज्जू भैया) ने सेवा कार्यों को जीवन का ध्येय बनाया, जबकि पंचम सरसंघचालक सुदर्शनजी ने कार्य की गुणवत्ता को सर्वोपरि रखा। वर्तमान सरसंघचालक मोहनराव भागवत ने समाज जागरण और समन्वय की भावना को विश्व के 56 देशों तक पहुचाया।

– 15 से 30 नवम्बर तक व्यापक गृह संपर्क अभियान– श्री शर्मा ने बताया कि शताब्दी वर्ष के द्वितीय चरण में 15 से 30 नवम्बर तक व्यापक गृह संपर्क अभियान चलाया जाएगा। इस दौरान नगर और खंड स्तर पर बड़ी संख्या में संपर्क टोली द्वारा घर-घर जाकर संघ के कार्य और उद्देश्यों की जानकारी दी जाएगी। उन्होंने कहा कि शताब्दी वर्ष में पंच परिवर्तन के अंतर्गत सामाजिक समरसता, कुटुंब प्रबोधन, स्वदेशी, पर्यावरण और नागरिक कर्त्तव्य जैसे विषयों को अपनाने का आह्वान किया गया है। इसी क्रम में जिले के विभिन्न ग्रामीण अंचलों में भी पथ संचलन का आयोजन हुआ। रानीपुर में अनिल अग्रवाल, धामनगांव में अमोल पानकर, सावलमेढा में शिवशंकर जी, बैतूल बाजार में अभिषेक जैन, भीमपुर, तावड़ी, चिखली, झापल और नांदा में पुरुषोत्तम शर्मा, चोपना में संजय चौहान, कुंडी में नितिन मेहतो, सलैया में मनोज नागवंशी, गोंडू मंडई में महेश्वर भलावी, बोरगांव जीन में शिवराज झाड़े तथा खंडारा में विजय हारोड़े मुख्य वक्ता के रूप में उपस्थित रहे।

बिरसा मुंडा जयंती पर बैतूल में होगा राज्य स्तरीय आदिवासी महोत्सव

बैतूल। धरती आबा भगवान बिरसा मुंडा की जयंती 15 नवंबर को जिलेभर में हर्षोल्लास के साथ मनाई जाएगी। इस अवसर पर जय आदिवासी युवा शक्ति (जयस) द्वारा एक भव्य राज्य स्तरीय युवा आदिवासी महोत्सव का आयोजन किया जाएगा। यह आयोजन बैतूल के रानी दुर्गावती ऑडिटोरियम में 15 नवंबर को किया जाएगा, जिसके लिए तैयारियां युद्धस्तर पर जारी हैं। इसी को लेकर रविवार को जयस की जिला स्तरीय बैठक संपन्न हुई, जिसमें कार्यक्रम की रूपरेखा पर विस्तृत चर्चा की गई। बैठक की अध्यक्षता जयस नगर अध्यक्ष राजू उइके ने की, वहीं बैठक में जयस जिलाध्यक्ष संदीप कुमार धुर्वे, जयस जिला सरंक्षक राजा धुर्वे तथा जयस जिला प्रभारी महेश शाह उइके ने मुख्य भूमिका निभाई। इस दौरान तय किया गया कि 15 नवंबर के रात्रिकालीन मुख्य कार्यक्रम से एक दिन पूर्व जयस द्वारा सोना घाटी से एक विशाल बाइक रैली निकाली जाएगी। यह रैली जिले के प्रमुख मार्गों सदर, कोठी बाजार होते हुए कलेक्ट्रेट पहुंचेगी, जहां विभिन्न जनहित मांगों को लेकर जयस द्वारा ज्ञापन सौंपा जाएगा। इसके बाद यह रैली रानी दुर्गावती ऑडिटोरियम पहुंचेगी, जहां राज्य स्तरीय आदिवासी महोत्सव कार्यक्रम का आयोजन होगा। जयस जिलाध्यक्ष संदीप कुमार धुर्वे ने बताया कि इस महोत्सव के दौरान आदिवासी वेशभूषा फैशन शो प्रतियोगिता, बिरसा मुंडा मेधावी छात्र प्रोत्साहन कार्यक्रम, और पारंपरिक आदिवासी लोक नृत्य की मनमोहक प्रस्तुतियां दी जाएंगी। इस महोत्सव में 50 हजार से अधिक लोग शामिल होंगे, जिससे यह आयोजन जिले के इतिहास का सबसे भव्य आदिवासी सांस्कृतिक पर्व बन जाएगा। बैठक के अंत में आगामी तैयारियों की समीक्षा करते हुए निर्णय लिया गया कि अगली बैठक 19 अक्टूबर को आयोजित की जाएगी।

शहर के 18 वार्डों में 70 से ज्यादा जगहों पर शराब के अवैध अड्डे

नए जिला पुलिस कप्तान के लिए भी चुनौती, क्या रुक पाएगी अवैध शराब की बिक्री

आमला। जिले में अभी-अभी नए पुलिस कप्तान ने पदभार संभाला है, शहर में भी कानून के नुमाइंदो में रद्दोबदल होते रहे है, किंतु फिर भी शहर के कोने-कोनो में अपनी जड़े गहरी कर चुके अपराधों के अड्डे व्यवस्था का हिस्सा बनकर फलते-फूलते रहे हैं। फिर चाहे किसी की जान जाए, कोई गंभीर रोगों का शिकार होकर बिस्तर पकड़ ले, व्यवस्था फिर भी चलती रही है। दरअसल हम बात कर रहे हैं पूरे शहर को अपनी गिरफ्त में ले चुके अवैध शराब के अड्डों की, शहर में अवैध शराब के कारोबार को गैर सामाजिक लोग सस्ती सुलभ कमाई का एक बड़ा जरिया मानते हैं। आमला अब अवैध शराब के अड्डों का ऐसा गढ़ बन चुका है, जहां पुलिस व्यवस्था भी मानो, इसी का एक हिस्सा बन गई है। जानकारी के अनुसार शहर के सभी 18 वार्डों में लगभग 70 से ज्यादा स्थलों पर अवैध शराब के अड्डे खूब फल फूल रहे हैं। शहर में तेजी से पनप रहे अवैध शराब के अड्डों और उसको चलाने वाले गैर सामाजिक लोगों द्वारा मंदिरों के आसपास और उसके प्रांगण में भी यह धंधा चलाया जा रहा

हैं, शहर के कुछ धार्मिक प्रांगण भी अब इस कारोबार से अछूते नहीं रहे हैं, कुल मिलाकर सवालिया निशान पूरी कानून व्यवस्था की पोल खोल रहा है कि आखिर ये अवैध कारोबार किसकी शह पर तेजी से फैल रहा हैं।

ढाबों और होटल का मकसद भी केवल शराब

जानकारी के अनुसार शहर की सीमा से सटे ज्यादातर ढाबे और होटल आदि केवल शराब बेचने के मकसद से ही चलाए जा रहे हैं, यहां कुछ ढाबे तो बाकायदा ग्राहकों की मांग अनुसार देसी-विदेशी से लेकर महुआ की कच्ची शराब भी न्यूनतम दाम पर उपलब्ध करा रहे हैं शहर में इस तरह के अवैध कारोबारों को बढ़ावा देकर आने वाली पीढियां को नशे की गर्त में धकेलने का ककाम किया जा रहा है। कई स्कूल पढने वाले बच्चे भी प्राय इन अवैध ढाबों और होटलो के आसपास देखे जाते हैं।

इनका कहना है -

हमारे द्वारा इलाके में लगातार अवैध शराब के खिलाफ कार्यवाही की जाती रहती है। ये एक बड़ी समस्या है, पर इससे भी कठोरता के साथ निपटा जाएगा।

– राजेश सातनकर, थाना प्रभारी आमला

0 से 5 वर्ष के बच्चों को पोलियो की दो बूंद अवश्य पिलाएं : प्रभारी मंत्री

प्रभारी मंत्री ने जिला अस्पताल में बच्चों को पिलाई पोलियो की दो बूंद

राष्ट्रीय सघन पल्स पोलियो अभियान का किया शुभारंभ

बैतूल। लोक स्वास्थ्य एवं चिकित्सा शिक्षा मंत्री तथा जिले के प्रभारी मंत्री नरेन्द्र शिवाजी पटेल ने रविवार को जिला चिकित्सालय के महिला एवं बाल रोग इकाई में स्थापित पोलियो बूथ पर नवजात बच्चों को पोलियो की दो बूंद पिलाकर राष्ट्रीय सघन पल्स-पोलियो अभियान का शुभारंभ किया। इस अवसर पर उपस्थित विधायक आमला डॉ योगेश पंडाग्रे, जिला पंचायत उपाध्यक्ष हंसराज धुर्वे सहित अन्य जनप्रतिनिधि और अधिकारियों ने भी बच्चों को पोलियो की खुराक पिलाई। प्रभारी मंत्री श्री पटेल ने कहा कि भले ही भारतवर्ष पूरी तरह से पोलियो मुक्त हो चुका हैं, लेकिन भारत के आसपास के देशों में पोलियो का संक्रमण अभी भी जारी हैं। जिससे भारत में भी पोलियो के संक्रमण का खतरा बना रहता हैं। जिससे संपूर्ण सुरक्षा के लिए राष्ट्रीय सघन पल्स पोलियो अभियान चलाया जा रहा हैं। जिसके लिए बैतूल जिले में 2018 पोलियों बूथ बनाएं गए हैं, जहां 0 से 5 वर्ष तक के बच्चों को पोलियो की खुराक पिलाई जाएगी। प्रभारी मंत्री श्री पटेल ने कहा कि बैतूल के लिए 1 लाख 68 हजार 416 बच्चों को पोलियो की खुराक का अनुमानित लक्ष्य निर्धारित किया गया है। उन्होंने सभी पालकों से आग्रह किया कि अपने बच्चों को नजदीकी पोलियो बूथ पर ले जाकर पोलियो की दवा अवश्य पिलाए और अभियान को सफल बनाकर भारत वर्ष को पोलियो मुक्त बनाएं रखें। इस दौरान उन्होंने नवजात बच्चों के जन्म प्रमाण पत्र भी उनकी माताओं को सौंपे।

12 से राष्ट्रीय पल्स-पोलियों अभियान की शुरूआत .... मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी डॉ मनोज कुमार हुरमाडे ने बताया कि राष्ट्रीय पल्स-पोलियों अभियान का शुभारंभ 12 अक्टूबर को जिला चिकित्सालय बैतूल के एमसीएच भवन में प्रात- 8 बजे किया गया है। सीएमएचओ डॉ हुरमाड़े ने जानकारी देते हुए कि प्रथम दिवस, बूथ पर एवं दूसरे एवं तीसरे दिन 13 और 14 अक्टूबर को घर-घर 0 से 5 वर्ष तक की आयु के बच्चों को पोलियो की खुराक दी जाएगी, जिले में 0 से 5 वर्ष तक के अनुमानित कुल 1 लाख 68 हजार 416 बच्चों को पोलियों की खुराक दी जाएगी। शहरी क्षेत्र में 226 एवं ग्रामीण क्षेत्र में 1683 कुल 1909, ट्रांजिट बूथ 29 एवं 6 मोबाइल टीम इस प्रकार कुल 2018 टीकाकरण बूथ बनाये गये हैं।

क्रॉसिंग पाईटों में 88 बूथ बनाकर पिलाई जायेगी दवाई .... उन्होंने बताया कि बस स्टेण्ड, रेल्वे स्टेशन, जिले के क्रासिंग पाईटों में 88 बूथ बनाकर दवा पिलाई जायेगी। साथ ही जिले में हाई रिस्क एरिया, ईंट भट्टे, निर्माण स्थल, मेले, झुग्गी-झोपडी, घुमक्कड़ आबादी स्थल को भी चिन्हित कर 21 मोबाइल टीमों के द्वारा पोलियो की दवा पिलाने का कार्य किया जाएगा। इसके लिए समस्त तैयारियां की जा चुकी हैं। आयोजित कार्यक्रम में सिविल सर्जन सह मुख्य अस्पताल अधीक्षक डॉ. जगदीश घोरे, जिला स्वास्थ्य अधिकारी डॉ राजेश परिहार, जिला टीकाकरण अधिकारी डॉ प्रांजल उपाध्याय, संयुक्त कलेक्टर मकसूद अहमद, एसडीएम अभिजीत सिंह आदि उपस्थित रहे।

अहोई अष्टमी व्रत विशेष

श्वेता गोयल

लेखक शिक्षक हैं।

अनहोनी को होनी बनाने वाली शक्ति

हिंदू धर्म में ऐसे अनेक पर्व और त्योहार मनाए जाते हैं, जो न केवल धार्मिक आस्था बल्कि सामाजिक एवं सांस्कृतिक एकता के भी प्रतीक होते हैं। ऐसे ही महत्वपूर्ण पर्वों में से एक है खासतौर से उत्तर भारत में मनाया जाने वाला पर्व 'अहोई अष्टमी'। भारतीय संस्कृति में मातृत्व के महत्व को उजागर करता 'अहोई अष्टमी' पर्व कार्तिक मास की कृष्ण पक्ष की अष्टमी को मनाया जाता है। इस वर्ष यह पर्व 13 अक्टूबर को मनाया जा रहा है। यह पर्व विशेष रूप से माताओं द्वारा अपनी संतान की लंबी उम्र और खुशहाल जीवन की कामना के लिए मनाया जाता है। इस दिन वे अपने बच्चों के स्वास्थ्य और दीर्घायु की कामना करती हैं। माताएं इस दिन विशेष रूप से उपवास रखती हैं और रात को तारों की पूजा करती हैं। सनातन धर्म में अहोई अष्टमी का व्रत बेहद शुभ माना जाता है। मान्यता है कि यह व्रत करने से संतान को लंबी आयु और सुरक्षा की प्राप्ति होती है, साथ ही इस दिन उपवास का पालन करने से संतान संबंधी सभी समस्याएं दूर होती हैं।

अहोई अष्टमी की मान्यता के अनुसार, इस दिन विशेष पूजा अर्चना करने से माता अहोई संतान सुख प्रदान करती हैं। अहोई माता को देवी पार्वती का अवतार माना जाता है, जिन्हें बच्चों की रक्षक और कल्याण करने वाली मां के रूप में पूजा जाता है। यह व्रत काफी कठिन और महत्वपूर्ण माना जाता है। महिलाएं इस दिन निर्जला व्रत रखती हैं और माता पार्वती के 'अहोई' रूप की पूजा करती हैं, उसके बाद तारों को देखकर अर्ध्य देने के बाद ही अपना व्रत खोलती हैं। अहोई अष्टमी का पर्व भारतीय समाज में मातृत्व की शक्ति और बच्चों के प्रति मां की चिंता को दर्शाता है। दरअसल वो मां ही है, जिसका मन अपने बच्चों की सुरक्षा और सफलता के लिए सबसे ज्यादा चिंतित रहता है और मां का अपने बच्चों के साथ ऐसा आत्मीय जुड़ाव पूरी दुनिया में सबसे ज्यादा भारतीय संस्कृति में ही देखने को मिलता है। 'अहोई अष्टमी' पर माताएं अहोई माता से यही आशीर्वाद मांगती हैं कि उनके बच्चों के सभी सपने साकार हों, उनका भविष्य उज्ज्वल हो, उनका जीवन स्वस्थ रहे और वे दीर्घायु हों।

परिवार की एकता को मजबूत करता यह पर्व न केवल एक धार्मिक पर्व है बल्कि सामाजिक और सांस्कृतिक दृष्टिकोण से भी बहुत महत्व रखता है। धार्मिक आस्था का प्रतीक पर्व 'अहोई अष्टमी' हमारी संस्कृति और परंपराओं को जीवित रखने में अहम भूमिका निभाता है। दरअसल इस पर्व की पूजा विधि, कथा और परंपराएं हमें अपने परिवार और समाज के प्रति जिम्मेदारी का अहसास कराती हैं और इस प्रकार यह पर्व हमारे जीवन में एक महत्वपूर्ण स्थान रखते हुए हमें यह भी सिखाता है कि हम कैसे अपने बच्चों के प्रति अपने प्रेम और चिंता को प्रकट कर सकते हैं। 'अहोई अष्टमी' पर्व के माध्यम से हम अपने पारिवारिक बंधनों को मजबूत करते हैं और यह सुनिश्चित करते हैं कि हमारी आने वाली पीढ़ियां भी इस सांस्कृतिक धरोहर को संजोकर रखें। वास्तव में यह पर्व एक ऐसा अनुष्ठान है, जो उपवास और पूजन के माध्यम से अपने बच्चों की कुशलता का वरदान मांगने से जुड़ा है। वैसे तो माताओं के लिए अपने बच्चों की दीर्घायु और उत्तम स्वास्थ्य की कामना से बढ़कर कुछ नहीं होता और अहोई अष्टमी ऐसा ही अनुष्ठान है, जिसमें पूरी तरह से बच्चों के कल्याण का ही भाव समाहित है। अहोई माता की पूजा और उपवास की इस परम्परा में अपने बच्चों की हर प्रकार के संकटों से बचाव की चिंता के साथ उनके भविष्य की बेहतरी से जुड़ा चिंतन भी शामिल है।

महिलाएं करवा चौथ के दिन चंद्रमा के दर्शन कर चांद को अर्ध्य देने के बाद व्रत खोलती हैं जबकि अहोई अष्टमी के दिन अधिकांश स्थानों पर तारों को देखकर अर्ध्य देने की परंपरा है। माना जाता है कि आसमान में सभी तारे अहोई माता के वंशज हैं, इसीलिए यह व्रत तब तक पूरा नहीं माना जाता, जब तक तारों को अर्ध्य नहीं दिया जाता। माताएं इस व्रत में पूजा के दौरान मां पार्वती से प्रार्थना करती हैं कि जिस प्रकार आकाश में तारे हमेशा चमकते रहते हैं, वैसे ही हमारे परिवार में जन्म लेने वाले बच्चे का भविष्य भी चमकता रहे। अहोई अष्टमी के दिन तारों की पूजा को लेकर मान्यता है कि यदि माताएं अहोई अष्टमी के दिन असंख्य तारों के दर्शन और पूजा करेंगी तो पूजा करने से उनके कुल में अनगिनत संतान होती हैं। अहोई का अर्थ है 'अनहोनी को होनी बनाना'। अहोई अष्टमी जैसे पर्व हमारी सांस्कृतिक धरोहर का महत्वपूर्ण हिस्सा हैं। यह पर्व हमें अपने पूर्वजों की परंपराओं को मानने और संजोने का अवसर प्रदान करता है और नई पीढ़ी के बच्चों को ऐसे पर्वों के माध्यम से संस्कारों और मूल्यों का भी ज्ञान होता है।

समय के साथ अहोई अष्टमी मनाने की परंपराओं में सुखद बदलाव भी आया है। दरअसल पहले अहोई अष्टमी व्रत केवल पुत्र की खुशहाली और लंबी उम्र के लिए ही किया जाता था और यह व्रत केवल वही महिलाएं करती थी, जो पुत्रवती होती थी लेकिन अब अहोई अष्टमी व्रत पुत्र-पुत्री का भेद किए बगैर माताएं अपनी संतान की सुख-समृद्धि के लिए करती हैं, फिर चाहे वह बेटा हो या बेटी।

'अपना घर' आश्रम सेवा, संवेदना और स्नेह का केंद्र है : शिवराज सिंह चौहान

*हम साथ मिलकर समाज सेवा के लिए एक क्रांति खड़ी कर सकते हैं *लोकतंत्र सेनानियों की गाथा त्याग, तपस्या और बलिदान की कहानी है

विदिशा। केंद्रीय कृषि एवं किसान कल्याण तथा ग्रामीण विकास मंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान रविवार को विदिशा प्रवास पर रहे। इस दौरान उन्होंने 'अपना घर आश्रम' के द्वितीय स्थापना दिवस समारोह में भाग लिया, आश्रम में रह रहे मनोरोगियों से आत्मीय संवाद किया, उन्हें भोजन कराया और उनके अच्छे स्वास्थ्य की कामना की। श्री चौहान ने इस अवसर पर लोकतंत्र सेनानी संभागीय सम्मेलन तथा कृषक संगोष्ठी को भी संबोधित किया।

मानव जीवन का अर्थ केवल अपने लिए नहीं, दूसरों के लिए जीना है-कार्यक्रम को संबोधित करते हुए श्री चौहान ने कहा कि मानव जीवन का सच्चा अर्थ दूसरों के लिए जीना है। अपने लिए तो सभी जीव-जंतु भी जीते हैं, लेकिन जो दूसरों के लिए जिए - वही जीवन सार्थक है। उन्होंने कहा, सियाराम मय सब जग जानी, सब अपने हैं, पराया कौन है, यही भारतीय संस्कृति का मूल तत्व है। उन्होंने कहा कि सभी प्राणियों में एक ही चेतना है - सृष्टि के कण-कण में ईश्वर का वास है और हर आत्मा में परमात्मा का अंश विद्यमान है।

जो लोग विशिष्ट कार्य करते हैं, वे भगवान की विभूतियाँ हैं-केंद्रीय मंत्री ने कहा कि भगवान श्रीकृष्ण ने गीता में कहा है -यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत... तदात्मानं सृजाम्यहम्। जब-जब अधर्म बढ़ता है, तब-तब धर्म की रक्षा और सज्जनों के कल्याण हेतु भगवान किसी न किसी रूप में अवतरित होते हैं। श्री चौहान ने कहा कि विशिष्ट कार्य करने वाले लोग भगवान की ही विभूतियाँ हैं- उन्हें पहचानने की आवश्यकता है। उन्होंने कहा कि जब हम दूसरों के लिए कार्य करते हैं, तो वास्तव में अपने ही लिए करते हैं। हमारे ऋषियों ने कहा है- आत्मवत् सर्वभूतेषु, सर्वे भवन्तु सुखिनः - यही भारतीय संस्कृति का सार है। जहाँ दुख की परछाई हो, वहाँ दीप जलाना ही सच्ची सेवा है।

सेवा और परोपकार दो महान शब्द हैं-श्री चौहान ने कहा कि जो अपने जीवन का ध्यान नहीं रख पा रहे, अपनों द्वारा ठुकराए गए हैं - यदि उनकी सेवा की जाए, तो इससे बड़ा कोई पूजन नहीं। भगवान नारियल या मिठाई से नहीं, बल्कि सेवा और परोपकार से प्रसन्न होते हैं। उन्होंने कहा, परहित सरिस धरम नहीं भाई इससे बड़ा कोई धर्म नहीं। उन्होंने डॉ. भारद्वाज द्वारा प्रारंभ किए गए 'अपना घर आश्रम' प्रकल्प की सराहना करते हुए कहा कि यह कार्य प्रेरणादायक है, और इसे आगे बढ़ाना ही जीवन की सार्थकता है।

विदिशा को स्वच्छता में नंबर-1 बनाना है-केंद्रीय मंत्री ने समाजसेवियों और नागरिकों से अपील की कि 'अपना घर आश्रम' जैसी सेवा गतिविधियाँ समाज निर्माण का आधार हैं।उन्होंने कहा कि बीमारों की सहायता, मेधावी विद्यार्थियों की मदद, पर्यावरण संरक्षण - ये सब सेवा के ही रूप हैं। श्री चौहान ने कहा, मैं प्रतिदिन पेड़ लगाता हूँ, और चाहता हूँ कि विदिशा भी स्वच्छता में इंदौर की तरह नंबर-1 बने। उन्होंने कहा कि स्वच्छता की जिम्मेदारी केवल नगर पालिका की नहीं, बल्कि हम सबकी है।

आपातकाल का दौर जब लोकतंत्र और संविधान कुचल दिए गए थे-श्री चौहान ने कहा कि आज की युवा पीढ़ी शायद नहीं जानती कि आपातकाल के समय लोकतंत्र सेनानियों ने कितने कष्ट झेले थे। उन्होंने कहा, इंदिरा गांधी ने उस समय लोकतंत्र और गणतंत्र दोनों को अपने पैरों तले रौंद दिया था। अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता छीन ली गई थी। उन्होंने याद किया कि तब कैसे लोकतंत्र रक्षकों को यातनाएँ दी गईं — किसी को बिजली के झटके, किसी को बर्फ की सिल्ली पर सुलाया गया।हम आज खुली हवा में सांस ले रहे हैं, लेकिन उन बलिदानों को याद रखना ही सच्चा लोकतंत्र है, उन्होंने कहा।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने पूर्व विधायक श्री तिवारी के निधन पर दु:ख व्यक्त किया

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने पूर्व विधायक, राष्ट्रवादी नेता श्री शंकरलाल तिवारी के निधन पर शोक व्यक्त किया है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि पूर्व विधायक स्व. श्री तिवारी बचपन से ही संघ से जुड़े थे और बेबाक शैली के लिए जाने जाते थे। स्व. श्री तिवारी आपातकाल में मीसा बंदी के रूप में कारावास में रहे। तीन बार सतना विधानसभा क्षेत्र से विधायक रहकर उन्होंने आमजन के हित में सक्रिय भूमिका का निर्वहन किया।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने बाबा महाकाल से दिवंगत आत्मा की शांति और शोकाकुल परिवार को यह दुख सहन करने की शक्ति देने की प्रार्थना की है।

मुख्यमंत्री ने स्वतंत्रता सेनानी डॉ. राममनोहर लोहिया की पुण्यतिथि पर दी श्रद्धांजलि

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने स्वतंत्रता सेनानी और प्रखर समाजवादी चिंतक डॉ. राममनोहर लोहिया की पुण्यतिथि पर स्मरण कर विनम्र श्रद्धांजलि दी है।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि सामाजिक न्याय और समानता के प्रति डॉ. लोहिया का समर्पण सदैव हम सबके लिए प्रेरणादायक रहेगा।

मप्र की स्वास्थ्य व्यवस्था अब ठेके और कमीशन की भेंट चढ़ चुकी : सुश्री संगीता शर्मा

राज्य महिला आयोग की पूर्व सदस्य बोलीं, सरकार की नाकामी ने उजागर की 'डबल इंजन' की पोल

भोपाल। राजधानी भोपाल के जेपी अस्पताल में शनिवार को हुए घटनाक्रम ने पूरे मध्यप्रदेश की स्वास्थ्य व्यवस्था की सच्चाई सामने रख दी है। ऑपरेशन थिएटर में एक घंटे से अधिक समय तक अंधेरा छाया रहा, डॉक्टरों ने टॉर्च की रोशनी में सर्जरी की, और 8 डायलिसिस मरीजों की जान अधर में लटक गई। जनरेटर में डीजल तक न डाला जाना सरकारी लापरवाही की पराकाष्ठा है।

राज्य महिला आयोग की पूर्व सदस्य एवं प्रदेश कांग्रेस प्रवक्ता सुश्री संगीता शर्मा ने इस गंभीर घटना को इंसानियत को शर्मसार करने वाला कृत्य बताया है और प्रदेश सरकार पर तीखा प्रहार किया है।सुश्री शर्मा ने कहा कि यह घटना प्रशासनिक असफलता ही नहीं, बल्कि सरकार की संवेदनहीनता का भी प्रतीक है। स्वास्थ्य मंत्री एवं उप मुख्यमंत्री राजेंद्र शुक्ल जनता की परेशानियों से पूरी तरह बेखबर हैं। शायद उन्हें रीवा के समदड़िया बिल्डर से जुड़े सौदों और कमीशनखोरी के मामलों से ही फुर्सत नहीं मिल रही है। अगर जनता की जान से ज्यादा ठेकेदारों की दलाली प्यारी लगती है, तो श्री शुक्ल को मंत्री पद से इस्तीफा देकर ठेकेदारों का एजेंट बन जाना चाहिए।

सुश्री शर्मा ने कहा कि यह डबल इंजन सरकार जनता के जीवन की नहीं, बल्कि ठेकेदारों के सौदों की गाड़ी खींच रही है। उन्होंने सवाल उठाया कि क्या प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को मध्यप्रदेश में सरकारी लापरवाही से मरने वाले 25 मासूम बच्चों की मौतें दिखाई नहीं दे रहीं? मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव अब तक चुप क्यों हैं? क्या वे भी किसी 'ऊपर बैठे आका' के आदेशों के गुलाम हैं?

कांग्रेस प्रवक्ता ने मांग की कि स्वास्थ्य मंत्री राजेंद्र शुक्ल और स्वास्थ्य राज्य मंत्री नरेंद्र शिवाजी पटेल से तत्काल इस्तीफा लिया जाए। उन्होंने कहा कि यदि सरकार ने इस घटना पर सख्त कार्रवाई नहीं की, तो कांग्रेस जनता के साथ सड़कों पर उतरकर आंदोलन करेगी। सुश्री शर्मा ने आरोप लगाया कि मध्यप्रदेश की स्वास्थ्य व्यवस्था अब ठेके और कमीशन की भेंट चढ़ चुकी है। यह सरकार नाकामी, भ्रष्टाचार और संवेदनहीनता का पर्याय बन चुकी है।

महावीर नगर की शिवाजी बस्ती में 177 स्वयंसेवक कदमताल करते हुए निकले पथ संचलन में

भोपाल । राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के शताब्दी वर्ष के अवसर पर तात्या टोपे जिले के महावीर नगर में रविवार को शिवाजी बस्ती का पथ संचलन उत्साहपूर्वक संपन्न हुआ। यह पथ संचलन लिंक रोड नंबर 2 स्थित हनुमान मंदिर एवं बाल उद्यान से प्रारंभ होकर अर्जुन नगर, सरस्वती शिशु मंदिर, दुर्गा नगर, 106 की लाइन तथा पांच नंबर क्षेत्र से होता हुआ पुनः बाल उद्यान पर सम्पन्न हुआ।संचलन में 177 स्वयंसेवक पूर्ण गणवेश में ढाई किलोमीटर तक अनुशासित कदमताल करते हुए शामिल हुए। पथ संचलन के दौरान अनुशासन और राष्ट्रीय चेतना का अद्भुत वातावरण देखने को मिला। कार्यक्रम में बतौर वक्ता तात्या टोपे जिला के जिला प्रचारक धर्मेंद्र सोनकिया ने स्वयंसेवकों का मार्गदर्शन किया। अपने उद्बोधन में उन्होंने कहा, संघ का शताब्दी वर्ष केवल उत्सव नहीं, बल्कि समाज परिवर्तन की दिशा में एक संकल्प यात्रा है। पंच परिवर्तन की यात्रा भाषणों का विषय नहीं, बल्कि आत्मपरिवर्तन से समाज परिवर्तन का मार्ग है। श्री सोनकिया ने आगे कहा, आज का यह पथ संचलन किसी शक्ति प्रदर्शन का प्रतीक नहीं, बल्कि यह उन स्वयंसेवकों के वर्षभर के परिश्रम और अनुशासन का उत्सव है। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में आयरनमैन एवं सहनशक्ति कोच श्री प्रवीण सपकाल उपस्थित रहे। श्री सपकाल खेल पोषण विशेषज्ञ हैं, सुपर एथलीट बाइसिकल मेयर भोपाल के संस्थापक रह चुके हैं और मध्यप्रदेश के पहले आयरनमैन हैं। उन्होंने 26 नवम्बर 2017 को थाईलैंड के फुकेट में आयरनमैन की उपाधि प्राप्त की थी।आयोजन की अध्यक्षता अधिवक्ता एवं नगर कार्यवाह मथुरा प्रसाद राजपूत ने की। पथ संचलन के दौरान नागरिकों ने सड़कों के दोनों ओर खड़े होकर स्वयंसेवकों का स्वागत किया।

संघ शताब्दी वर्ष में उमड़ा राष्ट्रभाव- आकृति बस्ती में भव्य पथ संचलन

भोपाल । राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के शताब्दी वर्ष के उपलक्ष्य में रविवार प्रातः आकृति बस्ती, नेहरू नगर क्षेत्र में भव्य पथ संचलन का आयोजन किया गया।

कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री सुदेश शांडिल्य जी महाराज (करुणाधाम आश्रम) ने की, मुख्य वक्ता गिरीश जोशी, प्रांत सह संपर्क प्रमुख रहे। कार्यक्रम का शुभारंभ करुणाधाम आश्रम से हुआ।

पूज्यनीय सुदेश शांडिल्य जी महाराज ने अपने आशीर्वचन में कहा कि कलयुग में संघ शक्ति ही राष्ट्र की रक्षा कर सकती है। उन्होंने कहा कि राष्ट्र सेवा वही कर सकता है जिसकी चित्त की शुद्धि और समर्पण की भावना हो। आज समाज में अधिकारों के लिए संघर्ष तो होता है, परंतु दायित्वों का निर्वहन नहीं किया जाता। नागरिक अनुशासन का पालन ही राष्ट्र निर्माण की पहली सीढ़ी है।उन्होंने यह भी कहा कि संघ के स्वयंसेवक लोकेषणा, वितृष्णा और पुत्रैषणा से दूर रहते हैं। जब तक मनुष्य अपने विकारों पर विजय नहीं पाता, तब तक वह राष्ट्र के लिए उपयोगी नहीं बन सकता। संघ को जानना है तो संघ की शाखा में जाना होगा- ऐसा संदेश देते हुए उन्होंने समाज में नैतिकता, सेवा और एकता की भावना को सर्वोपरि बताया।

मुख्य वक्ता गिरीश जोशी ने संघ की स्थापना, उद्देश्यों और यात्रा पर विस्तार से प्रकाश डालते हुए कहा कि परम पूज्य डॉक्टर हेडगेवार जी का राष्ट्रप्रेम और समाज कल्याण के प्रति चिंतन ही संघ की प्रेरणा का आधार है। उन्होंने संघ के चार चरणों की यात्रा, छह पीढ़ियों के योगदान और पंच परिवर्तन - कुटुंब प्रबोधन, सामाजिक समरसता, पर्यावरण संरक्षण, स्व का भाव और नागरिक कर्तव्य - के माध्यम से समाज में आ रहे सकारात्मक बदलावों का उल्लेख किया।

पथ संचलन करुणाधाम आश्रम से प्रारंभ होकर आकृति गार्डन, गोमती नगर, आकाश नगर और नया बसेरा मार्ग से होते हुए पुनः करुणाधाम आश्रम पर संपन्न हुआ। स्वयंसेवक अनुशासित कदमताल करते हुए समाज में एकता, अनुशासन और समरसता का संदेश दे रहे थे। विभिन्न स्थानों पर नागरिकों ने पुष्पवर्षा कर संचलन का स्वागत किया।कार्यक्रम में समाज के अनेक गणमान्य नागरिकों एवं सामाजिक बंधुओं की उपस्थिति रही।

मुख्य सचिव श्री जैन ने मध्यप्रदेश ट्रैवल मार्ट के बी-2-बी इवेंट और प्रदर्शनी का किया शुभारंभ

प्रदेश के स्थानीय ग्रामीण परिवेश को जीवंत प्रदर्शनी 'विलेज वाइब्स' के माध्यम से प्रदर्शित करने पर की प्रशंसा

भोपाल (नप्र)। मुख्य सचिव श्री अनुराग जैन ने आज एमवीएम ग्राउंड में मध्यप्रदेश ट्रैवल मार्ट में आयोजित बी-2-बी (बिजनेस-टू-बिजनेस) इवेंट एवं प्रदर्शनी का औपचारिक शुभारंभ किया। इस आयोजन का उद्देश्य प्रदेश में पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए व्यावसायिक संबंधों को सुदृढ़ करना है। साथ ही मुख्य सचिव श्री जैन ने मध्यप्रदेश पर्यटन के पेवेलियन और प्रदेश के ग्रामीण पर्यटन की जीवंत प्रदर्शनी विलेज वाइब्स का भी शुभारंभ किया। इस अवसर पर प्रख्यात अभिनेता श्री रघुबीर यादव तथा अपर मुख्य सचिव, पर्यटन एवं संस्कृति श्री शिवशेखर शुक्ला भी उपस्थित थे।

मुख्य सचिव श्री जैन ने प्रदेश के स्थानीय ग्रामीण परिवेश को जीवंत प्रदर्शनी विलेज वाइब्स के माध्यम से प्रदर्शित करने पर प्रशंसा की। उन्होंने महिलाओं हेतु सुरक्षित पर्यटन स्थल परियोजना के अंतर्गत प्रशिक्षित बालिकाओं से संवाद किया। साथ ही ग्रामीण किचन की प्रतिरूप मां की रसोई, ब्लॉक प्रिंटिंग, सुविनियर शॉप, चंदेरी साड़ी वीविंग, लाइव गोंड पेंटिंग के लाइव डेमो का अवलोकन किया। मुख्य सचिव श्री जैन का परंपरागत ढोल और बांसुरी बजाकर स्वागत किया गया।

मुख्य सचिव श्री जैन ने बी-2-बी इवेंट में विशेष रूप से स्थान दिए गए प्रदेश के ग्रामीण होमस्टे संचालकों से मिले। ग्रामीण परिवेश के होमस्टे संचालकों के द्वारा अंतर्राष्ट्रीय टूर और ट्रैवल ऑपरेटर के साथ संवाद और बिजनेस अवसर उपलब्ध कराने की सराहना की। वनराज होमस्टे, पलाश विला पेंच, ज्यांशी होमस्टे, वेदिका हिल होमस्टे और ग्रैंड नर्मदा होमस्टे सहित विभिन्न होमस्टे संचालकों से परिचय प्राप्त किया और उनका उत्साहवर्धन किया। उनके सुविनियर उत्पाद देखे और प्रयासों की प्रशंसा की।

मुख्य सचिव श्री जैन ने विदेशी और भारतीय टूर ऑपरेटरों, होटल प्रतिनिधियों और निवेशकों से मुलाकात कर प्रदेश में पर्यटन को बढ़ावा देने लिए किए जा रहे प्रयासों की जानकारी दी। उन्हें मध्यप्रदेश ट्रैवल मार्ट में आने के लिए धन्यवाद दिया। साथ ही मध्यप्रदेश में पर्यटन को बढ़ाने के लिए आग्रह भी किया। मुख्य सचिव श्री जैन ने प्रदर्शनियों और स्टॉल्स का अवलोकन किया एवं प्रतिभागियों से संवाद करते हुए प्रदेश की नई पर्यटन नीति, निवेश के अवसरों और आगामी योजनाओं की जानकारी साझा की। इस अवसर पर प्रबंध संचालक मध्यप्रदेश राज्य पर्यटन विकास निगम डॉ. इलैया राजा टी, अपर प्रबंध संचालक एमपी टूरिज्म बोर्ड सुश्री बिदिशा मुखर्जी सहित पर्यटन विभाग के अधिकारी और बड़ी संख्या में अंतर्राष्ट्रीय और डोमेस्टिक टूर, ट्रैवल ऑपरेटर और होटलियर उपस्थित रहें।

मध्यप्रदेश ट्रैवल मार्ट का बी-2-बी (बिजनेस-टू-बिजनेस) इवेंट एक महत्वपूर्ण व्यापारिक मंच है। इसका मुख्य उद्देश्य मध्यप्रदेश के टूर ऑपरेटर्स, होटल मालिकों (विक्रेता) को राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय ट्रैवल एजेंटों (खरीदार) से सीधे जोड़ना है।

लापरवाही पर दोषियों पर कठोर कार्यवाही के लिए तमिलनाडु सरकार से सतत सम्पर्क में रहें: उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ला

*कफ सिरप निर्माताओं की करें सघन जांच *मध्यप्रदेश सरकार के अनुरोध पर डीईजी और ईजी परीक्षण जनरल मोनोग्राफ में शामिल *दवा निर्माण में इन रसायनों की अनिवार्य जांच होगी सुनिश्चित *औषधि निगरानी व्यवस्था को सुदृढ़ करने ड्रग मॉनिटरिंग इंफ्रास्ट्रक्चर अपग्रेडेशन का मसौदा शीघ्र होगा तैयार *खाद्य एवं औषधि प्रशासन व्यवस्था की वृहद समीक्षा की

भोपाल। उप मुख्यमंत्री श्री राजेन्द्र शुक्ल ने निवास कार्यालय भोपाल में खाद्य एवं औषधि प्रशासन व्यवस्था की वृहद समीक्षा की। उन्होंने छिंदवाड़ा की दुखद घटना पर की जा रही कार्रवाई की अद्यतन स्थिति की समीक्षा की। उन्होंने कहा कि तमिलनाडु शासन एवं प्रशासन से सतत संपर्क में रहकर दोषियों सख्त कार्यवाही चिन्हांकन सुनिश्चित करें।

उन्होंने कहा कि यह एक गंभीर अपराध है जिसमें मध्यप्रदेश ने अपने अनमोल चिरागों को खोया है। इस घटना में लिप्त निजी कंपनी के कर्मचारियों के साथ-साथ ऐसे अधिकारी जिन्होंने जांच में कोताही बरती है, उन पर भी कार्यवाही होनी चाहिए। उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने निर्देश दिए कि घटना में तथ्यात्मक और प्रक्रियात्मक त्रुटियों को स्पष्ट करते हुए संबंधित अधिकारियों की भूमिका का स्पष्ट चिन्हांकन कर तमिलनाडू शासन को पत्राचार कर अवगत कराया जाए। उन्होंने कहा कि इस मामले में कठोर कार्यवाही नितांत आवश्यक है ताकि दोषियों पर कड़ी कार्यवाही सुनिश्चित हो। साथ ही अन्य ड्रग मैन्युफैक्चरर सजग हों और नियमों की अनुपालना सुनिश्चित हो।

उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने व्यापक पैमाने पर अभियान चलाकर सीडीएससीओ के साथ संयुक्त रूप से मध्यप्रदेश के कफ सिरप निर्माताओं की सघन जांच के निर्देश दिए हैं। उन्होंने कहा कि औषधियों की गुणवत्ता, विक्रय व्यवस्था और कोडीन आधारित दवाओं के दुरुपयोग के नियंत्रण के लिए नियमों की सख्त अनुपालना सुनिश्चित की जाये। उन्होंने कहा कि राज्य एवं केंद्रीय औषधि नियंत्रण संगठन (सीडीएससीओ) की संयुक्त जांच में कोल्ड्रिफ़ सिरप, रिलाइफ़ सिरप और रिस्पीफ़्रेश टीआर सिरप की गुणवत्ता संदिग्ध पाई गई है। इन उत्पादों की बिक्री, स्टॉक और जब्ती संबंधी कार्यवाही की दैनिक मॉनिटरिंग करें।

उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने बताया कि मध्यप्रदेश सरकार के अनुरोध पर भारत सरकार ने डायथाइलीन ग्लाइकोल और इथिलीन ग्लाइकोल के परीक्षण को इंडियन फार्माकोपिया के जनरल मोनोग्राफ में शामिल कर लिया है, जिससे दवा निर्माण में इन रसायनों की अनिवार्य जांच सुनिश्चित होगी। कोडीन आधारित औषधियों की बिक्री पर नियंत्रण के लिए स्पष्ट दिशा-निर्देश जारी किए गए हैं।

अब सी एंड एफ एजेंसी से होलसेलर को अधिकतम 1000 बॉटल्स और होलसेलर से रिटेलर को अधिकतम 50 बॉटल्स प्रति माह से अधिक बिक्री की सूचना औषधि निरीक्षक को देना अनिवार्य होगा। साथ ही, कोडीन युक्त दवाओं की बिक्री केवल पंजीकृत चिकित्सक के पर्चे पर ही की जा सकेगी।

शेड्यूल औषधियों की बिक्री केवल पंजीकृत फार्मासिस्ट की उपस्थिति-उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने कहा कि शेड्यूल औषधियों की बिक्री केवल पंजीकृत फार्मासिस्ट की उपस्थिति में ही की जाए। बिना फार्मासिस्ट के बिक्री पाए जाने पर कठोर कार्रवाई करें। सभी दवा विक्रेता बिक्री रजिस्टर में चिकित्सक का नाम, पर्चे की तिथि, रोगी का विवरण और अन्य प्रावधानों का पालन करें। उन्होंने कहा कि कार्रवाई का उद्देश्य दवाओं की गुणवत्ता और सुरक्षा सुनिश्चित करना, दुरुपयोग पर रोक लगाना और नागरिकों के स्वास्थ्य की रक्षा करना है।

औषधि निगरानी व्यवस्था को सुदृढ़ करने ड्रग मॉनिटरिंग इंफ्रास्ट्रक्चर अपग्रेडेशन का मसौदा शीघ्र करें तैयार-उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने निर्देश दिए कि औषधि गुणवत्ता नियंत्रण आधारभूत संरचनाओं, लैब और मैनपावर को सशक्त किया जाये। जिससे शीघ्र टेस्टिंग सुनिश्चित की जा सके। राज्य में औषधि निगरानी व्यवस्था को सुदृढ़ करने के लिए ड्रग मॉनिटरिंग इंफ्रास्ट्रक्चर अपग्रेडेशन योजना के मसौदे को शीघ्र अंतिम रूप देने के लिए आवश्यक कार्यवाही करें। इस योजना में भोपाल, इंदौर, जबलपुर और ग्वालियर स्थित राज्य औषधि परीक्षण प्रयोगशालाओं का उन्नयन और सभी प्रयोगशालाओं में माइक्रोबायोलॉजी व स्टरलिटी लैब स्थापित की जाएंगी।

प्रयोगशालाओं में अत्याधुनिक उपकरण जैसे एचपीएलसी, जीएलसी, जीसीएमएसएम, एलसीएमएस, आईआर, यूवी, डिसॉलूशन टेस्टर और डिज़िंटीग्रेशन टेस्टर लगाए जाएंगे। सभी प्रयोगशालाओं को एनएबीएल मान्यता की कार्यवाही भी जाएगी। संपूर्ण राज्य में डेटा एंट्री ऑपरेटर, सैंपलिंग असिस्टेंट, एनालिस्ट, केमिस्ट, लैब असिस्टेंट आदि नए पद सृजित किए जाएंगे।

साथ ही कानूनी एवं प्रोजेक्ट प्रबंधन इकाई और एन्फोर्समेंट सेल की स्थापना की जाएगी, जिससे प्रवर्तन, निगरानी और त्वरित कार्रवाई की क्षमता बढ़ेगी। फील्ड स्तर पर पोर्टेबल हैंडहेल्ड डिवाइसेस से औषधियों की गुणवत्ता की त्वरित जांच सुनिश्चित होगी, जबकि नियमित प्रशिक्षण और ई-लर्निंग प्रोग्राम से अधिकारियों की दक्षता में वृद्धि होगी।

ब्लिंकिट डिलीवरी बॉयज का भाजपा नेता के घर हमला

भोपाल में लाठी-डंडे लेकर पहुंचे, दरवाजा नहीं खोला तो नौकरों को पीटा

भोपाल (नप्र)। भोपाल में ब्लिंकिट कंपनी का डिलीवरी बैग लटकाए कर्मचारियों ने जमकर हंगामा किया। 12 से ज्यादा डिलीवरी बॉयज ने कस्टमर की लाठी-डंडों से जमकर पिटाई कर दी। इन पर महिलाओं को भी पीटने और उनसे बदसलूकी करने का आरोप लगा है। ये घटना कोलार इलाके में शनिवार को हुई है। रविवार को मारपीट की इस घटना का सीसीटीवी फुटेज भी सामने आया हैं। पुलिस ने मामले की जांच शुरू की है। पुलिस के मुताबिक, हर्षित गुरु दानिश हिल्स कॉलोनी में रहते हैं। उनका एक पार्सल डिलीवर करने लिए ब्लिंकिट कंपनी का कर्मचारी पहुंचा था। हर्षित की पत्नी ने पार्सल के एवज में कुछ रकम डिलीवरी बॉय को कैश दी और बाकी रकम ऑनलाइन ट्रांसफर करने की बात कही। इस पर युवक ने पूरी रकम कैश या पूरी ऑनलाइन देने की बात कही। इस बात पर डिलीवरी बॉय और हर्षित की पत्नी में बहस हुई। तब उनके नौकरों ने डिलीवरी बॉय को घर से बाहर निकाल दिया।

साथियों को साथ लेकर पहुंचा युवक

घर से निकाले जाने के बाद डिलीवरी बॉय अपने सेंटर पर पहुंचा, पूरा घटनाक्रम साथियों को बताया और उनके साथ डंडे लेकर दोबारा दानिश हिल्स स्थित कॉलोनी में पहुंचा। जहां हर्षित ने एक दर्जन से अधिक युवकों को देख घर के गेट बंद कर लिए। बाहर खड़े दोनों नौकरों को डिलीवरी बॉयज ने जमकर पीटा और फरार हो गए। मामले में अज्ञात आरोपियों के खिलाफ मारपीट की एफआईआर दर्ज कर ली गई है। फिलहाल किसी की गिरफ्तारी नहीं की जा सकी है।

भोपाल में चेकिंग में 5 वाहन पकड़े गए

6.5 लाख टैक्स बकाया पर बस जब्त, फिटनेस भी नहीं थी वैध

भोपाल (नप्र)। परिवहन आयुक्त के निर्देश पर क्षेत्रीय परिवहन कार्यालय (आरटीओ) की टीम ने शनिवार को सघन वाहन चेकिंग अभियान चलाया। इस दौरान नियमों का उल्लंघन करने वाले वाहनों पर सख्त कार्रवाई की गई।अभियान के दौरान कुल 5 वाहनों से 55,500 का शमन शुल्क वसूला गया। वहीं, एक बस को फिटनेस प्रमाणपत्र न होने और करीब 6.5 लाख टैक्स बकाया होने के कारण जब्त कर आरटीओ कार्यालय परिसर में सुरक्षित खड़ा किया गया है। आरटीओ जितेंद्र शर्मा ने बताया कि बिना फिटनेस और टैक्स जमा किए किसी भी वाहन का संचालन सड़क पर पूरी तरह प्रतिबंधित है। नियमों के उल्लंघन पर आगे भी ऐसी ही सख्त कार्रवाई की जाएगी। उन्होंने कहा कि इस अभियान का उद्देश्य सड़क सुरक्षा सुनिश्चित करना और टैक्स चोरी पर रोक लगाना है। आने वाले दिनों में विभाग द्वारा ऐसे चेकिंग अभियान लगातार चलाए जाएंगे।

भोपाल में खड़ी गाड़ी का बैतूल में बना पीयूसी

प्रदेश में प्रदूषण जांच प्रमाणपत्र (पीयूसीसी) को लेकर बड़ा फर्जीवाड़ा उजागर हुआ है। मामला ऐसा कि गाड़ी भोपाल में खड़ी रही और उसका पीयूसी सर्टिफिकेट बैतूल में तैयार हो गया। परिवहन विभाग ने गंभीर लापरवाही मानते हुए बैतूल के इंडियन पीयूसी सेंटर का प्राधिकार पत्र निलंबित कर दिया है। परिवहन आयुक्त कार्यालय को शिकायत मिली थी कि कुछ अधिकृत पीयूसी सेंटर बिना वाहन जांच के ही सर्टिफिकेट बना रहे हैं। जांच के लिए गठित टीम ने इसकी हकीकत परखने के लिए भोपाल परिवहन आयुक्त कैंप कार्यालय में खड़ी एक गाड़ी की फोटो खींचकर बैतूल स्थित इंडियन पीयूसी सेंटर को भेज दी। चंद मिनटों में सेंटर ने उस वाहन का पीयूसी सर्टिफिकेट जारी कर पोर्टल पर अपलोड कर दिया, जबकि गाड़ी मौके पर लाई ही नहीं गई थी।

भगवान श्रीराम ने संबंधों को जाति, वर्ग या रूप से नहीं, हृदय की शुद्धता से जोड़ा : मुख्यमंत्री

महर्षि वाल्मीकि की वाणी से जो रामायण निकली वह केवल ग्रंथ नहीं भारत की है आत्मा, मुख्यमंत्री 'समरसता सम्मेलन' में हुए शामिल, सहभोज भी किया

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि महर्षि वाल्मीकि ने श्रीराम के चरित्र 'रामायण' के रूप में मानवता को अनुपम उपहार दिया है। महर्षि वाल्मीकि की वाणी से जो रामायण निकली वह केवल ग्रंथ नहीं भारत की आत्मा है। उनकी रामायण में समरसता केवल एक विचार नहीं, बल्कि जीता-जागता संदेश है। उन्होंने भगवान श्रीराम के जीवन के माध्यम से दिखाया कि ईश्वर की दृष्टि में सब समान हैं। भगवान श्रीराम ने निषादराज को मित्र बनाया, शबरी माता के झूठे बेर प्रेम से खाए, श्री हनुमान और वानर सेना को परिवार की तरह गले लगाया और धर्म युद्ध में सबको साथ लेकर चले। मुख्यमंत्री ने कहा कि मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान श्रीराम का आचरण हमें सिखाता है कि सच्ची समरसता वही है, जहां सबमें परमात्मा का अंश देखा जाए। उनका जीवन इसी भावना का मूर्त रूप है। भगवान श्रीराम के चरित्र को शब्दों में पिरोने वाले आदि कवि महर्षि वाल्मीकि अजर-अमर रहेंगे।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव रविवार को महर्षि वाल्मीकि जयंती प्रकटोत्सव के अवसर पर भोपाल के मानस भवन में 'समरसता सम्मेलन' को संबोधित कर रहे थे। मुख्यमंत्री डॉ. यादव और राज्यसभा सांसद एवं पीठाधीश्वर श्री क्षेत्र वाल्मीकि धाम, उज्जैन श्री बालयोगी उमेशनाथ महाराज ने दीप प्रज्ज्वलन कर सम्मेलन का विधिवत शुभारंभ किया।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा है कि समाज के सतत् विकास की पहली जरूरत सामाजिक समरसता है, जो साहचर्य और भाईचारे की भावना से जन्म लेती है। समरसता केवल एक विचार नहीं, बल्कि भारतीय संस्कृति की आत्मा है। जब समाज आपसी सौहार्द, प्रेम और अपनत्व की भावना से मिल-जुलकर चलता है, तभी कोई राष्ट्र सशक्त और समृद्ध बनता है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि सच्ची समरसता वहीं है, जहां सबमें परमात्मा का अंश देखा जाएगा। मुख्यमंत्री ने भारतीय संस्कृति को अनादिकाल से अविरल करने में महर्षि वाल्मीकि जी के योगदान को नमन करते हुए कहा कि उन्होंने रामायण जैसी अमर कृति के माध्यम से न केवल मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान श्रीराम के आदर्श जीवन का चित्रण किया, बल्कि उस समय की सामाजिक व्यवस्था और मानवीय मूल्यों को भी प्रतिबिम्बित किया। मुख्यमंत्री ने कहा कि भगवान राम का उलटा नाम निरंतर जपते-जपते वाल्मीकि महर्षि हो गए। डाकू रत्नाकर से ज्ञानी वाल्मीकि बनने तक की उनकी संघर्ष यात्रा तपस्या और आत्मसुधार की मिसाल है। महर्षि वाल्मीकि ने केवल श्रीराम का चरित्र नहीं लिखा, बल्कि उन्होंने मानवता का लेखन किया। रामायण सिर्फ एक ग्रंथ नहीं, सेवा, समरसता और करुणा का उत्तम उदाहरण है। मुख्यमंत्री ने कहा कि महर्षि वाल्मीकि ने पिता-पुत्र संबंधों से लेकर अनुसूईया माता, शबरी माता, निषादराज, हनुमान, बाली-सुग्रीव जैसे चरित्रों के माध्यम से समाज में करुणा, निष्ठा, सेवा, सामाजिक समरसता, समानता और आत्मीयता का संदेश मंत्र दिया।

छिंदवाड़ा कफ सिरप कांड ने बदली देश की दवा नीति

अब हर सिरप में डायथिलीन ग्लाइकॉल की जांच जरूरी, एमपी में 25 जानें जा चुकीं

भोपाल (नप्र)। मध्यप्रदेश के छिंदवाड़ा और बैतूल में जहरीले कफ सिरप कोल्ड्रिफ से 25 बच्चों की मौत के बाद इसका असर अब पूरे देश की दवा नीति पर दिखा है। इस घटना के बाद अब देशभर में बनने वाले हर ओरल लिक्विड सिरप में डायथिलीन ग्लाइकॉल (डीईजी) और एथिलीन ग्लाइकॉल (ईजी) की जांच अनिवार्य होगी।किसी भी सैंपल में 0.1 प्रतिशत से अधिक डीईजी या ईजी पाए जाने पर उसे नॉट ऑफ स्टैंडर्ड क्वालिटी घोषित किया जाएगा।एमपी के ड्रग कंट्रोलर दिनेश श्रीवास्तव की दिल्ली भेजी गई रिपोर्ट के आधार पर केंद्र सरकार ने भारत की दवा मानक पुस्तिका-इंडियन फार्माकॉपिया में संशोधन किया है।

दिल्ली तक पहुंची छिंदवाड़ा की रिपोर्ट-9 अक्टूबर 2025 को मध्यप्रदेश के ड्रग कंट्रोलर दिनेश श्रीवास्तव ने ड्रग कंट्रोलर जनरल ऑफ इंडिया को विस्तृत रिपोर्ट भेजी थी। इसमें छिंदवाड़ा लैब की जांच रिपोर्ट का हवाला देते हुए बताया गया कि कोल्ड्रिफ सिरप (बैच नंबर एसआर-13) में 46.28 प्रतिशत डायथिलीन ग्लाइकॉल पाया गया, जो घातक स्तर तक विषैला है। रिपोर्ट में उल्लेख था कि मौजूदा फार्माकॉपिया मानकों में ष्डश्वत्न और श्वत्न की जांच अनिवार्य नहीं है, इसलिए इसे सभी ओरल लिक्विड तैयारियों में शामिल किया जाना चाहिए। पत्र में स्पष्ट लिखा गया था कि डीईजी टेस्ट फिनिश्ड प्रोडक्ट स्पेसिफिकेशन का हिस्सा नहीं था।

दो बूंद जिंदगी की, दो बूंद स्वस्थ राष्ट्र के निर्माण की : मुख्यमंत्री डॉ. यादव

मुख्यमंत्री ने तीन दिवसीय पल्स पोलियो टीकाकरण अभियान का किया शुभारंभ, बच्चों को पिलाई पोलियो रोधी दवा

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि पोलियो की दो बूंदें न सिर्फ किसी बच्चे को जीवनभर के लिए सुरक्षित करती हैं, बल्कि यह एक स्वस्थ, सशक्त और आत्मनिर्भर राष्ट्र के निर्माण की नींव भी हैं। उन्होंने सभी अभिभावकों से अपील करते हुए कहा कि कोई भी बच्चा पोलियो रोधी खुराक पीने से वंचित न रह जाए। मुख्यमंत्री ने कहा कि पोलियो जैसी बीमारी एक बच्चे को आजीवन पराश्रित बना सकती है, इसलिए इसका पूर्णतः उन्मूलन हर नागरिक का कर्तव्य है। उन्होंने बताया कि प्रदेश के 18 जिलों में चलाए जा रहे इस तीन दिवसीय अभियान में 64 हजार से अधिक वैक्सीनेटर्स 24 हजार से अधिक पल्स पोलियो बूथों के माध्यम से दवा पिलायेंगे। साथ ही अनिवार्य रूप से घर-घर जाकर भी बच्चों को पोलियो रोधी दवा पिलाई जाएगी, जिससे हर बच्चा पोलियो से सुरक्षित होकर ताउम्र स्वस्थ रह सके। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि 18 चयनित जिलों में लक्षित आयु वर्ग के 39 लाख 19 हजार से अधिक बच्चों को पोलियो रोधी दवा पिलाई जाएगी।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने रविवार की सुबह मुख्यमंत्री निवास में तीन दिवसीय (12 से 14 अक्टूबर) पल्स पोलियो टीकाकरण अभियान का शुभारंभ किया। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने 12 छोटे बच्चों को पोलियो रोधी दवा की दो-दो बूंदें पिलाकर टीकाकरण अभियान का शुभारंभ किया। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि हम सभी हर बार अपने छोटे बच्चों को पोलियो की दो बूंद दवा पिलाते रहे, तभी पोलियो के विरुद्ध हमारी जीत आगे भी जारी रहेगी।मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के 'स्वस्थ और सशक्त भारत' के संकल्प को साकार करने की

दिशा में मध्यप्रदेश दृढ़तापूर्वक आगे बढ़ रहा है। उन्होंने जनसहभागिता को इस अभियान की सबसे बड़ी शक्ति बताते हुए कहा कि हर घर से सहयोग मिलेगा, तो हमारा प्रदेश निश्चित ही पूर्णतः पोलियो मुक्त मध्यप्रदेश' बनेगा। कार्यक्रम में नगर निगम अध्यक्ष श्री किशन सूर्यवंशी, प्रमुख सचिव लोक स्वास्थ्य एवं चिकित्सा शिक्षा श्री संदीप यादव, राज्य टीकाकरण अधिकारी डॉ. सौरभ पुरोहित सहित स्वास्थ्य विभाग के वरिष्ठ अधिकारी, चिकित्सक, आंगनवाड़ी कार्यकर्ता एवं जनप्रतिनिधि उपस्थित थे।

इन 18 जिलों में पिलाई जाएगी पोलियो की दवा

रविवार को प्रारंभ हुए अभियान में इन 18 जिलों में पोलियो की दवा पिलाई जाएगी। 12 से 14 अक्टूबर तक प्रदेश के अनूपपुर, बैतूल, भिंड, भोपाल, छिंदवाड़ा, दतिया, देवास, ग्वालियर, नर्मदापुरम, जबलपुर, कटनी, खण्डवा, खरगौन, मंडला, मंदसौर, मुरैना, नरसिंहपुर एवं नीमच जिले में पल्स पोलियो अभियान के तहत छोटे बच्चों को पोलियो रोधी दवा पिलाई जाएगी।